# हिन्दी पाठ

## मातृभाषा-हिन्दी

## कक्षा-८

शिक्षक शिक्षा निदेशालय तथा राज्य शैक्षिक
अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्,
ओड़िशा, भुवनेश्वर

ओड़िशा विद्यालय शिक्षा कार्यक्रम प्राधिकरण,
भुवनेश्वर

**हिन्दी पाठ**

**मातृभाषा** - **हिन्दी**

**कक्षा** - **८**

**पाठ्य पुस्तक निर्माण समिति**

डॉ. ज्योति मिश्र (पुनरीक्षक)
डॉ. विजय कुमार बेहेरा
डॉ. शांति कुमारी नायक
श्री अशोक कुमार सा

**पुनरीक्षण** - प्रो. डॉ. राधाकान्त मिश्र
प्रो. डॉ. स्मरप्रिया मिश्र
डॉ. लक्ष्मीधर दाश
डॉ. अजित प्रसाद महापात्र

**संयोजना** - डॉ. सविता साहु

**प्रकाशक** - विद्यालय और गणशिक्षा विभाग, ओड़िशा सरकार

**संस्करण** - प्रथम संस्करण २०१८, २०१९

**प्रस्तुति :**

शिक्षक शिक्षा निदेशालय तथा राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
ओड़िशा, भुवनेश्वर
और
ओड़िशा राज्य पाठ्यपुस्तक प्रणयन और प्रकाशन संस्था, भुवनेश्वर

**मुद्रण :** पाठ्यपुस्तक उत्पादन और विक्रय, भुवनेश्वर

# आमुख

ओड़िशा सरकार के आदेशानुसार आठवीं कक्षा को प्राथमिक शिक्षास्तर में शामिल करने के बाद उसकी पाठ्य पुस्तकों का निर्माण आदि की जिम्मेदारी शिक्षक शिक्षा निदेशालय को सौंपी गई । यह कार्य पहले माध्यमिक शिक्षा परिषद्, कटक द्वारा किया जाता था । प्रारंभ में उस संस्था के द्वारा प्रकाशित पाठ्य पुस्तकों का यथावश्यक पुनरीक्षण के बाद स्वीकार कर लिया गया है । विद्यार्थियों को शैक्षणिक कार्यक्रम में अधिक सक्रिय करने हेतु अनुप्रयोगात्मक अभ्यास आदि जोड़ा गया है । आशा है, इससे यह पुस्तक शिक्षक और विद्यार्थियों के लिए अधिक उपयोगी होगी।

हम माध्यमिक शिक्षा परिषद्, ओड़िशा, कटक के प्रति आभार व्यक्त करते हैं और पुनरीक्षक मंडल का धन्यवाद करते हैं ।

**निदेशक**

शिक्षक शिक्षा निदेशालय तथा

राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, ओड़िशा, भुवनेश्वर

# विषय - सूची

## भाग-1


| क्रम सं. | पाठ | विधा | कवि / लेखक | पृष्ठ |
|---|---|---|---|---|
| | | **पद्य विभाग** | | |
| १. | मातृवंदना | कविता | सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' | १ |
| २. | कबीर की साखियाँ | कविता | कबीरदास | ४ |
| ३. | बाललीला वर्णन | कविता | सूरदास | ८ |
| ४. | रहीम के दोहे | कविता | रहीम | ११ |
| ५. | मीरा के पद | कविता | मीराबाई | १४ |
| ६. | इसे जगाओ | कविता | भवानीप्रसाद मिश्र | १७ |
| ७. | जग जीवन | कविता | सुमित्रानंदन पंत | २१ |
| ८. | भूल गया है क्यों इनसान | कविता | हरिवंशराय बच्चन | २४ |
| | | **गद्य विभाग** | | |
| ९. | सत्साहस | निबंध | गणेशशंकर विद्यार्थी | २७ |
| १०. | एक पत्र : इंदिरा के नाम | पत्र | जवाहरलाल नेहरू | ३२ |
| ११. | गिल्लू | संस्मरण | महादेवी वर्मा | ३६ |
| १२. | बिरसा मुंडा | जीवनी | श्यामसिंह शशि | ४३ |
| १३. | कंप्यूटर क्रांति | वैज्ञानिक निबंध | डॉ. आर. सी. मांगलिक | ४८ |
| १४. | बूढ़ी काकी | कहानी | प्रेमचंद | ५३ |
| | | **पूरक अध्ययन** | | |
| १५. | अपराजिता | संस्मरण | शिवानी | ६३ |
| १६. | हार की जीत | कहानी | सुदर्शन | ६९ |
| १७. | तीन दोस्त | कहानी | मोहन राकेश | ७५ |


## भाग-2 : भाषा - ज्ञान


(i) लिंग, क्रिया, अव्यय ८१

(ii) शब्द ज्ञान : पर्यायवाची, अनेकार्थक, विलोम शब्द, समानार्थी शब्द


## भाग-3 : पत्र - लेखन


आवेदन पत्र, व्यापारिक पत्र, पुस्तक मँगाने से सम्बन्धित पत्र ९९


## भाग-4 : निबंध - लेखन


मूल्यबोध संबंधी, राष्ट्रीय एकता संबंधी, पर्व और त्योहार संबंधी १०९


-----

# मातृवन्दना

सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला'

नर जीवन के स्वार्थ सकल,
बलि हों तेरे चरणों पर, माँ,
मेरे श्रम-संचित सब फल ।

जीवन के रथ पर चढ़कर,
सदा मृत्यु-पथ पर बढ़कर,
महाकाल के खरतर शर
सह सकूँ, मुझे तू कर दृढ़तर ।
जागे मेरे उर में तेरी,
मूर्ति अश्रु जल-धौत विमल ।
दृग जल से पा बल, बलि कर दूँ ।
जननि, जन्म-श्रम-संचित सब फल ।

बाधाएँ, आएँ तन पर,
देखूँ तुझे नयन मन भर ।
मुझे देख तो सजल दृगों से
अपलक, उर के शतदल पर,
क्लेद युक्त, अपना तन दूँगा,
मुक्त करूँगा तुझे अटल,
तेरे चरणों पर देकर बलि,
सकल श्रेय-श्रम-संचित सब फल ।

*भावबोध :- प्रस्तुत कविता के कवि श्री सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' हैं । इस कविता में कवि ने भारत माँ की वन्दना की है । यह कविता कवि ने उस समय रची जब हमारा देश परतन्त्र था । इसमें कवि के देशप्रेम तथा बलिदान की भावना सशक्त शब्दों में व्यक्त हुई है ।*

## - शब्दार्थ -

सकल - सब, समस्त । महाकाल - मृत्यु । बलि - न्योछावर । खरतर - बहुत तेज़ । चरण - पाँव । उर - हृदय । श्रम - संचित - परिश्रम द्वारा एकत्रित । शर - बाण । अपलक - बिना पलक झपके । अश्रु - आँसू । शतदल - कमल । क्लेद युक्त - पसीने से लथपथ । श्रेय - महत्त्व, यश । बल - शक्ति । दृग - नेत्र, आँख, नयन । दृढ़तर - मज़बूत । विमल - स्वच्छ । सजल - जल युक्त । बाधा - रुकावट, कष्ट । श्रेय - श्रेष्ठ, उत्तम, बहुत अच्छा । धौत - धोया हुआ ।

## प्रश्न और अभ्यास

1. **दीर्घ उत्तरमूलक प्रश्न :**

   (i) कवि 'भारत माँ' से अपने को दृढ़तर बनाने की प्रार्थना क्यों करता है ?

   (ii) कविता के आधार पर कवि के जीवन का लक्ष्य बताइए ।

   (iii) कवि अपने हृदय में भारत माँ की कैसी मूर्ति जागृत करना चाहता है ?

   (iv) कविता का सारांश लिखते हुए उसके उद्देश्य पर प्रकाश डालिए ।

2. **अति संक्षिप्त उत्तरमूलक प्रश्न :**

   (i) कवि किसकी वंदना करता है ?

   (ii) कविता की किस पंक्ति से पता चलता है कि यह कविता स्वतंत्रता प्राप्ति से पहले लिखी गई थी ?

   (iii) भारत माँ के चरणों पर कवि क्या बलि चढ़ाना चाहता है ?

   (iv) कवि किसके बाण सहने के लिए मजबूत होना चाहता है ?

(v) 'सजल दृगों' का अर्थ समझाइए ।

(vi) किसके उर को शतदल के साथ तुलना की गई है ?

(vii) 'दृग जल से पा बल' - में किसके आँसू के बारे में कहा गया है ?

**3. सप्रसंग व्याख्या कीजिए :**

(i) नर जीवन के स्वार्थ सकल,
बलि हों तेरे चरणों पर, माँ,
मेरे श्रम-संचित सब फल ।

(ii) जागे मेरे उर में तेरी
मूर्ति अश्रु जल-धौत विमल ।

(iii) क्लेद युक्त, अपना तन दूँगा,
मुक्त करूँगा तुझे अटल ।

## भाषा ज्ञान

**4. (i) प्रत्येक के दो-दो समानार्थक शब्द लिखिए :**

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| नर | ............ | ............ | मृत्यु | ............ | ............ |
| जीवन | ............ | ............ | शर | ............ | ............ |
| उर | ............ | ............ | विमल | ............ | ............ |
| दृग | ............ | ............ | माँ | ............ | ............ |

**5. विलोम शब्द लिखिए :**

मृत्यु, विमल, अटल, बल, स्वार्थ, जगना

**6. निम्नलिखित शब्द अलग-अलग प्रसंगों में प्रयोग किए जाने पर भिन्न-भिन्न अर्थ-बोध कराते हैं ।**

ऐसे शब्दों को अनेकार्थक शब्द कहते हैं ।

उदाहरण - कर :- हाथ, सूंड, किरण, टैक्स ।

ऐसे ही नीचे दिए गए शब्दों के दो-दो अर्थ लिखिए एवं वाक्यों में प्रयोग कीजिए -

गुरु, गो, हंस, वन, पत्र, तारा, धन ।

●

# कबीर की साखियाँ

## कबीर दास

1. गुरु गोविन्द दोऊ खड़े, काके लागूँ पायँ ।
बलिहारी गुरु आपनों, गोविन्द दियो बताय ।

2. जहाँ दया तहँ धर्म है, जहाँ लोभ तहँ पाप ।
जहाँ क्रोध तहँ काल है, जहाँ क्षमा तहँ आप ।।

3. ऐसी वाणी बोलिए मन का आपा खोय ।
औरन को शीतल करै, आपहु शीतल होय ।।

4. माली आवत देखकर कलियन करी पुकार ।
फूले-फूले चुन लिए काल्हि हमारी बार ।।

5. माला फेरत जुग गया, मिटा न मन का फेर ।
कर का मनका डारि कै, मन का मनका फेर ।।

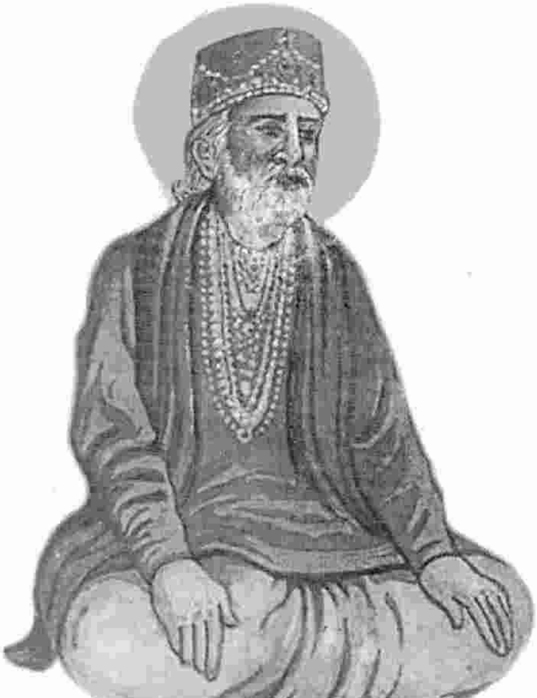

6. साँच बराबर तप नहीं, झूठ बराबर पाप ।
जाके हिरदै साँच है, ताके हिरदै आप ।।

7. निंदक नियरे राखिए, आँगन कुटि छवाय ।
बिन पानी साबुन बिना, निर्मल करै सुभाय ।

8. काल्हि करै सो आज कर, आज करै सो अब ।
पल में परलै होयगा, बहुरि करेगा कब ।।

9. माखी गुड़ में गड़ि रहै, पंख रह्यै लिपटाय ।
हाथ मलै और सिर धुनै, लालच बुरी बलाय ।।

10. जाकौ राखे साँइयाँ, मारि सके न कोय ।
बाल न बाँका करि सकै, जो जग बैरी होय ।।

*__भावबोध :-__ कबीर अनपढ़ थे, परन्तु उनके दोहे इतने जनप्रिय हुए कि वे जन-जन की वाणी पर आज भी बसते हैं। इनकी लोकप्रियता का कारण है अनुभव की गंभीरता, भावों की निश्छलता तथा भाषा की बोधकता । प्रस्तुत दोहों में कबीर ने सद्गुरु की महत्ता, ईश्वर की सर्वव्यापकता, सत्य का महत्व, संसार की क्षणभंगुरता, समय की महत्ता आदि पर बड़ी ही सहज-सरल भाषा में अपनी बात कही है । बाह्याडम्बर का विरोध मुक्त हृदय से किया है ।*

## - शब्दार्थ -

गोविन्द - ईश्वर । बलिहारी - न्यौछावर होना । काके - किसके । पाँय - पैर । लोभ - लालच । छिमा - क्षमा, माफी । आवत - आते हुए । काल्ह - आने वाला कल । मनका - माला । मन का - हृदय का। साँच- सत्य । आप - ईश्वर । निंदक - निंदा करनेवाला । नियरे - पास, समीप । छवाय - बनाकर । कुटी- झोपड़ी । निरमल - स्वच्छ । सुभाय - स्वभाव । परलै - प्रलय । साँइयाँ - ईश्वर । बलाय - संकट । बैरी- शत्रु । जग - संसार । लिपटाय - लिपटना, चिपकना । पल - क्षण । बहुरि - फिर से ।

## प्रश्न और अभ्यास

**1. दीर्घ उत्तरमूलक प्रश्न :**

(i) संत कबीर ने गुरु के महत्व को कैसे प्रतिपादित किया है ? पठित दोहों के आधार पर लिखिए ।

(ii) संसार की क्षणभंगुरता के बारे में कबीर ने क्या कहा है ? स्पष्ट कीजिए ।

(iii) वाणी के संबंध में कबीर ने कौन सी शिक्षा दी है ? पठित दोहों के आधार पर स्पष्ट कीजिए ।

(iv) कबीर ने समय के महत्व को कैसे समझाया है और बाह्याडंबर का विरोध क्यों किया है ?

(v) लालच के दुष्परिणाम और मधुर वाणी के महत्व को कबीर ने कैसे समझाया है ?

(vi) निंदक को अपना हितैषी मानने और कल के काम को आज करने की सलाह कबीर ने क्यों दी है ?

2. अति संक्षिप्त उत्तरमूलक प्रश्न :

(i) संत कबीर के अनुसार कैसी वाणी का प्रयोग करना चाहिए ?

(ii) सत्याचरण से किसकी प्राप्ति होती है ?

(iii) 'मनका', 'मन का'- इन शब्दों के अर्थ स्पष्ट कीजिए ।

(iv) जहाँ क्षमा होती है वहाँ कौन होते हैं ?

(v) हमें कैसी वाणी का प्रयोग करना चाहिए ?

(vi) हमें पहले किसके चरण स्पर्श करने चाहिए और क्यों ?

(vii) निंदक कैसे हमारे दोषों को दूर करता है ?

(viii) कल के काम को आज करने की सलाह कबीर ने क्यों दी है ?

(ix) लालच बुरी बला क्यों है ?

(x) 'बाल न बाँका करि सकै' इस मुहावरे का अर्थ बताइए ।

3. सप्रसंग व्याख्या कीजिए :

(i) निंदक नियरे ............................ निर्मल करै सुभाय ।

(ii) जाकौ राखे .............................. जग बैरी होय ।

(iii) माली आवत .............................. काल्हि हमारी बार ।

(iv) गुरु गोविंद ............................... दियो बताय ।

(v) जहाँ दया ................................ तहँ आप ।

## भाषा - ज्ञान

4. पर्यायवाची शब्द लिखिए :

गुरु, गोविंद, फूल, पानी, हाथ, बाल

5. निम्नलिखित अनेकार्थी शब्दों के दो-दो अर्थ लिखकर वाक्यों में उनका प्रयोग कीजिए :

काल, कल, गुरु, कर, पानी, पल ।

**6. यदि शब्द के आरंभ का वर्ण व्यंजन हो तो उसके पूर्व में 'अ' जोड़ देने से विलोम शब्द बन जाता है; जैसे -**

**सत्य - असत्य**

ऐसे ही नीचे लिखे शब्दों में 'अ' जोड़कर विलोम शब्द बनाइए :

साधु, सार, सम्मान, समान, सुन्दर ।

**7. नीचे कुछ कथन लिखे गए हैं, प्रत्येक कथन को पढ़कर बताइए कि वह किस दोहे से संबंधित है :**

(i) भगवान का ज्ञान गुरु ही कराता है ।

(ii) जहाँ क्षमा होती है वहाँ भगवान निवास करते हैं ।

(iii) जिसकी रक्षा भगवान करते हैं, उसे कोई नहीं मार सकता ।

(iv) सिर्फ माला फेरने से ईश्वर की प्राप्ति नहीं होती ।

(v) कल के काम को आज और आज के काम को अभी करना चाहिए ।

(vi) उचित जोड़े मिलाकर लिखिए :

| 'क' | 'ख' |
|---|---|
| गुरु | शीतलता |
| दया | पाप |
| लोभ | धर्म |
| मीठी वाणी | गोविंद |
| मनका | आप |
| क्षमा | मन का |

# बाल-लीला वर्णन

**सूरदास**

(1)

यशोदा हरि पालने झुलावै ।
हलरावै, दुलरावै, मल्हावै, जोई सोई कछु गावै ।
मेरे लाल को आउ निंदरिया, काहे न आनि सुलावै ।
तू काहे न बेगि आवे तोको कान्ह बुलावै ।
कबहुँ पलक हरि मूंदि लेत हैं, कबहुँ अधर फरकावै ।
सोवत जानि मौन ह्वै ह्वै रही करि करि सैन बतावै ।
इहि अंतर अकुलाय उठै हरि जसुमति मधुर गावै ।
जो सुख सूर अमर मुनि दुर्लभ सो नंद भामिनी पावै ।

(2)

मैया हौं न चरैहों गाई ।
सिगरे ग्वाल घिरावत मोसों मेरे पाइ पिराई ।
जौं न पत्याहिं पूछि बलदाउहि अपनी सौंह दिवाई ।
यह सुनि माइ जसोदा, ग्वालिनी, गारी देति रिसाई ।
मैं पठवति अपने लरिका कौं आवे मन बहराई ।
सूर स्याम मेरो अति बालक, मारत ताहि रिंगाई ।

*भावबोध :- सूरदास भक्तिकाल के प्रमुख कृष्ण-भक्त कवि हैं । उनके बाललीला के पद वात्सल्य रस की बेजोड़ कविता हैं । यहाँ प्रथम पद में माँ यशोदा के शिशु कृष्ण को लोरियाँ गाकर सुलाने का मनमोहक चित्र प्रस्तुत हुआ है । द्वितीय पद में गाय चराने गए कृष्ण दूसरे ग्वाल बालों के खिलाफ माता यशोदा से शिकायत कर रहे हैं ।*

## - शब्दार्थ -

अधर - होंठ । फरकावें - फड़काते हैं । भामिनी - पत्नी । पालना - झूला, हिंडोला । हलरावै - धीरे-धीरे हिलाना । दुलरावै - प्यार करना । मल्हावै - चुमकारना, पुचकारना । निंदरिया - नींद । सुलावै - सुला देना । बेगि - जल्दी । बुलावै -बुला रहा है । मौन - चुप । सैन - संकेत, इंगित, इशारा । अकुलाय - घबराकर । इहि- इस ।अंतर-बीच । अमर-जो कभी नहीं मरता,देवता। दुर्लभ - जिसे पाना सहज न हो । सिगरे - सभी । घिरावत- गाय चराने का काम । मोसों - मुझसे । पाई पिराई - पाँव दुखना । रिंगाई - चला-चला कर । रिसाई - गुस्से में । सौंह - कसम । पठवति - भेजती हूँ । वात्सल्य - संतान विषयक प्रेम । गारी - गाली ।

## प्रश्न और अभ्यास

**1. दीर्घ उत्तरमूलक प्रश्न :**

(i) कृष्ण को सुलाने के लिए माता यशोदा क्या-क्या करती हैं ?

(ii) जो माता यशोदा के लिए सुलभ है, वह मुनि-ऋषि और देवताओं के लिए दुर्लभ क्यों है ?

(iii) माता यशोदा ग्वालिनों को गाली क्यों देती हैं ?

(iv) कृष्ण माता यशोदा से क्या शिकायत करते हैं ?

**2. अति संक्षिप्त उत्तरमूलक प्रश्न :**

(i) यशोदा कृष्ण को दूसरे ग्वालों के साथ कहाँ भेजती हैं ?

(ii) कृष्ण किसकी कसम खाते हैं ?

(iii) कृष्ण बलदेव से क्या पूछने के लिए कहते हैं ?

(iv) कृष्ण के पाँव में पीड़ा क्यों होती है ?

(v) यशोदा कृष्ण को किसमें सुला रही हैं ?

(vi) कृष्ण क्यों जाग उठते हैं ?

(vii) यशोदा क्या कहकर नींद को बुलाती हैं ?

(viii) ऋषि-मुनि और देवताओं के लिए कौन-सा दृश्य दुर्लभ है ?

**3. सप्रसंग व्याख्या कीजिए :**

(i) कबहुँ पलक हरि मूंदि लेत हैं कबहुँ अधर फरकावै ।

(ii) हलरावै, दुलरावै, मल्हावै जोई-सोई कछु गावै ।

(iii) सिगरे ग्वाल घिरावत मोसों मेरे पाइ पिराई ।
जौं न पत्याहिं पूछि बलदाउहि, अपनी सौंह दिवाई ।।

## भाषा - ज्ञान

**4. निम्नलिखित शब्दों के लिंग परिवर्तन कीजिए :**

ग्वाल, बालक, लड़का, पत्नी, देव, नर ।

**5. निम्नलिखित अनेकार्थक शब्दों के दो-दो अर्थ लिखिए :**

अधर, हरि, लाल, अमर, पद ।

**शिक्षकों से :**

विद्यार्थियों को सप्रसंग व्याख्या लिखने का सही तरीका बताइए ।

पहले प्रसंग, फिर पंक्तियों के अर्थ और अंत में पंक्तियों की समीक्षा होगी ।

●

# रहीम के दोहे

**रहीम**

टूटे सुजन मनाइये, जो टूटे सौ बार
रहिमन फिरि - फिरि पोइये, टूटे मुक्ताहार ।।१।।

रहिमन धागा प्रेम का, मत तोरहूँ चटकाय,
टूटे से फिर न जुड़े, जुरै गाँठ परिजाय ।।२।।

जो रहीम उत्तम प्रकृति, का करि सकत कुसंग,
चन्दन विष व्यापत नहीं, लपटे रहत भुजंग ।।३।।

समय पाय फल होत है, समय पाय झरि जात,
सदा रहै नहीं एक-सी, का रहीम पछितात ।।४।।

तरुवर फल नहिं खात है, सरवर पियहिं न पान,
कहि रहीम पर काज हित, सम्पत्ति संचहि सुजान ।।५।।

जो गरीब सो हित करे, धनि रहीम ते लोग,
कहाँ सुदामा बापुरो, कृष्ण मिताई जोग ।।६।।

बड़े बड़ाई ना करै, बड़े ना बोले बोल,
रहिमन हीरा कब कहे, लाख टका मेरौ मोल ।।७।।

रहिमन गली साँकरी, दूजो नहीं ठहराहि,
आपु अहै तो हरि नहीं, हरि तो आपु नाहिं ।।८।।

रहिमन देखि बड़ेन को, लघु न दीजिए डारि,
जहाँ काम आवै सुई, कहा करै तरवारि ।।९।।

चाह गई चिंता मिटी, मनुआ बेपरवाह,
जिनको कछु न चाहिए, वे साहन का साह ।।१०।।

*भावबोध :- हिन्दी साहित्य के भक्तिकाल के लोकप्रिय संत कवियों में रहीम का नाम अग्रगण्य है । इनका पूरा नाम अब्दुररहीम खानखाना था । इन्होंने अपने जीवनभर के अनुभवों के निचोड़ को दोहों में अत्यन्त सरल शब्दों में अभिव्यक्त किया है । रहीम ने नीति, प्रेम, धैर्य, उदारता, मित्रता, अहंकारशून्यता, वैराग्य तथा औचित्य का आत्मज्ञान देकर सत्य का साक्षात्कार कराया है । इनके दोहे सर्वोपयोगी, प्रभावशाली और प्रेरक हैं ।*

## - शब्दार्थ -

टूटे - रूठे । मुक्ताहार - मोतियों की माला । तोरहूँ - तोड़ो । जुरै - जुड़ना । उत्तम - श्रेष्ठ । प्रकृति - स्वभाव । कुसंग - बुरी संगति । विष - जहर । चाह - इच्छा । भुजंग - साँप । झरि - झड़ना । पछितात - पछताना । तरुवर- पेड़ । सरवर - तालाब । पान - पानी । परकाज - परोपकार । संचहि - संचित करना । बेपरवाह - बेफिक्र । बापुरो - बेचारा । मिताई - मित्रता । बड़ाई - बड़प्पन । मोल - मूल्य, कीमत । साँकरी - सँकरी । दूजो - दो चीजें । आपु - अहम्, अहंकार । तरवारि - तलवार । साह - भला आदमी, धनी, मालिक । साहन का साह - शाहंशाह, राजाओं का राजा ।

## प्रश्न और अभ्यास

1. दीर्घ उत्तरमूलक प्रश्न :

   (i) रहीम के दोहे के आधार पर स्पष्ट कीजिए कि चरित्रवान व्यक्ति कभी कुसंग के प्रभाव में नहीं आते ।

   (ii) रहीम प्रेम संबंध को न तोड़ने की सलाह क्यों देते हैं ?

   (iii) रहीम की दृष्टि में धन्य कौन है तथा रहीम ने शाहंशाह किसे माना है ?

   (iv) परोपकारी व्यक्ति की प्रकृति कैसी होती है ?

2. अति संक्षिप्त उत्तरमूलक प्रश्न :

   (i) प्रेम की गली में कौन एक साथ नहीं रह सकते ?

   (ii) बड़ा और छोटा दोनों आकारों का अलग-अलग महत्व क्यों है ?

   (iii) बड़े लोगों की क्या विशेषता है ?

   (iv) परोपकारी व्यक्तियों की तुलना रहीम ने किससे की है ?

   (v) शाहंशाह कौन है ?

3. सप्रसंग व्याख्या कीजिए :

(i) जो रहिम उत्तम प्रकृति, का करि सकत कुसंग,
चन्दन विष व्यापत नहीं, लपटे रहत भुजंग ।।

(ii) तरुवर फल नहिं खात है, सरवर पियहिं न पान,
कहि रहीम परकाज हित, सम्पत्ति संचहि सुजान ।।

(iii) चाह गई चिंता मिटी, मनुआ बेपरवाह,
जिनको कछु न चाहिए, वे साहन का साह ।।

## भाषा - ज्ञान

4. **निम्नलिखित शब्दों के दो-दो पर्यायवाची शब्द लिखिए :**

विष, सरोवर, कुसंग, भुजंग, मोल ।

5. **कोष्ठक में दिए गए शब्दों से सही शब्द चुनकर रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए :**

(i) प्रेम का धागा ............................ होता है । (नाजुक, कठिन, चमकीला)

(ii) बड़े लोग ................................ होते हैं । (घमंड़ी, उदार, अहंकारशून्य)

(iii) हीरा ...................................... है । (मूल्यवान, उज्ज्वल, अनमोल)

(iv) कृष्ण और सुदामा की बड़ी ............... थी । (प्यार, शत्रुता, मित्रता)

6. **निम्नलिखित शब्दों के विलोम रूप लिखिए :**

प्रेम, गरीब, लघु, उत्तम, समय ।

7. (i) रहिमन गली साँकरी, दूजो नहीं ठहराहि ।
आपु अहै तो हरि नहीं, हरि तो आपु नाहिं ।।

(ii) समय पाय फल होत है, समय पाय झरि जात,
सदा रहै नहीं एक-सी, का रहीम पछितात ।।

**उपर्युक्त दोहों के साथ समान अर्थवाले अन्य कवियों के दोहों का संग्रह कीजिए । इसमें अपने शिक्षक की सहायता लीजिए ।**

●

# मीरा के पद

**मीराबाई**

होरी खेलत हैं गिरधारी ।
मुरली चंग बजत डफ न्यारो, संग जुबती ब्रजनारी ।
चंदन केसर छिरकत मोहन, अपने हाथ बिहारी ।
भरि भरि मूठ गुलाल लाल चहुँ, देत सबन पै डारी ।
छैल छबीले नवल कान्ह संग, स्यामा प्राण पियारी ।
गावत चार धमार राग तहँ, दै दै कल करतारी ।
फागु जू खेलत रसिक साँवरो, बाढ्यो ब्रज भारी ।
मीरा के प्रभु गिरधर नागर, मोहन लाल बिहारी ।।

*भावबोध :- मीरा के पद में होली का अनूठा चित्रण हुआ है । श्रीकृष्ण, उनके साथी, ब्रज युवतियाँ सब विभिन्न रंगों की पिचकारियाँ, गुलाल आदि लेकर नाचते-खेलते प्रेम की अमृत धारा बहा देते हैं । सब हर्ष, उल्लास, उमंग से ओत-प्रोत होकर चरम आनंद का अनुभव करते हैं । मीरा ने गिरिधारी मोहन को अपना आराध्य देवता मानते हुए समर्पित होकर प्रेम, एकता, आनंद और अपनत्व का संदेश दिया है । प्रेम दिवानी मीरा ने होली खेलते हुए कृष्ण की लीला का ऐसा जीवंत वर्णन किया है मानो ब्रज की होली उनकी आँखों के सामने घटित हुई हो ।*

### - शब्दार्थ -

होरी - होली । चंग - डुगडुगी, डफ की शक्ल का एक बाजा । डफ - लावनी गीत गाने वालों का एक तरह का बाजा । चंदन - सुवासित लेप । मूठ - मुट्ठी । छैल-छबिले - रंगीले, बाँके । नवल - नव युवक । धमार - फाग के गीत । रसिक - प्रेमी । नागर - चतुर ।

## प्रश्न और अभ्यास

**1. दीर्घ उत्तरमूलक प्रश्न :**

(i) सम्पूर्ण ब्रज-नगरी क्यों रसमय हो गयी है ?

(ii) मीरा के पद के आधार पर ब्रज में खेली गयी होली का वर्णन अपने शब्दों में कीजिए ।

(iii) प्राचीन ब्रज की होली और आज की होली में क्या अंतर है ? स्पष्ट कीजिए ।

(iv) श्रीकृष्ण को गिरिधर क्यों कहा गया है ? इसके पीछे जो कथा है उसका वर्णन अपने शब्दों में कीजिए ।

**2. अति संक्षिप्त उत्तरमूलक प्रश्न :**

(i) श्रीकृष्ण किनके साथ ब्रज में होली खेल रहे हैं ?

(ii) मीरा ने श्रीकृष्ण को क्या कहकर पुकारा है ?

(iii) होली खेलते समय कौन-सा गीत गाया जाता है ?

(iv) होली किस महीने में मनायी जाती है ?

(v) 'छैल-छबीले नवल' शब्द किसके लिए कहा गया है ?

(vi) 'स्यामा' शब्द किसके लिए आया है ?

3. सप्रसंग व्याख्या कीजिए :

(i) चंदन केसर छिरकत मोहन, अपने हाथ बिहारी ।

(ii) छैल छबीले नवल कान्ह संग, स्यामा प्राण पियारी ।

(iii) गावत चार धमार राग तहँ, दै दै कल करतारी ।

## भाषा - ज्ञान

4. निम्नलिखित शब्दों के दो-दो पर्यायवाची शब्द लिखिए :

मुरली, संग, नवल, अंग ।

5. (i) श्रीकृष्ण के तीन अन्य नाम लिखिए :

(ii) तीन वाद्य यंत्रों के नाम लिखिए :

(iii) रागों के तीन नाम लिखिए :

6. निम्नलिखित शब्दों के स्त्रीलिंग रूप लिखिए :

सखा, सेवक, धोबी, विद्वान, नागर, स्याम ।

7. विलोम रूप लिखिए :

नवीन, नया ।

# इसे जगाओ

*भवानीप्रसाद मिश्र*

भाई सूरज
ज़रा आदमी को जगाओ !
भाई पवन
ज़रा इस आदमी को हिलाओ !
यह आदमी जो सोया पड़ा है,
जो सच से बेख़बर है
सपनों में खोया पड़ा है ।

भाई पंछी
इसके कानों पर चिल्लाओ !
भाई सूरज
ज़रा इस आदमी को जगाओ ।
वक़्त पर जगाओ,
नहीं तो जब बेवक्त जगेगा यह
तो जो आगे निकल गए हैं
उन्हें पाने -
घबरा के भागेगा यह !

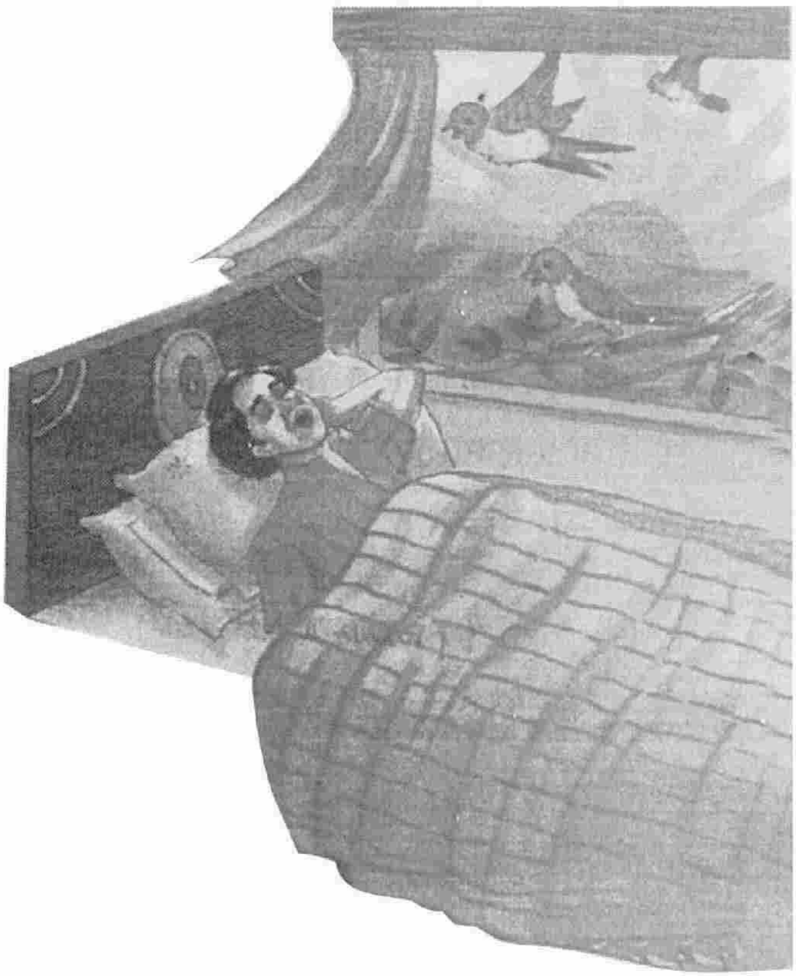

घबरा के भागना अलग है,
क्षिप्र गति अलग है,
क्षिप्र तो वह है
जो सही क्षण में सजग है ।
सूरज, इसे जगाओ,
पवन, इसे हिलाओ,
पंछी इसके कानों पर चिल्लाओ ।

***भावबोध :-*** *इस कविता में कवि मनुष्य को सही समय पर जागने और सावधान होने की प्रेरणा देना चाहता है । उसका कथन है कि जो व्यक्ति सही समय पर सचेत होकर कर्म करता है, वही जीवन में सफलता प्राप्त करता है । इसके विपरीत जो वक्त पर सोया रहता है, वह जीवन में पिछड़ जाता है । इसलिए कवि सूरज, पवन और पक्षी से आग्रह करते हैं कि वे सोये हुए मनुष्य को जगाएँ ।*

### - शब्दार्थ -

सूरज - सूर्य । पवन - हवा । बेखबर - अनजान । पंछी - पक्षी । वक्त पर - ठीक समय पर । क्षिप्रगति - तेज चाल । क्षण - पल । ज़रा - थोड़ा । सच - सत्य । बेवक्त - असमय । सही - उचित, ठीक । सजग - सावधान, सचेत ।

## प्रश्न और अभ्यास

**1. दीर्घ उत्तरमूलक प्रश्न :**

(i) 'इसे जगाओ' कविता में कवि का सन्देश क्या है ? इसे अपने शब्दों में लिखिए ।

(ii) इस कविता में मनुष्य को जगाने का दायित्व कवि किन-किन को सौंपता है ?

(iii) इस कविता में 'क्षिप्रगति' का तात्पर्य क्या है ? यह भी बताइए कि वक्त पर न जागने से क्या होगा ?

(iv) 'आदमी सच से बेखबर सोया है' कहने का तात्पर्य क्या है ? सोये हुए आदमी को कैसे जगाया जाता है ?

**2. अति संक्षिप्त उत्तरमूलक प्रश्न :**

(i) 'इसे जगाओ' कविता के रचयिता का नाम लिखिए ।

(ii) किन्हें पाने के लिए बेवक्त जगा हुआ आदमी भागता है ?

(iii) कवि ने मनुष्य को जगाने का अनुरोध किस-किस से किया है ?

(iv) आदमी सच से बेखबर कब हो जाता है ?

(v) कैसे लोग जीवन में आगे निकल जाते हैं ?

(vi) मनुष्य को समय पर जगाना क्यों जरूरी है ?

(vii) असमय जागने पर मनुष्य घबराकर क्यों भागता है ?

3. सप्रसंग व्याख्या कीजिए :

(i) वक्त पर जगाओ,
नहीं तो जब बेवक्त जागेगा यह
तो जो आगे निकल गए हैं
उन्हें पाने घबरा के भागेगा यह !

(ii) घबरा के भागना अलग है,
क्षिप्र गति अलग है,
क्षिप्र तो वह है
जो सही क्षण में सजग है ।

(iii) यह आदमी जो सोया पड़ा है,
जो सच से बेखबर है
सपनों में खोया पड़ा है ।

## भाषा - ज्ञान

4. **(i) जीवन की दौड़ में मनुष्य पिछड़ क्यों जाता है ? सही उत्तर चुनिए :**

(क) वह सुबह नहीं उठता ।

(ख) वह सुबह नहीं दौड़ता ।

(ग) वह समय पर सोया रहता है ।

(घ) वह उचित समय पर सजग नहीं रहता ।

(ii) निम्नलिखित शब्दों के पर्यायवाची शब्द लिखिए :

पक्षी, सूरज, पवन, वक्त, सच

(iii) निम्नलिखित शब्दों के विलोम शब्द लिखिए :

सोना, खोया, सच, दिन ।

5. निम्नलिखित शब्दों को उचित क्रियाओं से जोड़िए :

| 'क' | 'ख' |
|---|---|
| सूरज | हिलाता है |
| पवन | जगाता है |
| पक्षी | सोया है |
| आदमी | चिल्लाता है |

6. इस कविता को कंठस्थ कीजिए और कक्षा में सुनाइए ।

●

# जग-जीवन

*श्री सुमित्रानंदन पंत*

गाता खग प्रात: उठकर -
सुन्दर सुखमय जग-जीवन
गाता खग संध्या तट पर -
मंगल मधुमय जग-जीवन ।

कहती अपलक तारावलि
अपनी आँखों का अनुभव
अवलोक आँख आँसू की
भर आतीं आँखें नीरव ।

हँसमुख प्रसून सिखलाते
पलभर है, जो हँस पाओ
अपने उर के सौरभ से
जग का आँगन भर जाओ ।

उठ-उठ लहरें कहतीं यह
हम कूल विलोक न पाएँ
पर इस उमंग में बह-बह
नित आगे बढ़ते जाएँ ।

कँप-कँप हिलोर रह जाती
रे मिलता नहीं किनारा
बुदबुद विलीन हो चुपके
पा जाता आशय सारा ।।

***भावबोध :-*** *यह कविता प्रसिद्ध छायावादी कवि सुमित्रानन्दन पंत के द्वारा लिखी गई है । पंत जी का जन्म उत्तरांचल के अल्मोड़ा जिले में हुआ था । इसलिए उन्होंने बचपन से ही हिमालय की अत्यंत सुन्दर प्रकृति की शोभा देखी । उससे प्रभावित हुए । इस कविता में प्रकृति के विभिन्न रूप मानव-जीवन को अनेक सीख देते हैं । वे जग-जीवन को मंगल और मधुमय मानते हैं । आकाश की तारावली, हँसते हुए फूल, नदियों-सागर में उठती हुई लहरें सभी मानव जीवन का गुणगान कर रही हैं एवं उन्हें जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में किसी न किसी रूप में प्रोत्साहित करती हैं ।*

## - शब्दार्थ -

खग - पक्षी । तारावली - तारों की पंक्तियाँ । अवलोक - देखना । प्रसून - कुसुम, फूल । पलभर - क्षणभर, पलक गिरने तक का समय । उमंग - उल्लास । सौरभ - सुगंध । हिलोर - तरंग, लहर । विलोक - देख । किनारा - कूल । विलीन - अदृश्य, लुप्त ।

## प्रश्न और अभ्यास

**1. दीर्घ उत्तरमूलक प्रश्न :**

(i) 'जग-जीवन' कविता का सारांश लिखते हुए उसके उद्देश्य पर प्रकाश डालिए ।

(ii) निरन्तर आगे बढ़ने की प्रेरणा हमें कहाँ से मिलती है ? उदाहरण सहित समझाइए ।

(iii) इस कविता के माध्यम से कवि हमें क्या संदेश देते हैं ?

**2. अति संक्षिप्त उत्तरमूलक प्रश्न :**

(i) पक्षी प्रात:काल क्या गाते हैं ?

(ii) संध्याकाल में पक्षी क्या गाते हैं ?

(iii) फूल हमें क्या संदेश देते हैं ?

(iv) लहरों से हम कौन-सी शिक्षा ग्रहण करते हैं ?

(v) अपने हृदय के सौरभ से फूल किसका आँगन भरते है ?

(vi) किसको किनारा नहीं मिलता ?

**3. सप्रसंग व्याख्या कीजिए :**

(i) हँसमुख प्रसून सिखलाते
पलभर है, जो हँस पाओ
अपने उर के सौरभ से
जग का आँगन भर जाओ ।

(ii) गाता खग प्रात: उठकर -
सुन्दर सुखमय जग-जीवन
गाता खग संध्या तट पर -
मंगल मधुमय जग-जीवन ।

## भाषा - ज्ञान

**4. निम्नलिखित शब्दों के दो-दो पर्यायवाची शब्द लिखिए :**
खग, आँख, कूल, लहर, प्रसून, संध्या, जग

**5. निम्नलिखित शब्दों के विलोम शब्द लिखिए :**
सुन्दर, सुखमय, हँसना, विश्वास, शुभ ।

**6. निम्नलिखित शब्दों के प्रेरणार्थक रूप लिखिए :**
उठना, सीखना, हँसना, मिलना, बढ़ना, चढ़ना ।

**7. इस कविता से वे पंक्तियाँ चुनकर लिखिए जो हमें निरन्तर आगे बढ़ने की प्रेरणा देती हैं ।**

●

# भूल गया है क्यों इंसान

*हरिवंशराय बच्चन*

भूल गया है क्यों इंसान ?
सबकी है मिट्टी की काया,
सब पर नभ की निर्मल छाया,
यहाँ नहीं कोई आया है,
ले विशेष वरदान ।
भूल गया है क्यों इंसान ?

धरती ने मानव उपजाए;
मानव ने ही देश बनाए,
बहुदेशों में बसी हुई है,
एक धरा-सन्तान
भूल गया है क्यों इंसान ?

देश अलग हैं, देश अलग हों,
वेश अलग हैं, वेश अलग हों,
मानव का मानव से लेकिन
अलग न अन्तर प्राण ।
भूल गया है क्यों इंसान ?

***भावबोध :-*** *हरिवंशराय बच्चन की यह कविता जन-गण-मन को प्रभावित कर एक सांस्कृतिक क्रान्ति लाना चाहती है । विभिन्नता को भूलकर एकता के सूत्र में बंध जाने के लिए कवि का स्वर झंकृत हो उठता है । आपसी खून-खराबा, मार-काट, घृणा, द्वेष, सारे अनर्थ से दूर रहकर एक ऐसा देश बनाएँ जहाँ शांति, मानवता का दीप जले । एक धरा एक परिवार हो । धरती की मिट्टी के करीब जीवन को दर्शानेवाले हालावादी कवि हरिवंशराय बच्चन मानवता को न भूलने का संदेश देते हैं ।*

## - शब्दार्थ -

इंसान - मनुष्य । काया - शरीर । नभ - आसमान । विशेष - असाधारण । धरती - पृथ्वी । धरा - धरती । संतान - औलाद । अंतर - फर्क । प्राण - जीवन ।

## प्रश्न और अभ्यास

**1. दीर्घ उत्तरमूलक प्रश्न :**

(i) देश और वेश अलग होने पर भी इंसानियत नहीं बदलती । कवि के इस विचार को अपने शब्दों में लिखिए ।

(ii) इस कविता का सारांश लिखिए ।

(iii) इस कविता के माध्यम से कवि हमें क्या संदेश देना चाहते हैं ?

(iv) 'सबकी है मिट्टी की काया' - इसका क्या तात्पर्य है ?

**2. अति संक्षिप्त उत्तरमूलक प्रश्न :**

(i) आज का इंसान क्या भूल गया है ?

(ii) किसने धरती को अलग-अलग देशों में बाँटा ?

(iii) हमारी काया कैसी है ?

(iv) किसने मानव को उपजाया है ?

(v) मनुष्य-मनुष्य में क्या अंतर है ?

(vi) मनुष्य-मनुष्य में क्या अंतर नहीं है ?

(vii) इस कविता के कवि का नाम बताइए ।

**3. सप्रसंग व्याख्या कीजिए :**

(i) देश अलग हैं, देश अलग हों,
वेश अलग हैं, वेश अलग हों,
मानव का मानव से लेकिन
अलग न अन्तर प्राण ।

(ii) बहुदेशों में बसी हुई है,
एक धरा-सन्तान
भूल गया है क्यों इंसान ?

## भाषा - ज्ञान

**4. (i) निम्नलिखित शब्दों के दो-दो पर्यायवाची शब्द लिखिए :**
मिट्टी, नभ, धरा, काया, संतान, इंसान ।

**(ii) निम्नलिखित क्रियाओं के प्रेरणार्थक रूप लिखिए :**
भूलना, सीखना, भागना, डूबना, पीना ।

**(iii) निम्नलिखित शब्दों के विलोम रूप लिखिए :**
वरदान, मानव, देश, धरती, छाया ।

**5. निम्नलिखित वाक्यों से सकर्मक और अकर्मक क्रियाओं को छाँट कर कोष्ठक में लिखिए :**

(i) कविता नाच रही है । (................)

(ii) मोहन पुस्तक पढ़ रहा है । (................)

(iii) खरगोश भागता है । (................)

(iv) राम ने रावण को मारा । (................)

(v) सीता गाना गा रही है । (................)

(vi) अनुराग ने फल खरीदे । (................)

**6. निम्न शब्दों के लिंग बताइए :**

प्राण, संतान, वरदान, धरती, देश, छाया, मिट्टी, काया ।

**7. अपने शिक्षक से 'बच्चन' जी के बारे में और अधिक जानने का प्रयास कीजिए ।**

●

# सत्साहस

गणेशशंकर विद्यार्थी

संसार के सभी महापुरुष साहसी थे । संसार के काम, बड़े अथवा छोटे, साहस के बिना नहीं होते । बिना किसी प्रकार का साहस दिखलाए किसी जाति या किसी देश का इतिहास ही नहीं बन सकता । अपने साहस के कारण ही अर्जुन, भीम, भीष्म, अभिमन्यु आदि आज हमारे हृदयों में बसे हैं ।

साहसी के लिए केवल साहस प्रकट करना ही अभीष्ट नहीं । क्रोधांध होकर स्वार्थवश साहस दिखाने को किसी प्रकार प्रशंसनीय कार्य नहीं कहा जा सकता । इस प्रकार का साहस चोर और डाकू भी कभी-कभी कर गुजरते हैं । राजा-महाराजा भी अपनी कुत्सित अभिलाषाओं को पूर्ण करने के लिए कभी-कभी इससे भी बढ़कर साहस के काम कर डालते हैं । ऐसा साहस निम्न श्रेणी का साहस है । इस साहस को किसी भी दृष्टिकोण से सत्साहस नहीं कहा जा सकता ।

मध्यम श्रेणी का साहस प्राय: शूरवीरों में पाया जाता है । वह उनके उच्च विचार और निर्भीकता को भली-भाँति प्रकट करता है । इस प्रकार के साहसी मनुष्यों में बेपरवाही और स्वार्थहीनता की कमी नहीं होती परंतु उनमें ज्ञान की कमी अवश्य पाई जाती है ।

एक बार बादशाह अकबर के पास दो राजपूत नौकरी के लिए आए । अकबर ने उनसे पूछा, ''तुम क्या काम कर सकते हो ?''

वे बोले, ''जहाँपनाह, करके दिखलाएँ या केवल कहकर ?''

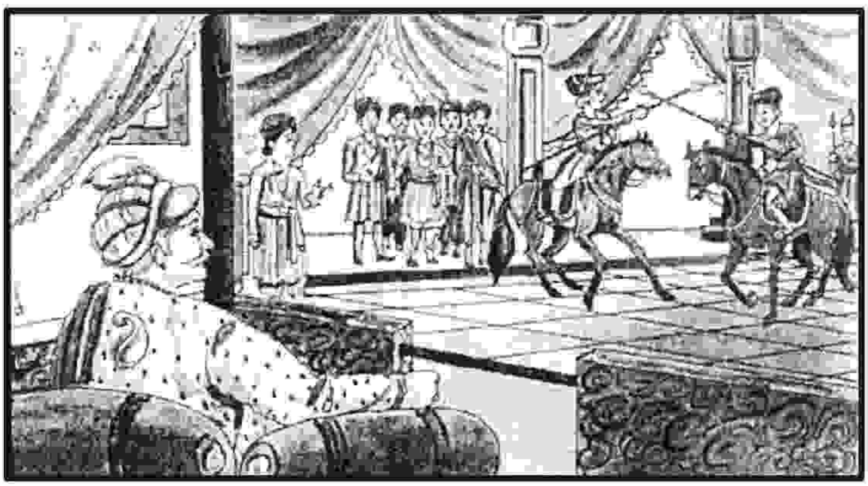

बादशाह ने करके दिखलाने की आज्ञा दी । राजपूतों नें घोड़ों पर सवार होकर अपने-अपने बरछे सँभाले और अकबर के सामने ही एक-दूसरे पर वार करने लगे । बादशाह के देखते-देखते दोनों घोड़ों से नीचे आ गिरे और मरकर ठंडे हो गए । इस प्रकार का साहस निस्संदेह प्रशंसनीय है परंतु ज्ञान की आभा की कमी के कारण निस्तेज-सा प्रतीत होता है ।

सर्वोच्च श्रेणी के साहस के लिए हाथ- पैर की बलिष्ठता आवश्यक नहीं और न ही धन-मान आदि का होना आवश्यक है । जिन गुणों का होना आवश्यक है, वे हैं-हृदय की पवित्रता, उदारता और चरित्र की दृढ़ता । ऐसे गुणों की प्रेरणा से उत्पन्न हुआ साहस तब तक पूर्णतया प्रशंसनीय नहीं कहा जा सकता, जब तक उसमें एक और गुण सम्मिलित न हो । इस गुण का नाम है, 'कर्त्तव्यपरायणता' ।

कर्त्तव्य का विचार प्रत्येक साहसी मनुष्य में होना चाहिए । कर्त्तव्यपरायण व्यक्ति के हृदय में यह बात अवश्य उत्पन्न होनी चाहिए कि जो कुछ मैंने किया, वह केवल अपना कर्त्तव्य किया । मारवाड़ के मौरुदा गाँव का जमींदार बुद्धन सिंह किसी झगड़े के कारण स्वदेश छोड़कर जयपुर चला गया और वहीं बस गया । थोड़े ही

दिनों बाद मराठों ने मारवाड़ पर आक्रमण किया । यद्यपि बुद्धन मारवाड़ को बिलकुल ही छोड़ चुका था तथापि शत्रुओं के आक्रमण का समाचार पाकर और मातृभूमि को संकट में पड़ा हुआ जानकर उसका रक्त उबल पड़ा । वह अपने एक सौ पचास साथियों को लेकर, बिना किसी से पूछे जयपुर से तुरंत चल पड़ा । वह समय पर अपने देश और राजा की सेवा करने के लिए पहुँच गया ।

इस घटना को हुए बहुत दिन हो गए परंतु आज भी मारवाड़ के लोग कर्तव्यपरायण बुद्धन सिंह की वीरता व सत्साहस को सम्मानपूर्वक याद करते हैं । राजपूत महिलाएँ आज भी बुद्धन और उसके वीर साथियों की वीरता के गीत गाती हैं ।

सत्साहसी व्यक्ति में एक गुप्त शक्ति रहती है जिसके बल से वह दूसरे मनुष्य को दुख से बचाने के लिए प्राण तक देने को प्रस्तुत हो जाता है । धर्म, देश, जाति और परिवार वालों के ही लिए नहीं, अपितु संकट में पड़े हुए अपरिचित व्यक्ति के सहायतार्थ भी उसी शक्ति की प्रेरणा से वह संकटों का सामना करने को तैयार हो जाता है । अपने प्राणों की वह लेशमात्र भी परवाह नहीं करता । हर प्रकार के क्लेशों को प्रसन्नतापूर्वक सहता है और स्वार्थ के विचारों को वह फटकने तक नहीं देता है ।

सत्साहस के लिए अवसर की राह देखने की आवश्यकता नहीं है । सत्साहस दिखाने का अवसर प्रत्येक मनुष्य के जीवन में, पल-पल में, आया करता है । देश, काल और कर्तव्य पर विचार करना चाहिए और स्वार्थरहित होकर साहस न छोड़ते हुए कर्तव्यपरायण बनने का प्रयत्न करना चाहिए । यही सत्साहस है ।

*विचारबोध :- यह एक विचार प्रधान लेख है । इस लेख में सत्साहस की परिभाषा देते हुए उसके विभिन्न स्वरूपों की चर्चा की गई है, साथ ही दुस्साहस और सत्साहस में अन्तर बताया गया है ।*

## - शब्दार्थ -

अभीष्ट - लक्ष्य, उद्देश्य। आक्रमण - वार, हमला । आभा - चमक, रोशनी। कर्त्तव्यपरायण - उचित काम करने वाला । कुत्सित अभिलाषा - बुरी व गलत इच्छा । क्लेश - कष्ट । निर्भीकता - निडरता । बलिष्ठता-मजबूती । शूरवीर - बहादुर ।

## प्रश्न और अभ्यास

1. दीर्घ उत्तरमूलक प्रश्न :

   (i) लेखक के अनुसार साहस कितने प्रकार के होते हैं ? समझाइए ।

   (ii) मध्यमश्रेणी का साहस किसे कहा गया है ? इस प्रकार के साहस को सत्साहस क्यों नहीं कहा जा सकता ? अपने विचार लिखिए ।

   (iii) बुद्धन सिंह कौन था ? मारवाड़ के लोग आज भी सम्मानपूर्वक उसे क्यों याद करते हैं ?

2. संक्षिप्त उत्तरमूलक प्रश्न :

   (i) लेखक के अनुसार किसी देश का इतिहास कब बन सकता है ?

   (ii) सर्वोच्च श्रेणी के साहस में किन-किन गुणों का होना आवश्यक है ?

   (iii) लगभग पचास शब्दों में सत्साहस के बारे में अपने विचार लिखिए ।

   (iv) निम्नश्रेणी के साहस को सत्साहस क्यों नहीं कहा जा सकता ?

3. अति संक्षिप्त उत्तरमूलक प्रश्न :

   (i) संसार के सभी महापुरुष कैसे थे ?

   (ii) हमारे हृदय में कैसे महापुरुष बसे हैं ?

   (iii) साहस कब निस्तेज प्रतीत होता है ?

(iv) 'सत्साहस' किस प्रकार का लेख है ?

(v) इस पाठ के लेखक का नाम बताइए ।

(vi) सत्साहसी व्यक्तियों के दो प्रमुख गुणों का उल्लेख कीजिए ।

(vii) सत्साहसी व्यक्ति किन विचारों को अपने पास फटकने नहीं देता ?

(viii) जमींदार बुद्धन सिंह कहाँ का रहने वाला था ?

## भाषा - ज्ञान

4. **क्रियाविशेषण** - जो अविकारी शब्द क्रिया की विशेषता बतलाते हैं, उन्हें क्रियाविशेषण कहते हैं । क्रियाविशेषण के चार भेद होते हैं । कालवाचक (कब), स्थानवाचक (कहाँ), परिमाणवाचक (कितना), रीतिवाचक (कैसे) ।

नीचे लिखे वाक्यों में क्रियाविशेषण को रेखांकित करते हुए उनके भेद बताइए :

(i) दोनों राजपूत जोर-जोर से तलवार चलाने लगे ।

(ii) जल्दी ही दोनों जमीन पर गिर पड़े ।

(iii) बुद्धन सिंह वहाँ जाकर बस गया ।

(iv) सत्साहस हमारी निर्भीकता को भली-भाँति प्रकट करता है ।

5. **निम्नलिखित शब्दों के लिंग बदलिए :**

नौकर, सेठ, महोदय, छात्र, शिष्य, रूपवान, श्रीमान, गायक, लेखक, नायक

6. **निम्नलिखित शब्दों के विलोम रूप लिखिए :**

प्रशंसा, क्रोध, स्वार्थ, निम्न, प्रकट, साहसी, उदार, पवित्र

7. **निम्नलिखित अनेकार्थी शब्दों को दो भिन्न-भिन्न अर्थों में एक ही वाक्य में प्रयुक्त कीजिए :**

जैसे - कर - अपने <u>कर</u> से <u>कर</u> जमा करके आ रहा हूँ ।

शब्द - कल, काम, पर, गुण, पल ।

8. **वाक्यों में सकर्मक और अकर्मक क्रियाओं को छाँटकर कोष्ठक में लिखिए :**

(i) गीता नहा रही है । (          )

(ii) रमेश पत्र लिखेगा । (          )

(iii) मीना रोटी पकाती है । (          )

(iv) महेश सोया है । (          )

(v) महेश पलंग पर बैठा है । (          )

9. **सप्रसंग व्याख्या कीजिए :**

(i) कर्त्तव्य का विचार .................... अपना कर्त्तव्य किया ।

(ii) सत्साहसी व्यक्ति में .................... प्रस्तुत हो जाता है ।

(iii) सत्साहस दिखाने का .................... यही सत्साहस है ।

(iv) सर्वोच्च श्रेणी के साहस .................... और चरित्र की दृढता ।

10. **ऐसे महापुरुषों की जीवनियाँ पढ़िए जो अपनी वीरता के कारण चिरस्मरणीय हैं ।**

●

# एक पत्र : इंदिरा के नाम

नैनी जेल, 1930

प्रिय इंदिरा,

जब तुम मेरे साथ रहती हो तो अकसर मुझसे बहुत-सी बातें पूछा करती हो । मैंने इरादा किया है कि मैं कभी-कभी तुम्हें इस दुनिया की और उसके छोटे-बड़े देशों की कथाएँ लिखा करूँगा ।

पुराने जमाने में शहरों और गाँवों में किस तरह के लोग रहते थे ? उनका कुछ हाल उनके बनाये हुए बड़े-बड़े मकानों और इमारतों से मालूम होता है । कुछ उन पत्थर की तख्तियों की लिखावट से भी मालूम होता है, जो वे छोड़ गए हैं । इसके अतिरिक्त बहुत पुरानी किताबें भी हैं जिनमें उस समय के बारे में ज्ञान होता है ।

मिस्र में अब भी बड़े-बड़े मीनार और 'स्फिंक्स' मौजूद हैं । लक्सर और दूसरी जगहों में भव्य मंदिरों के खंडहर नज़र आते हैं । तुमने इन्हें देखा नहीं है लेकिन जिस वक्त हम स्वेज नहर से गुजर रहे थे, वे हमसे बहुत दूर न थे । शायद तुम्हारे पास उनकी तस्वीरों के पोस्टकार्ड मौजूद हों । 'स्फिंक्स' औरत के सिरवाली शेर की मूर्ति को कहते हैं । इसका डीलडौल बहुत बड़ा है । किसी को यह नहीं मालूम कि यह मूर्ति क्यों बनाई गई । उस औरत के चेहरे पर एक अजीब मुरझाई हुई मुस्कराहट है और किसी की समझ में नहीं आता कि वह इस तरह क्यों मुस्करा रही है ।

तुम तो जान ही गई होगी कि आज मैं तुम्हें मिस्र देश के बारे में बताने जा रहा हूँ । मिस्र में बनी मीनारें बहुत लंबी-चौड़ी हैं । वास्तव में वे मिस्र के पुराने बादशाहों के मकबरे हैं जिन्हें 'फ़िरऊन' कहते थे । तुम्हें याद है कि तुमने लंदन के अजायबघर में मिस्र की 'ममी' देखी थी ? 'ममी' किसी

आदमी या जानवर के मृत शरीर को कहते हैं, जिसमें कुछ ऐसे तेल और मसाले लगा दिए जाते हैं कि वह सड़ न जाए । बादशाहों को मरने के बाद 'ममी' बना दिया जाता था और उन्हें बड़ी-बड़ी मीनारों में रख दिया जाता था । उनके पास सोने और चाँदी के गहने, सजावट की चीजें और खाने की वस्तुएँ भी रख दी जाती थीं । लोगों का विचार था कि शायद मरने के बाद भी उन्हें खाने की आवश्यकता रहेगी । दो-तीन साल हुए कुछ लोगों ने इनमें से एक मीनार के अंदर एक बादशाह की लाश पाई, जिसका नाम तूतन खामिन था । उसके पास बहुत-सी खूबसूरत और कीमती चीजें रखी हुई मिलीं ।

उस ज़मानें में भी मिस्र में खेतों को सींचने के लिए अच्छी-अच्छी नहरें और झीलें बनाई जाती थीं । 'मेरी डू' नाम की झील खासतौर पर मशहूर थी । इससे मालूम होता है कि पुराने ज़माने के मिस्र के रहनेवाले कितने होशियार थे और उन्होंने कितनी तरक्की की थी । इन नहरों, झीलों और बड़े-बड़े मीनारों को अच्छे-अच्छे इंजीनियरों ने ही बनाया होगा ।

केंडिया या क्रीट एक छोटा-सा टापू है जो भूमध्य सागर में है । हम उस टापू के पास से होकर निकले थे । उस छोटे से टापू में पुराने ज़माने में बहुत अच्छी सभ्यता पाई जाती थी । नोसोज में एक बहुत बड़ा महल था और उसके खंडहर अब तक मौजूद हैं । इस महल में स्नानघर और पानी के नल भी थे । नादान लोग इसे नए ज़माने की चीज़ समझते हैं । इसके अलावा वहाँ खूबसूरत मिट्टी के बरतन, पत्थर की नक्काशी, तस्वीरें और धातु तथा हाथी-दाँत के बारीक काम भी किए जाते थे । इस छोटे से टापू में लोग शांति से रहते थे । उन्होंने खूब तरक्की की थी ।

तुमने मीदास बादशाह का हाल पढ़ा होगा । वह जिस चीज़ को छू लेता था, वह सोना हो जाती थी । वह खाना नहीं खा सकता था क्योंकि खाना सोना हो जाता था और सोना तो खाने की चीज है नहीं । उसके लालच की उसे यह सज़ा दी गई थी । यह है तो एक मज़ेदार कहानी, लेकिन इससे हमें यह मालूम होता है कि सोना इतनी अच्छी और लाभदायक चीज़ नहीं है, जितना लोग सोचते हैं । क्रीट के सभी राजा मीदास कहलाते थे और यह कहानी उन्हीं में से किसी एक राजा की होगी ।

तुम्हारे पिता
जवाहरलाल नेहरू

*विचारबोध : देश के प्रथम प्रधान मंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू स्वतंत्रता संग्राम में प्रमुख रूप से योगदान देकर कारावास झेलते रहे । कारावास के दौरान उन्होंने अपनी पुत्री इन्दु को अनेक प्रेरक पत्र लिखे थे । प्रस्तुत पत्र उनमें से एक है । जिसमें मिस्र देश और नील नदी के आस-पास की सभ्यता के बारे में कई आश्चर्यजनक जानकारियाँ दी हैं जो आगे चलकर इन्दु को महान बनने की प्रेरणा देती हैं । नेहरू जी के पत्रों का प्रमुख उद्देश्य संसार के विभिन्न देशों की सभ्यता का ज्ञान देना । यही इन्दु आगे चलकर भारत की प्रथम महिला प्रधानमंत्री इन्दिरा गांधी के नाम से प्रसिद्ध हुई ।*

## - शब्दार्थ -

कारावास - जेल की सजा । इरादा - इच्छा, लक्ष्य । इमारत - मकान । मौजूद - उपस्थित । तस्वीर - चित्र । खास तौर - विशेष । समझ - अच्छे-बुरे का ज्ञान । मकबरा - कब्र की इमारत । खूबसूरत - सुन्दर । कीमती - मूल्यवान, दामी । मशहूर - प्रसिद्ध, ख्यातिप्राप्त । महल - राजभवन । नादान - नासमझ, मूर्ख । टापू - जमीन का ऐसा टुकड़ा जो चारों तरफ पानी से घिरा हो । बारीक - सूक्ष्म, महीन । तरक्की - उन्नति । लाभदायक - लाभ देने वाली । कथा - कहानी । खंडहर - टूटी-फूटी इमारतें ।

## प्रश्न और अभ्यास

1. **दीर्घ उत्तरमूलक प्रश्न :**

(i) यह कैसे पता चलता है कि मिस्र की सभ्यता विकसित थी ?

(ii) 'स्फिंक्स' की मूर्ति की विशेषता क्या है ?

(iii) पंडित नेहरू ने किस टापू का वर्णन किया है ? उन्हें वहाँ क्या-क्या देखने को मिला था ?

(iv) लालची बादशाह मीदास को उसके लालच की सजा कैसे मिली ?

2. **संक्षिप्त उत्तरमूलक प्रश्न :**

(i) यह पत्र इन्दिरा जी को किसने, कब और कहाँ से लिखा ?

(ii) ममी किसे कहते हैं ?

(iii) नेहरू जी ने यह पत्र किस उद्देश्य से लिखा था ?

(iv) 'ममी' के साथ खूबसूरत और कीमती वस्तुएँ क्यों रखी जाती थीं ?

(v) पुराने जमाने की सभ्यता के बारे में हमें जानकारी कहाँ से मिलती है ?

3. **अति संक्षिप्त उत्तरमूलक प्रश्न :**

(i) बड़े-बड़े मीनार और स्फिंक्स किस देश में हैं ?

(ii) केंडिया या क्रीट टापू किस सागर में हैं ?

(iii) क्रीट के सभी राजा क्या कहलाते थे ?

(iv) मिस्र के पुराने बादशाहों के मकबरे को क्या कहते हैं ?

(v) हमारे देश के प्रथम प्रधानमंत्री कौन थे ?

(vi) इस पाठ में किस देश की सभ्यता के बारे में जानकारी दी गई है ?

(vii) मिस्र देश की कौन-सी झील खास तौर पर मशहूर थी ?

(viii) क्रीट टापू में कौन-कौन-से बारीक काम किए जाते थे ?

4. सप्रसंग व्याख्या कीजिए :

(i) उस औरत के चेहरे पर एंक अजीब मुरझाई हुई मुस्कराहट है और किसी की समझ में नहीं आता कि वह इस तरह क्यों मुस्करा रही है ।

(ii) इस छोटे से टापू में लोग शांति से रहते थे । उन्होंने खूब तरक्की की थी ।

## भाषा - ज्ञान

5. रिक्त स्थानों को समुच्चयबोधक अव्ययों से भरिए :

(i) राकेश .............. रमेश खेलते हैं ।

(ii) कल उसे बुखार था ............. वह स्कूल नहीं आया ।

(iii) गाड़ी आयी ............. मनोज नहीं पहुँचा ।

(iv) वह न दूध पीता है .............. न कॉफी ।

(v) मैं कल नहीं आ सका ................... मैं बीमार था ।

6. निम्नलिखित शब्दों के विलोम रूप लिखिए :

बेटी, गाँव, पुरानी, देश, मृत्यु, कीमती, खूबसूरत, लाभ ।

7. निम्नलिखित शब्दों के लिंग बदलिए :

औरत, शेर, सम्राट, राजा, साहब, आचार्य ।

8. निम्नलिखित शब्दों के दो-दो पर्यायवाची शब्द लिखिए :

चन्द्रमा, बादल, गृह, नदी, पक्षी, युद्ध ।

●

# गिल्लू

**महादेवी वर्मा**

सोनजुही में आज एक पीली कली लगी है । उसे देखकर अनायास ही उस छोटे जीव का स्मरण हो आया, जो इस लता की सघन हरीतिमा में छिपकर बैठता था और फिर मेरे निकट पहुँचते ही कंधे पर कूदकर मुझे चौंका देता था । तब मुझे कली की खोज रहती थी, पर आज उस लघु प्राण की खोज है ।

परन्तु वह तो अब तक इस सोनजुही की जड़ में मिट्टी होकर मिल गया होगा । कौन जाने, स्वर्णिम कली के बहाने वही मुझे चौंकाने ऊपर आ गया हो ।

अचानक एक दिन सवेरे कमरे से बरामदे में आकर मैंने देखा, दो कौवे एक गमले के चारों ओर चोंचों से छुआ-छुवौवल जैसा खेल खेल रहे थे । यह काकभुशुंड़ि भी विचित्र पक्षी है - एक साथ समादरित, अनादरित, अति सम्मानित, अति अवमानित ।

हमारे बेचारे पुरखे न गरुड़ के रूप में आ सकते हैं, न मयूर के, न हंस के । उन्हें पितरपक्ष में हमसे कुछ पाने के लिए काक बनकर ही अवतीर्ण होना पड़ता है । इतना ही नहीं, हमारे दूरस्थ प्रियजनों को भी अपने आने का मधु संदेश इनके कर्कश स्वर में ही दे देना पड़ता है । दूसरी ओर हम कौवा और काँव-काँव करने को अवमानना के अर्थ में ही प्रयुक्त करते हैं ।

मेरे काकपुराण के विवेचन में अचानक बाधा आ पड़ी, क्योंकि गमले और दीवार की संधि में छिपे एक छोटे-से जीव पर मेरी दृष्टि रुक गई । निकट जाकर देखा, गिलहरी का छोटा-सा बच्चा है, जो संभवत: घोंसले से गिर पड़ा है और अब कौवे जिसमें सुलभ आहार खोज रहे थे ।

काकद्वय की चोंचों के दो घाव उस लघु प्राण के लिए बहुत थे । अत: वह निश्चेष्ट-सा गमले में चिपटा पड़ा था । सबने कहा कि कौए की चोंच का घाव लगने के बाद यह बच नहीं सकता, अत: इसे ऐसे ही रहने दिया जाए । परन्तु मन नहीं माना, उसे हौले से उठाकर अपने कमरे में ले आई, फिर रुई से रक्त पोंछकर घावों पर पेन्सिलिन मरहम लगाया ।

रुई की पतली बत्ती दूध में भिगोकर जैसे-तैसे उसके नन्हें से मुँह में लगाई, पर मुँह खुल न सका और दूध की बूँदें दोनों ओर लुढ़क गईं ।

कई घंटे के उपचार के उपरान्त उसके मुँह में एक बूँद पानी टपकाया जा सका । तीसरे दिन वह इतना आश्वस्त हो गया कि मेरी अँगुली अपने दो नन्हे पंजों से पकड़कर, नीले काँच की मोतियों जैसी आँखों से इधर-उधर ताकने लगा ।

तीन-चार मास में उसके स्निग्ध रोयें, झब्बेदार पूँछ और चंचल चमकीली आँखें सबको विस्मित करने लगीं ।

हमने उसकी ज़ातिवाचक संज्ञा को व्यक्तिवाचक संज्ञा का रूप दे दिया और इस प्रकार हम उसे 'गिल्लू' कहकर पुकारने लगे । मैंने फूल रखने की एक हल्की डलिया में रुई बिछाकर उसे तार से खिड़की पर लटका दिया ।

वही दो वर्ष गिल्लू का घर रहा । वह स्वयं हिलाकर अपने घर में झूलता और अपनी काँच के मनकों-सी आँखों से कमरे के भीतर और खिड़की से बाहर जाने क्या देखता-समझता रहता था । परन्तु उसकी समझदारी और कार्य-कलाप पर सबको आश्चर्य होता था ।

जब मैं लिखने बैठती तब अपनी ओर मेरे ध्यान आकर्षित करने की उसे इतनी तीव्र इच्छा होती थी कि उसने एक अच्छा उपाय खोज निकाला ।

वह मेरे पैर तक आकर सर्र से परदे पर चढ़ जाता और फिर उसी तेजी से उतरता । उसका यह दौड़ने का क्रम तब तक चलता, जब तक मैं उसे पकड़ने के लिए न उठती ।

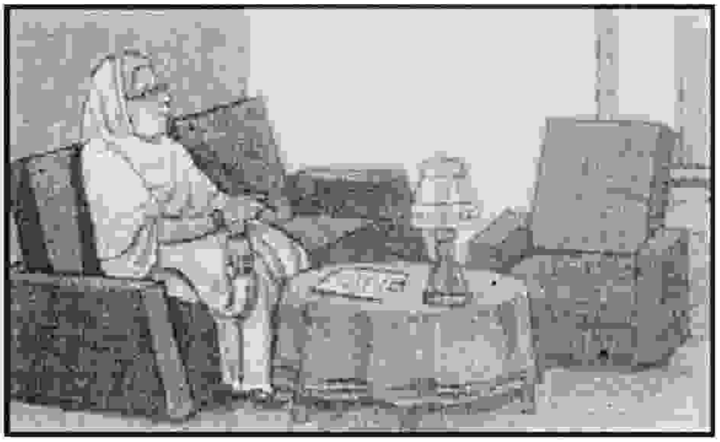

कभी मैं गिल्लू को पकड़कर एक लम्बे लिफाफे में इस प्रकार रख देती कि अगले दो पंजों और सिर के अतिरिक्त सारा लघु गात लिफाफे के भीतर बन्द रहता । इस अद्भुत स्थिति में कभी-कभी घंटों मेज़ पर दीवार के सहारे खड़ा रहकर वह अपनी चमकीली आँखों से मेरे कार्य-कलाप देखता रहता ।

भूख लगने पर चिक्-चिक् करके मानो वह मुझे सूचना देता और काजू या बिस्कुट मिल जाने पर उसी स्थिति में लिफाफे से बाहर वाले पंजों से पकड़कर उसे कुतरता रहता ।

फिर गिल्लू के जीवन का प्रथम वसन्त आया । नीम-चमेली की गंध मेरे कमरे में धीरे-धीरे आने लगी। बाहर की गिलहरियाँ खिड़की की जाली के पास आकर चिक्-चिक् करके न जाने क्या कहने लगीं ।

गिल्लू को जाली के पास बैठकर अपनेपन से बाहर झाँकते हुए देखकर मुझे लगा कि इसे मुक्त करना आवश्यक है ।

मैंने कीलें निकालकर जाली का एक कोना खोल दिया और इस मार्ग से गिल्लू ने बाहर जाने पर सचमुच ही मुक्ति की साँस ली । इतने छोटे जीव को घर में पले कुत्ते बिल्लियों से बचाना भी एक समस्या ही थी ।

आवश्यक कागज़-पत्रों के कारण मेरे बाहर जाने पर कमरा बन्द ही रहता है । मेरे कॉलिज से लौटने पर जैसे ही कमरा खोला गया और मैंने भीतर पैर रखा, वैसे ही गिल्लू जाली के द्वार से भीतर आकर मेरे पैर से सिर और सिर से पैर तक दौड़ लगाने लगा । तब से यह नित्य का क्रम हो गया ।

मेरे कमरे से बाहर जाने पर गिल्लू भी खिड़की की खुली जाली की राह चला जाता और दिनभर गिलहरियों के झुंड का नेता बन , हर डाल पर उछलता-कूदता रहता और ठीक चार बजे वह खिड़की से भीतर आकर अपने झूले में झूलने लगता ।

गिल्लू इनमें अपवाद था। मैं जैसे ही खाने के कमरे में पहुँचती, वह खिड़की से निकलकर आँगन की दीवार, बरामदा पार करके मेज पर पहुँच जाता और मेरी थाली में बैठ जाना चाहता । बड़ी कठिनाई से मैंने उसे थाली के पास बैठना सिखाया, जहाँ बैठकर वह मेरी थाली में से एक-एक चावल उठाकर बड़ी सफ़ाई से खाता । काजू उसका प्रिय खाद्य था और कई दिन काजू न मिलने पर वह अन्य खाने की चीजें या तो लेना बन्द कर देता था या झूले के नीचे फेंक देता था ।

उसी बीच मुझे मोटर दुर्घटना में आहत होकर कुछ दिन अस्पताल में रहना पड़ा । उन दिनों जब मेरे कमरे का दरवाज़ा खोला जाता, गिल्लू अपने झूले से उतरकर दौड़ता और फिर किसी दूसरे को देखकर उसी तेजी से अपने घोंसले में जा बैठता । सब उसे काजू दे जाते, परन्तु अस्पताल से लौटकर जब मैंने उसके झूले की सफाई की तो उसमें काजू भरे मिले, जिनसे ज्ञात हुआ कि वह उन दिनों अपना प्रिय खाद्य कम खाता रहा ।

मेरी अस्वस्थता में वह तकिये पर सिरहाने बैठकर अपने नन्हे-नन्हे पंजों से मेरे सिर और बालों को इतने हौले-हौले सहलाता रहता कि उसका हटना एक परिचारिका के हटने के समान होता ।

गर्मियों में जब मैं दोपहर में काम करती रहती तो गिल्लू बाहर न जाता, न अपने झूले में बैठता । उसने मेरे निकट रहने के साथ गर्मी से बचने का एक सर्वथा नया उपाय खोज निकाला था । वह मेरे पास रखी सुराही पर लेट जाता और इस प्रकार समीप भी रहता और ठंडक में भी रहता ।

गिलहरियों के जीवन की अविध दो वर्ष से अधिक नहीं होती, अत: गिल्लू की जीवन-यात्रा का अंत आ ही गया । दिन भर उसने न कुछ खाया, न ही बाहर गया । रात में अंत की यातना में भी वह अपने झूले से उतरकर मेरे बिस्तर पर आया और ठंडे पंजे से मेरी वही अँगुली पकड़कर हाथ से चिपक गया, जिसे उसने अपने बचपन की मरणासन्न स्थिति में पकड़ा था ।

पंजे इतने ठंडे हो रहे थे कि मैंने जागकर हीटर जलाया और उसे उष्णता देने का प्रयत्न किया । परन्तु प्रभात की प्रथम किरण के स्पर्श के साथ ही वह किसी और जीवन में जागने के लिए सो गया ।

उसका झूला उतारकर रख दिया है और खिड़की की जाली बन्द कर दी है, परन्तु गिलहरियों की नई पीढ़ी जाली के उस पार चिक्-चिक् करती ही रहती है और सोनजुही पर वसन्त आता ही रहता है ।

सोनजुही की लता के नीचे गिल्लू को समाधि दी गई है, इसलिए भी कि उसे वह लता सबसे अधिक प्रिय थी, इसलिए भी कि उस लघु गात का किसी बासंती दिन, जुही के पीलाभ छोटे-फूल में खिल जाने का विश्वास मुझे संतोष देता है ।

***विचारबोध :-** गिलहरी जैसे जीवों की स्वच्छंद और आज़ाद प्रवृत्ति के कारण उन्हें पालतू बनाना आसान नहीं है । लेकिन मानवीय प्रेम और लगाव उन्हें मनुष्य के करीब ही नहीं, बल्कि साथी सहचर बना देते हैं । प्रस्तुत पाठ में पशु-पक्षियों के प्रति महादेवी वर्मा का सहज आकर्षण और प्रेम उजागर हो रहा है । उनकी गतिविधियों का सूक्ष्म अवलोकन, उनके साथ सद्व्यवहार और उन्हें स्वच्छंद एवं मुक्त रखकर उनके स्वाभाविक विकास की भावना को भी प्रोत्साहित किया गया है ।*

## - शब्दार्थ -

सोनजुही - एक प्रकार का फूल । झब्बेदार - गुच्छा । कुतरना - छोटे छोटे टुकड़ों में काटना । अनायास - आसानी से । स्निग्ध - चिकने । विस्मित - आश्चर्यचकित । मनके - माला के दाने । कार्य-कलाप - क्रिया-कलाप, गतिविधि । तीव्र - तेज, बहुत अधिक । उपाय - तरकीब । गात - शरीर । अद्भुत - अनोखा । स्थिति-दशा । अपवाद - सामान्य नियम के बाहर । प्रिय - प्यारा, अच्छा लगना । आहत होना - चोट खाना । सिरहाने - सिर की ओर । हौले-हौले - धीरे-धीरे । परिचारिका - नर्स, सेविका, तीमारदारी करने वाली । सुलभ - सरलता से प्राप्त होने वाला । निश्चेष्ट - बिना हिले-डुले । रक्त - खून । उपचार - इलाज । उपरान्त - बाद में । अवमानित - अपमानित। समादरित - जिसका आदर किया गया हो । प्रभात - प्रात:काल । आश्वस्त - निश्चिंत । जीव - प्राणी । स्मरण - याद । लता - बेल । सघन - घनी/घना । हरितिमा - हरापन, हरियाली । लघु - छोटा । स्वर्णिम - सुनहरी । विचित्र - अनोखा । अनादरित - अपमानित । काक - कौवा । अवतीर्ण - उतरना, प्रकट होना । दूरस्थ - दूर के । कर्कश - कठोर । प्रयुक्त - प्रयोग । संधि - जोड़ । अवधि - समय । यातना - कष्ट । मरणासन्न - मरने जैसी स्थिति । उष्णता - गर्माहट । प्रयत्न - प्रयास, कोशिश । उत्पन्न होना - पैदा होना । लगाव - प्रेम । पीलाभ - पीली आभा ।

## प्रश्न और अभ्यास

1. दीर्घ उत्तरमूलक प्रश्न :

   (i) गिल्लू के व्यवहार, आदतों और क्रियाकलापों का वर्णन कीजिए ।

   (ii) गिल्लू के किन-किन व्यवहारों से लगता था कि वह एक समझदार प्राणी है ?

   (iii) सोनजुही की कली को देखकर लेखिका को किसकी याद आई और क्यों ?

   (iv) इस संस्मरण के आधार पर महादेवी वर्मा के पशु-प्रेम पर प्रकाश डालिए ।

   (v) गिल्लू एक संवेदनशील प्राणी है - सिद्ध कीजिए ।

2. संक्षिप्त उत्तरमूलक प्रश्न :

   (i) पाठ के आधार पर कौए को एक साथ समादरित और अनादरित प्राणी क्यों कहा गया है ?

   (ii) लेखिका ने गिल्लू की जीवन-रक्षा कैसे की ?

   (iii) लेखिका का ध्यान अपनी ओर आकर्षित करने के लिए गिल्लू क्या करता था ?

   (iv) लेखिका ने गिल्लू को क्यों मुक्त कर देना चाहा और उसके लिए क्या उपाय किया ?

   (v) अस्वस्थता के समय गिल्लू लेखिका के साथ कैसा व्यवहार करता था ?

(vi) गिल्लू की मौत कैसे हुई ?

(vii) सोनजुही की लता के नीचे बनी गिल्लू की समाधि से लेखिका के मन में किस विश्वास का जन्म होता है ?

3. **अति संक्षिप्त उत्तरमूलक प्रश्न :**

(i) गिल्लू को किसने घायल किया ?

(ii) गिल्लू के बालों और आँखों का वर्णन कीजिए ।

(iii) हमारे पूर्वपुरुष पितरपक्ष में क्या बनकर आते हैं ?

(iv) गिल्लू का नामकरण कैसे हुआ ?

(v) भूख लगने पर गिल्लू किस तरह संकेत देता था ?

(vi) लेखिका को अस्पताल में क्यों रहना पड़ा ?

(vii) गिल्लू का प्रिय खाद्य क्या था ?

(viii) लेखिका ने गिल्लू की समाधि कहाँ बनाई ?

(ix) लेखिका ने गिल्लू के घावों पर क्या लगाया ?

(x) लेखिका गिल्लू को किसमें बंद कर देती थी ?

(xi) गिल्लू बाहर कैसे आना-जाना करता था ?

(xii) गिल्लू ने गर्मी से बचने के लिए क्या उपाय खोज निकाला था ?

4. **सप्रसंग व्याख्या कीजिए :**

(i) परन्तु वह तो अब तक इस सोनजुही की जड़ में मिट्टी होकर मिल गया होगा । कौन जाने, स्वर्णिम कली के बहाने वही मुझे चौंकाने ऊपर आ गया हो ।

(ii) फिर गिल्लू के जीवन का प्रथम वसन्त आया । नीम चमेली की गंध मेरे कमरे में धीरे-धीरे आने लगी ।

(iii) प्रभात की प्रथम किरण के स्पर्श के साथ ही वह किसी और जीवन में जागने के लिए सो गया ।

(iv) परन्तु गिलहरियों की नई पीढ़ी जाली के उस पार चिक्-चिक् करती ही रहती है और सोनजुही पर वसन्त आता ही रहता है ।

## भाषा - ज्ञान

5. **सही जोड़े बनाकर वाक्य पूरा कीजिए :**

| 'क' | 'ख' |
|---|---|
| (i) चार बजे वह खिड़की से आकर | प्रिय खाद्य था । |
| (ii) भूख लगने पर गिल्लू | प्रथम वसन्त आ गया । |
| (iii) काजू उसका | अपने झूले में झूलने लगा । |
| (iv) फिर गिल्लू के जीवन का | हौले-हौले मेरे बालों को सहलाता । |
| (v) वह तकिए पर सिरहाने बैठकर | चिक् चिक् करके सूचना देता । |

6. **निम्नलिखित शब्दों के पर्यायवाची या समानार्थी शब्द देखिए :**

आँख- नैन, नेत्र, चक्षु

जल - पानी, नीर, वारि

आकाश - नभ, व्योम, गगन

और ऐसे ही नीचे लिखे शब्दों के दो-दो पर्यायवाची शब्द लिखिए ।

बादल -

रात -

दिन -

पुष्प -

पेड़ -

7. **प्रस्तुत पाठ से तीन शब्द छाँटकर उनके दो-दो पर्यायवाची शब्द लिखिए :**

8. **निम्नलिखित शब्दों के विलोम शब्द लिखिए :**

पास, लघु, समस्या, प्रिय, सुलभ ।

**अभ्यास :**

जिस अव्यय से दिशा या स्थिति का बोध होता है, उसे स्थानवाचक क्रियाविशेषण कहते हैं ।

जैसे - इधर, उधर, जिधर, दूर, परे, दाहिने, बाँए, आरपार, बाहर, भीतर, ऊपर, अन्दर, आमने-सामने आदि ।

उदाहरण (१) वह नीले काँच की मोतियों जैसी आँखों से इधर-उधर ताकने लगा ।

ऐसे ही उपर्युक्त अव्यय शब्दों का वाक्य में प्रयोग कीजिए ।

# बिरसा मुंडा

*श्यामसिंह शशि*

आज हमारा देश स्वाधीन है । इस स्वाधीनता के लिए देश के लोगों ने न जाने कितने कष्ट सहे । कुछ फाँसी के फंदे पर लटके तो कुछ जेल की यातनाएँ सहते रहे । कुछ लोगों को काले पानी की सजा हुई तो कुछ को मांडले जेल भेज दिया गया ।

हमारी आज़ादी की यह लड़ाई बहुत लंबी चली । इसके लिए हमारे कितने ही नेताओं, स्वाधीनता सेनानियों और कितने ही क्रांतिकारियों ने अपनी कुर्बानी दी । इस आजादी की लड़ाई में लड़नेवालों के कुछ नाम हमारी जबान पर हैं । लाला लाजपतराय, बाल गंगाधर तिलक, सुभाषचंद्र बोस, महात्मा गांधी, चंद्रशेखर आजाद, सरदार भगत सिंह आदि के नाम तो सभी जानते हैं । बहुत से ऐसे देशभक्त भी हुए हैं जिन्होंने आजादी के लिए प्राण न्योछावर किए,पर उनका नाम बहुत ही कम लोग जानते हैं । ऐसे ही एक स्वतंत्रता सेनानी थे, बिरसा मुंडा ।

'मुंडा' एक जनजाति है । झारखंड, मध्य प्रदेश और ओड़िशा राज्यों को मिलाने वाले सीमावर्ती क्षेत्र में ही अधिकांश मुंडा लोग बसे हुए हैं । इन जनजातियों की भाषाओं का समूह भी मुंडा कहलाता है । मुंडा लोग प्राय: छोटी-छोटी बस्तियों में रहते हैं और इनके घर मिट्टी तथा बाँस के बने होते हैं । इनकी वेश-भूषा बड़ी सादी होती है । युवक कमर पर एक कपड़ा लपेटते हैं । आजकल शिक्षा के प्रसार के साथ-साथ इनकी वेश-भूषा में भी परिवर्तन आने लगा है । मुंडा समाज एक पितृ-प्रधान समाज है । ये लोग नाचने और गाने के भी शौकीन होते हैं ।

ऐसे सरल और मेहनती समाज में बिरसा मुंडा का जन्म सन १८७५ में अगस्त माह में हुआ था । बिरसा के दादा का नाम लकारी था । उनके पिता का नाम सुगाता था । ऐसा माना जाता है कि उनका जन्म झारखंड प्रदेश के एक आदिवासी गाँव चालकाद में हुआ था ।

बिरसा का बचपन अन्य साधारण बालकों की भाँति बीता । वे माता-पिता के काम में हाथ बँटाते थे । कुछ समय बाद बिरसा को पढ़ने के लिए मामा के गाँव भेज दिया गया । बिरसा यहाँ दो वर्षों तक रहे । कुछ समय बाद उन्होंने स्कूल जाना छोड़ दिया । धीरे-धीरे बालक बिरसा जवान हुए । वे बड़े बुद्धिमान और तेज-तर्रार स्वभाव के थे । उनका डील-डौल सामान्य मुंडाओं की अपेक्षा विशाल और आकर्षक था ।

बिरसा अब समाज-सेवा में रुचि लेने लगे । वे धर्म-सुधार की ओर भी ध्यान देने लगे । उन्होंने हिंदू धर्म तथा मुंडाओं के प्राचीन धर्म का सम्मिश्रण किया । मुंडा समाज उनकी ओर आकर्षित हुआ और समाज में उनका प्रभाव व आदर बढ़ता गया । मुंडा लोग यहाँ तक मानने लगे कि उन्हें कोई सिद्धि प्राप्त है और उनके हाथ फेरने से बीमार आदमी भी ठीक हो जाते हैं ।

उधर देशभर में आजादी की लहर फैलती जा रही थी । यद्यपि सन १८५७ का स्वतंत्रता संग्राम, अंग्रेजों ने लाठी-गोली के जोर से दबा दिया था, किंतु आजादी की चिनगारी बुझी नहीं थी । यहाँ तक कि संथाल, कोल, खारिया आदि जनजातियों ने भी स्वतंत्रता आंदोलन में भाग लेना शुरू कर दिया । मुंडा भी जागरूक हो चुके थे । बिरसा के एक इँशारे पर कितने ही मुंडा अपनी जान तक देने को तैयार थे ।

बिरसा के क्रांतिकारी विचारों से ब्रिटिश शासकों के होश उड़ गए । सरकार ने उन्हें गिरफ्तार करना चाहा, लेकिन बिरसा अंग्रेज शासकों को चकमा देते रहे । अंत में ८ अगस्त सन १८९५ को अंग्रेजों ने उन्हें घर में सोते समय गिरफ़्तार कर लिया । जब सिपाही उन्हें हथकड़ी पहनाकर जेल ले जा रहे थे तो हजारों लोग उन्हें देखने को जमा हो गए । बिरसा और उनके साथियों पर लूटपाट करने का अभियोग लगाया गया और उन्हें दो वर्ष की सजा दी गई ।

जेल में बिरसा बहुत शांत रहते थे । वे ध्यान और मनन करते । जेल में भी बिरसा अपने समाज और आंदोलन की भावी योजनाएँ बनाते रहते । क्रांतिकारी बिरसा जेल से रिहा कर दिए गए । मुंडा समाज के लिए यह बेहद खुशी का दिन था । वे बिरसा के दर्शन के लिए उमड़ पड़े । उन्होंने जी भरकर नृत्य किया और खुशियाँ मनाईं।

बिरसा जेल से छूटने के बाद अधिक दिनों तक चुप न रह सके । वे फिर से देश और समाज की सेवा के लिए सक्रिय हो गए । बिरसा का यह संदेश हर मुंडा के घर तक पहुँचने लगा -

''हमें अपने खोये हुए अधिकार पाने हैं । हमें अपनी भूमि वापस लेनी है । हमें ब्रिटिश राज को समाप्त करना है ।''

बिरसा ने यह बात अपने लोगों पर छोड़ दी कि वे अहिंसा का मार्ग अपनाएँ या हिंसा का । वे स्वयं अहिंसा के पक्ष में थे । अंग्रेजों ने फिर भी उन्हें अपराधी घोषित कर दिया, इसलिए बिरसा भूमिगत हो गए । वे छिपकर ही गुप्त बैठकें करते और क्रांतिकारियों का मार्गदर्शन करते ।

हिंसा बढ़ती जा रही थी । बिरसा और उनके लोगों पर अंग्रेजों के जवाबी हमले होने लगे । बिरसा दोबारा पकड़े गए और उन्हें फिर से जेल में डाल दिया गया । बिरसा की गिरफ्तारी का उनके अनुयायियों ने कोई विरोध नहीं किया बल्कि वे स्वयं भी बिरसा के साथ जेल जाने को तैयार हो गए । उन लोगों का विश्वास था कि बिरसा में

दैवी-शक्ति है और वे दो-चार दिनों में जेल से बाहर आ जाएँगे । परंतु ऐसा न हुआ । जेल में बिरसा का स्वास्थ्य खराब रहने लगा । इलाज कराया गया किंतु उनका स्वास्थ्य नहीं सुधरा । अंत में बिरसा इस संसार से विदा हो गए । अंग्रेज शासकों ने इस महान क्रांतिकारी की लाश तक उनके साथियों को न दी ।

बिरसा नहीं रहे, किंतु वे आज भी जीवित हैं । लोककथाओं और लोकगीतों में झारखंड़ प्रदेश में आदिवासी उन्हें 'बिरसा भगवान' मानकर पूजते हैं ।

***विचारबोध :-*** *प्रस्तुत पाठ स्वतंत्रता आंदोलन में भाग लेनेवाले स्वतंत्रता सेनानियों के जीवन से संबंधित है । इस पाठ में स्वतंत्रता आंदोलन से जुड़े एक जनजाति नेता बिरसा मुंडा के अदम्य साहस के क्रियाकलापों का वर्णन किया गया है ।*

### - शब्दार्थ -

अभियोग - आरोप । चकमा - धोखा । जागरूक - सचेत । डील-डौल - शरीर की बनावट । भावी - आगे होने वाली । भूमिगत - छिप जाना । यातनाएँ - तकलीफ़ें । सम्मिश्रण - मिला-जुला रूप । स्वाधीन - आज़ाद । लोकगीत - स्थानीय गीत । तेज तर्रार - होशियार, फुरतीला ।

## प्रश्न और अभ्यास

**1. दीर्घ उत्तरमूलक प्रश्न :**

(i) मुंडा जनजाति के विषय में आप क्या जानते हैं, बताइए ।

(ii) बिरसा ने धर्मसुधार के लिए क्या-क्या कार्य किए ?

(iii) अंग्रेजों ने बिरसा को क्यों गिरफ्तार किया ?

(iv) बिरसा के दोबारा गिरफ्तार होने पर उनके लोगों ने विरोध क्यों नहीं किया ?

**2. संक्षिप्त उत्तरमूलक प्रश्न :**

(i) बिरसा मुंडा कौन थे ? उनका जन्म कब और कहाँ हुआ था ?

(ii) अंग्रेजों ने बिरसा को कैसे गिरफ्तार किया ?

(iii) मुंडा जनजाति किन-किन राज्यों में बसी हुई हैं ?

(iv) बिरसा मुंडा का बचपन किस प्रकार बीता ?

(v) जेल में बिरसा अपना समय कैसे बिताते थे ?

(vi) मुंडा जनजाति कैसे घरों में रहते हैं ?

3. **अति संक्षिप्त उत्तरमूलक प्रश्न :**

(i) बिरसा मुंडा कौन थे ?

(ii) मुंडा जनजाति किस बात के शौकीन होते हैं ?

(iii) बिरसा के दादा का नाम क्या था और पिता का नाम क्या था ?

(iv) बिरसा का स्वभाव कैसा था ?

(v) बिरसा मुंडा जेल से कब रिहा हुए ?

(vi) नीचे दी गई तिथियों का बिरसा के जीवन से क्या संबंध है -

सन् 1875, सन् 1895, सन् 1897

(vii) मुंडा जन-जाति कौन-सी भाषा का प्रयोग करते थे ?

(viii) बिरसा ने कौन-कौन से धर्मों का सम्मिश्रण किया ?

(ix) 'भूमिगत' होने का क्या अर्थ है ?

4. **सप्रसंग व्याख्या कीजिए :**

(i) जेल में बिरसा बहुत शांत रहते थे । वे ध्यान और मनन करते । जेल में भी बिरसा अपने समाज और आंदोलन की भावी योजनाएँ बनाते रहते ।

(ii) बिरसा नहीं रहे, किंतु वे आज भी जीवित हैं । लोककथाओं और लोकगीतों में झारखंड प्रदेश में आदिवासी उन्हें 'बिरसा भगवान' मानकर पूजते हैं ।

## भाषा - ज्ञान

5. प्रत्येक भाषा में अनेक ऐसे शब्द होते हैं जिनके एक से अधिक अर्थ होते हैं, वे शब्द प्रसंग बदलने पर अलग-अलग अर्थ देते हैं । पाठ में आए निम्नलिखित शब्द किस अर्थ में प्रयुक्त हुए हैं । स्पष्ट कीजिए -

जन, नेता, जवान, नायक, पक्ष, धर्म ।

6. **निम्नलिखित शब्दों के विलोम रूप लिखिए :**

स्वाधीन, काला, छोटा, मेहनती, विशाल, आकर्षक, प्राचीन, अनादर, खुशी, सक्रिय, विरोध, खराब, जीवित, अहिंसा, गुप्त ।

7. **दो पदों, वाक्याशों अथवा वाक्यों को परस्पर जोड़ने वाले अविकारी शब्द समुच्चयबोधक अव्यय कहलाते हैं। जैसे -**

और, किन्तु, परन्तु, या आदि ।
'वे ध्यान और मनन करते ।'
पाठ में आए इस प्रकार के पाँच वाक्य छाँट कर लिखिए ।

8. **निम्नलिखित वाक्यों में क्रिया को रेखांकित करते हुए उसके प्रकार (सकर्मक या अकर्मक) का उल्लेख कीजिए :**

(i) देश भर में आजादी की लहर फैलती जा रही थी ।

(ii) अंग्रेजों के जवाबी हमले हो रहे थे ।

(iii) वे छिपकर गुप्त बैठकें कर रहे थे ।

(iv) बिरसा आन्दोलन की भावी योजनाएँ बना रहे थे ।

(v) अंग्रेजों ने उन्हें अपराधी घोषित कर दिया ।

9. **शिक्षक से :**
(i) छात्रों को ओड़िशा के विभिन्न जिलों में बसने वाली विभिन्न जन-जातियों के बारें में सामान्य जानकारी दीजिए ।
(ii) जेल क्या होता है ? बच्चों को बताइए एवं उन्हें मांडले जेल के बारे में जानकारी दीजिए ।

10. **निम्नलिखित शब्दों को वाक्यों में प्रयोग कीजिए :**

यातना, समूह, शौकीन, सेनानी, अनुयायी ।

11. **शून्यस्थान भरिए :**

(i) बिरसा का बचपन अन्य ........... बालकों की भांति बीता । (साधारण, असाधारण)

(ii) जेल में बिरसा बहुत ........... रहते थे । (शांत, अशांत)

(iii) मुंडा समाज एक ........... समाज है । (पितृ-प्रधान, मातृ-प्रधान)

(iv) झारखण्ड आदिवासी उन्हें ........... मानकर पूजते हैं । (बिरसा भगवान, बड़ा भगवान)

(v) मुंडा एक ........... है । (जनजाति, हरिजन)

●

# कंप्यूटर क्रांति

**डॉ. आर.सी. मांगलिक**

परिवर्तन प्रकृति का नियम है । यदि यह परिवर्तनशीलता न होती, तो आज भी मनुष्य कंदराओं में रह रहा होता, पत्थर रगड़ कर आग जलाता और वृक्षों की छाल से तन ढँकता, परन्तु सदियों से निरन्तर हो रहे आविष्कारों के कारण मानव जाति नित्य प्रति प्रगति के सोपान चढ़ती जा रही है । बीसवीं सदी, राइट बन्धुओं द्वारा सन 1907 में हवाई जहाज के आविष्कार से आरंभ होकर, वैज्ञानिक प्रगति के अनेक कीर्तिमान स्थापित कर चुकी है । कंप्यूटर का आविष्कार सम्भवत: इस सदी और मानव जाति की सबसे बड़ी उपलब्धि है ।

यदि कंप्यूटर के शाब्दिक अर्थ गणना करने वाला या गणक की बात करें, तो इसका इतिहास हमें 16 वीं शताब्दी के लघुगणक के आविष्कारक नेपियर, 17 वीं शताब्दी के पास्कल और 18 वीं शताब्दी के बैबेज जैसे महान् गणितज्ञों से जोड़ता है । जब हम आधुनिक कंप्यूटर की बात करते हैं तो इसका इतिहास, 1944 में आई.बी.एम. (इंटरनेशनल बिजनेस मशीन्स) नामक विशाल कम्पनी और हावर्ड विश्वविद्यालय के संयुक्त प्रयास द्वारा इलेक्ट्रो-मैकेनिकल यंत्रों से विकसित प्रथम डिजिटल कंप्यूटर तक ले जाता है । यहीं से आरंभ हुई कंप्यूटर क्रांति । आधुनिक कंप्यूटर के इतिहास को सामान्यत: पीढ़ियों (जनरेशन्स) में विभक्त किया गया है ।

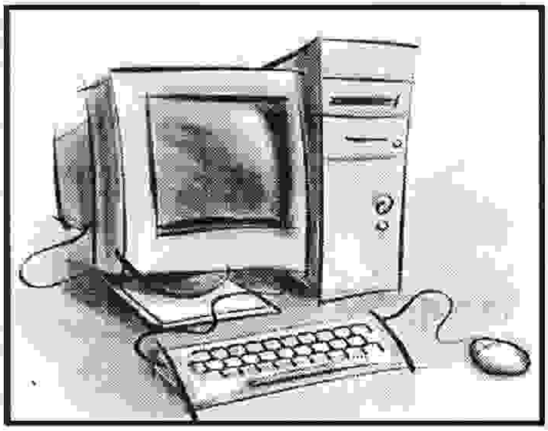

पिछले लगभग पचास वर्षों में कंप्यूटर के विकास और उपयोग की गति जिस तीव्रता से बढ़ी है, उन सबका विस्तृत तकनीकी विवरण प्रस्तुत करना यहाँ संभव नहीं है । फिर भी संक्षेप में कंप्यूटर निर्माण में प्रथम पीढ़ी में वैक्यूम ट्यूब्स, दूसरी में ट्रांजिस्टर तथा प्रिंटेड सार्किट तकनीक व तीसरी पीढ़ी में इंटिग्रेटेड सर्किट्स का उपयोग किया गया । चौथी पीढ़ी में इसी दिशा में और प्रगति करते हुए छोटी-सी सिलिकोन चिप पर अधिक सूचनाएँ एकत्रित करने का सफल प्रयास किया गया । आज प्राय इसी चौथी पीढ़ी के बेहद तीव्र गति से सूचनाएँ संप्रेषित करनेवाले कंप्यूटर ही, काम में लाए जाते हैं । पहली पीढ़ी के कई टन वजनवाले, दशमलव प्रणाली पर आधारित, बेहद धीरे कार्य करनेवाले कंप्यूटर, चालीस-पचास वर्षों में बेहद कम वजनवाले द्विअंकीय (0, 1) प्रणाली पर आधारित अत्यधिक तीव्रता से काम करनेवाले कंप्यूटर बन जाएँगे, यह विश्वास नहीं होता । आज शायद ही जीवन का कोई ऐसा क्षेत्र होगा जो कंप्यूटर के उपयोग से अछूता हो ।

एक कंप्यूटर प्रणाली को पाँच हिस्सों - एक इनपुट यूनिट, एक आउटपुट यूनिट, मेमोरी, अर्थमेटिक-लॉजिकल यूनिट व कन्ट्रोल यूनिट में विभक्त किया जा सकता है । अन्तिम तीन को मिलाकर सेंट्रल प्रोसेसिंग यूनिट (सी.पी.यू.) कहा जाता है । एक चिप पर सम्पूर्ण सी.पी.यू. होने पर उसे माइक्रोप्रोसेसर कहते हैं ।

कंप्यूटर वेयर के दो भाग होते हैं - हार्डवेयर व सॉफ्टवेयर । उपर्युक्त पाँचों यूनिट प्रिन्टर सहित, मिलकर हार्डवेयर बनाते हैं । हार्डवेयर पर क्रियान्वित किए जाने वाले प्रोग्राम साफ्टवेयर कहलाते हैं । किसी भी समस्या को हल करने के लिए उसके हल क्रमबद्ध तरीके से लिखने को प्रोग्राम कहते हैं । कंप्यूटर पर इसके क्रियान्वयन को प्रोग्रामिंग कहते हैं ।

शून्य व एक को मिलाकर अनंत संयोजन बनाए जा सकते हैं । इसी को बायनरी डिजिट (द्विअंकीय) व्यवस्था कहते हैं । शून्य व एक को बिट व आठ बार शून्य व एक से किसी भी क्रम में लिखने पर, बननेवाली शृंखला को बाइट कहते हैं । कंप्यूटर की आधारभूत इकाई बाइट होती है । प्रत्येक कंप्यूटर में उसके हार्डवेयर के अनुसार एक अद्वितीय मशीनी भाषा होती है, जो बिट्स से बनी होती है । क्योंकि इस कठिन भाषा में लिखना सुविधाजनक नहीं होता है, इसलिए हजारों उच्च स्तरीय भाषाएँ विकसित की गई हैं, जिनमें प्रोग्राम लिखे जाते हैं । जब कोई व्यक्ति कंप्यूटर प्रोग्रामिंग का अध्ययन करता है, तो वह ऐसी ही अनेक प्रचलित भाषाओं में प्रोग्राम लिखना सीखता है ।

सन 1980 में आई.बी.एम. कम्पनी द्वारा जब बाजार में पी.सी. (पर्सनल कंप्यूटर) लाया गया तब तो माइक्रो कंप्यूटर क्षेत्र में क्रांति आ गई । इसमें एक की बोर्ड, एक विजुअल डिसप्ले यूनिट व एक सिस्टम यूनिट (सी.पी.यू) होता है । आवश्यकतानुसार प्रिंटर भी लिया जा सकता है । इसमें स्थित हार्डडिस्क पर तो सूचनाएँ एकत्रित होती हैं पर सहायक के रूप में फ्लॉपी व सी.डी. का उपयोग भी करते हैं ।

नेटवर्क ऐसी व्यवस्था को कहते हैं, जिसके द्वारा सूचनाओं का आदान-प्रदान संभव है । हरेक छोटे-बड़े संगठन के लिए एक नेटवर्क विकसित किया जा सकता है । पी.सी. के विकास के साथ ही लोकल एरिया नेटवर्क (एल.ए.एन) प्रचलित हुआ । इसमें सभी कंप्यूटर उपग्रह द्वारा जुड़े रहते हैं और जब बड़े-बड़े क्षेत्रों में जैसे - रेलवे, हवाई कम्पनियों आदि में इस व्यवस्था का उपयोग करते हैं तो वह वाइड एरिया नेटवर्किंग कहलाता है । इंटरनेट हजारों नेटवर्कों का एक नेटवर्क है । सारी दुनिया के कंप्यूटर इस व्यवस्था से आपस में जूड़े रहते हैं या जोड़े जा सकते हैं । इसका अर्थ हुआ कि संसार के किसी भी कोने से कोई भी सूचना लेनी या देनी हो तो इंटरनेट से कुछ ही सेकण्ड में सम्प्रेषित हो सकती है ।

आज विश्व में करोड़ों लोग इंटरनेट का लाभ उठा रहे हैं । इसके द्वारा व्यवसाय, स्टॉक मार्केट, शिक्षा, चिकित्सा, मौसम, खेलकूद आदि ही नहीं, किसी भी क्षेत्र में जानकारी प्राप्त की जा सकती है । अगर ऐसा कहें कि मन में कोई विचार लायें और उससे सम्बन्धित जानकारी प्राप्त करना चाहें, तो वह भी इंटरनेट के माध्यम से मिल सकती है । इसके द्वारा टेलीफोन का उपयोग, ई-मेल भेजना व प्राप्त करना, ई-कामर्स द्वारा दुनिया में एक कोने से दूसरे कोने तक का व्यापार कर सकना आदि, ऐसी बातें हैं जो सुनने में अविश्वसनीय लगती हैं । आने वाले वर्षों में कंप्यूटर व इंटरनेट सुविधा में जो सम्भावनाएँ व्यक्त की जा रही हैं उनको पढ़कर, सुनकर, दाँतों तले उँगली दबाए बिना नहीं रहा जा सकता । आखिर मनुष्य क्या नहीं कर सकता है ?

बुद्धि और ज्ञान के देवता गणेश जी से कंप्यूटर की तुलना की जाए तो अनुचित न होगा । आज मूषक (माउस) की पीठ पर हाथ भर रख दीजिए, आपके सामने यह देवता ज्ञान का खजाना खोल देगा । आठों

सिद्धियाँ और नव निधियाँ कंप्यूटर देव की कृपा से आपके अधीन वैसे ही हो सकती है, जैसे वे आज दुनिया के सर्वाधिक धन सम्पन्न अमरीकी बिल गेट्स के पास हैं । बिल भारत की कंप्यूटर प्रतिभा पर मुग्ध हैं । हो भी क्यों न ? भारत सॉफ्टवेयर के क्षेत्र में संसार में प्रथम स्थान जो रखता है । कुछ वर्ष हुए इस धनकुबेर अमरीकी ने दिल्ली और बेंगलूरु की यात्रा कर, भारत के युवा कंप्यूटर वैज्ञानिकों को इस क्षेत्र में और बढ़-चढ़ कर आगे आने को कहा था । क्या हमारे कंप्यूटर वैज्ञानिक दुनिया के इस आधुनिक गणक देवता कंप्यूटर की कृपा प्राप्त कर समृद्धि के मार्ग पर बिल गेट्स की तरह नहीं चलना चाहेंगे ? क्या वे भारत को भी अमरीका, रूस की तरह विज्ञान और कंप्यूटर टेक्नॉलाजी में अग्रणी देश नहीं बनाना चाहेंगे ? अब भारत की नई पीढ़ी और विज्ञान जगत विकास की नई चुनौतियाँ स्वीकार करते हुए सर्वत्र शिक्षा का श्रीगणेश कर रहा है ।

आज कल अनेक विद्यालयों में छोटी कक्षाओं से ही कंप्यूटर का अध्ययन व उस पर कार्य करना सिखाया जाने लगा है । पत्र पत्रिकाओं में हम सुपर कंप्यूटर की बातें पढ़ते रहते हैं । लोगों ने उस कंप्यूटर 'डीप ब्लू' के बारे में भी पढ़ा होगा, जिसने अविजित ग्रैंड मास्टर कास्पारोव को भी शतरंज में हरा दिया है । आई. बी. एम. उससे भी एक हजार गुना ज्यादा शक्तिशाली सुपर कंप्यूटर 'ब्लू जीन' शीघ्र ही बना लेने का दावा कर रही है और उसके बाद उससे भी शक्तिशाली । जब तक मनुष्य पृथ्वी पर है यह प्रक्रिया जारी रहेगी । कंप्यूटर संसार का एक अजूबा है । कंप्यूटर क्रांति का भविष्य अनेक संभावनाओं से परिपूर्ण है । आइए, हम और आप सभी इस क्रांति के भागीदार बनें और मानवजाति के उत्थान के लिए कुछ काम करें ।

*विचारबोध :- 'कंप्यूटर क्रांति' निबंध में कंप्यूटर के इतिहास का संक्षिप्त वर्णन है, जिसके माध्यम से नेटवर्क, इंटरनेट, कंप्यूटर की कार्यप्रणाली, हार्डडिस्क, पी.सी., सी.पी.यू जैसे विविध अंगों का परिचय देते हुए लेखक ने कंप्यूटर क्रांति का भविष्य अनेक संभावनाओं से परिपूर्ण बताया है ।*

## - शब्दार्थ -

निरन्तर - लगातार । सोपान - सीढ़ी । विभक्त - अलग-अलग करना । संयुक्त - मिला-जुला । यूनिट- इकाई । कंदरा - गुफा । गणक - गणना करने वाला । धन कुबेर - धनी व्यक्ति । टेक्नॉलजी - तकनीक । अग्रणी - सबसे आगे । श्रीगणेश - आरंभ । अविजित - अपराजित । अजूबा - आश्चर्यजनक । उत्थान - उन्नति ।

# प्रश्न और अभ्यास

1. **दीर्घ उत्तरमूलक प्रश्न :**
   - (i) कंप्यूटर के इतिहास का संक्षिप्त वर्णन कीजिए ।
   - (ii) कंप्यूटर की राजकीय प्रणाली का वर्णन कीजिए ।
   - (iii) कंप्यूटर के प्रमुख अंगों के नाम बताते हुए उनका परिचय दीजिए ।
   - (iv) विश्व में करोड़ों लोग इंटरनेट से कैसे लाभ उठा रहे हैं ?
   - (v) कंप्यूटर की तुलना गणेशजी से क्यों की गई है ?

2. **संक्षिप्त उत्तरमूलक प्रश्न :**
   - (i) प्रोग्रामिंग किसे कहते हैं ?
   - (ii) सी.पी.यू. किसे कहते हैं ?
   - (iii) नेटवर्क व्यवस्था किसे कहते हैं ?
   - (iv) इंटरनेट के माध्यम से किन-किन विषयों की जानकारी प्राप्त की जा सकती है ?

3. **अति संक्षिप्त उत्तरमूलक प्रश्न :**
   - (i) कंप्यूटर का शाब्दिक अर्थ क्या है ?
   - (ii) नेटवर्क का हिन्दी अर्थ लिखिए ।
   - (iii) इंटरनेट किसे कहते हैं ?
   - (iv) हार्ड डिस्क क्या है ?
   - (v) **निम्नलिखित शब्दों का विस्तार रूप लिखिए :**
     - (क) आई.बी.एम.
     - (ख) आई.सी.
     - (ग) आई.यू
     - (घ) सी.पी.यू.
     - (ङ) एल.ए.एन
     - (च) पी.सी.
     - (छ) सी.डी.
   - (vi) इस युग की सबसे बड़ी उपलब्धि क्या है ?

4. सप्रसंग व्याख्या कीजिए -

(i) परिवर्तन प्रकृति का नियम है । यदि यह परिवर्तनशीलता न होती, तो आज भी मनुष्य कंदराओं में रह रहा होता, पत्थर रगड़कर आग जलाता और वृक्षों की छाल से तन ढँकता, परन्तु सदियों से निरन्तर हो रहे आविष्कारों के कारण मानव जाति नित्य प्रति प्रगति के सोपान चढ़ती जा रही है ।

(ii) आज मूषक की पीठ पर हाथ भर रख दीजिए, आपके सामने यह देवता ज्ञान का खजाना खोल देगा । आठों सिद्धियाँ और नव निधियाँ कंप्यूटर देव की कृपा से आपके अधीन वैसे ही हो सकती हैं, जैसे वे आज दुनिया के सर्वाधिक धन सम्पन्न अमरीकी बिल गेट्स के पास हैं ।

## भाषा - ज्ञान

5. **निम्नलिखित शब्दों के दो दो पर्यायवाची शब्द लिखिए :**

गणेश, विश्व, कुबेर, मनुंष्य, पृथ्वी, प्रकृति, बुद्धि

6. विद्यार्थियों को अपने स्कूल की कंप्यूटर प्रयोगशाला में ले जाकर कंप्यूटर का व्यावहारिक ज्ञान दीजिए ।

7. कंप्यूटर से लाभ-हानि दोनों विषयों पर विद्यार्थियों को बताएँ ।

8. कंप्यूटर के विषय पर आप जो कुछ जानते हैं उस पर एक निबन्ध लिखिए ।

●

# बूढ़ी काकी

*प्रेमचंद*

बुढ़ापा बहुधा बचपन का पुनरागमन हुआ करता है । बूढ़ी काकी में जिह्वा स्वाद के बिना और कोई चेष्टा शेष न थी और न अपने कष्टों की ओर आकर्षित करने का, रोने के अतिरिक्त कोई दूसरा सहारा ही । समस्त इंद्रियाँ- नेत्र, हाथ और पैर- जवाब दे चुके थे । पृथ्वी पर पड़ी रहतीं और घरवाले कोई बात उनकी इच्छा के प्रतिकूल करते, भोजन का समय टल जाता या उसका परिणाम पूर्ण न होता अथवा बाजार से कोई वस्तु आती और उन्हें न मिलती तो वे रोने लगती थीं । उनका रोना-सिसकना साधारण रोना न था, वे गला फाड़-फाड़कर रोती थीं ।

उनके पतिदेव को स्वर्ग सिधारे कालांतर हो चुका था । बेटे तरुण हो-होकर चल बसे थे । बस एक भतीजे के सिवाय और कोई न था । उसी भतीजे के नाम उन्होंने अपनी सारी संपत्ति लिख दी । भतीजे ने संपत्ति लिखाते समय खूब लम्बे-चौड़े वायदे किए, किन्तु वे सब वादे केवल सब्जबाग थे । यद्यपि उस संपत्ति की वार्षिक आय डेढ़-दो सौ रुपए से कम न थी तथापि बूढ़ी काकी को पेट भर भोजन भी कठिनाई से मिलता था । इसमें उनके भतीजे पंडित बुद्धिराम का अपराध था अथवा उनकी अर्धांगिनी श्रीमती रूपा का, इसका निर्णय करना सहज नहीं । बुद्धिराम स्वभाव के सज्जन थे, किन्तु उसी समय तक, जब तक कि उनके कोष पर कोई आँच न आए । रूपा स्वभाव से तीव्र थी सही, पर ईश्वर से डरती थी । अतएव बूढ़ी काकी को उसकी तीव्रता इतनी न खलती थी जितनी बुद्धिराम की भलमनसाहत ।

बुद्धिराम को कभी-कभी अपने अत्याचार का खेद होता था । विचारते कि इसी संपति के कारण मैं इस समय भलामानुष बना बैठा हूँ । यदि मौखिक आश्वासन और सूखी सहानुभूति से स्थिति में सुधार हो सकता तो उन्हें कदाचित् कोई आपत्ति न होती, परंतु विशेष व्यय का भय उनकी सच्चेष्टा को दबाए रखता था । यहाँ तक कि यदि द्वार पर कोई भला आदमी बैठा होता और बूढ़ी काकी उस समय अपना राग अलापने लगतीं तो वे आग हो जाते और घर में आकर उन्हें जोर से डाँटते । लड़कों को बुड्ढों से स्वाभाविक विद्वेष होता ही है और फिर जब माता-पिता का यह रंग देखते तो वे बूढ़ी काकी को और भी सताया करते । कोई चुटकी काटकर भागता, कोई उन पर पानी की कुल्ली कर देता । काकी चीख मारकर रोतीं, पर यह बात प्रसिद्ध थी कि वे केवल खाने के लिए रोती हैं, अतएव उनके संताप और आर्तनाद पर कोई ध्यान नहीं देता था । हाँ, काकी क्रोधातुर होकर बच्चों को गालियाँ देने लगतीं तो रूपा घटना-स्थल पर जा पहुँचती । इससे काकी अपनी जिह्वा-कृपाण का कदाचित् ही प्रयोग करती थी, यद्यपि उपद्रव-शान्ति का यह उपाय रोने से कहीं अधिक उपयुक्त था ।

संपूर्ण परिवार में यदि काकी को किसी से अनुराग था तो वह बुद्धिराम की छोटी लड़की लाड़ली थी । लाड़ली अपने दोनों भाइयों के भय से अपने हिस्से का मिठाई-चबैना बूढ़ी काकी के पास बैठ कर खाया करती थी । यह उनका रक्षागार था और यद्यपि काकी की शरण उनकी लोलुपता के कारण बहुत महँगी पड़ती थी तथापि भाइयों के अन्याय से कहीं सुलभ थी । इसी स्वार्थानुकूलता ने उन दोनों में सहानुभूति का आरोपण कर दिया था ।

रात का समय था । बुद्धिराम के द्वार पर शहनाई बज रही थी और गाँव के बच्चों का झुंड विस्मयपूर्ण नेत्रों से गाने का रसास्वादन कर रहा था । चारपाइयों पर विश्राम करते हुए मेहमान नाइयों से मुक्कियाँ लगवा रहे थे । समीप ही खड़ा हुआ भाट बिरदावली सुना रहा था । दो-एक अँग्रेजी पढ़े हुए नवयुवक इन व्यवहारों से उदासीन थे । वे इस गँवार मंडली में बोलना अथवा सम्मिलित होना अपनी प्रतिष्ठा के प्रतिकूल समझते थे ।

आज बुद्धिराम के बड़े लड़के का तिलक आया है । यह उसी का उत्सव है । घर के भीतर स्त्रियाँ गा रही थीं और रूपा मेहमानों के लिए भोजन के प्रबन्ध में व्यस्त थी । भट्ठियों पर कड़ाह चढ़ रहे थे । एक में पूड़ी-कचौड़ी निकल रही थी । दूसरे में अन्य पकवान बनते थे । एक बड़े हंडे में मसालेदार तरकारी पक रही थी । घी और मसाले की क्षुधावर्धक सुगंध चारों ओर फैली हुई थी ।

बूढ़ी काकी अपनी कोठरी में शोकमय विचार की भाँति बैठी हुई थी । यह स्वादमिश्रित सुगंधि उन्हें बेचैन कर रही थी । वे मन-ही-मन विचार कर रही थीं, संभवत: मुझे पूड़ियाँ न मिलेंगी । इतनी देर हो गई, कोई भोजन लेकर नहीं आया । मालूम होता है, सब लोग भोजन कर चुके हैं । मेरे लिए कुछ न बचा । यह सोचकर उन्हें रोना आया परंतु अपशकुन के भय से वे रो न सकीं ।

'अहा ! कैसी सुगंधि है ! अब मुझे कौन पूछता है ! जब रोटियों के ही लाले पड़े हैं तब ऐसे भाग्य कहाँ कि भरपेट पूड़ियाँ मिलें ।' यह विचार कर उन्हें रोना आया, कलेजे में हूक-सी उठने लगी । परंतु रूपा के भय से उन्होंने फिर मौन धारण कर लिया ।

बूढ़ी काकी देर तक इन्हीं दुखदायक विचारों में डूबी रहीं । घी और मसालों की सुगंधि रह-रहकर आपे से बाहर किये देती थी । मुँह में पानी भर-भर आता था । पूड़ियों का स्वाद स्मरण करके हृदय में गुदगुदी होने लगती थी । किसे पुकारूँ, आज लाड़ली बेटी भी नहीं आई । दोनों छोकरे सदा दिखाई दिया करते हैं । आज उनका भी कहीं पता नहीं । कुछ मालूम तो होता कि क्या बन रहा है ।

बूढ़ी काकी की कल्पना में पूड़ियों की तस्वीर नाचने लगी । खूब लाल-लाल, फूली-फूली, नरम-नरम होंगी । रूपा ने भली-भाँति मोयन दिया होगा । कचौड़ियों में अजवायन और इलायची की महक आ रही होगी । एक पूड़ी मिलती तो जरा हाथ में लेकर देखती । क्यों न कड़ाह के सामने ही बैठूँ । पूड़ियाँ छन-छनकर तैयार होंगी । कड़ाह से गरम-गरम निकालकर थाल में रखी जाती होंगी । फूल हम घर में भी सूँघ सकते हैं, परन्तु वाटिका में कुछ और ही बात होती है । इस प्रकार निर्णय कर बूढ़ी काकी उकड़ूँ बैठकर हाथों के बल सरकती हुई बड़ी कठिनाई से चौखट से उतरीं और धीरे-धीरे रेंगती हुई कड़ाह के पास आ बैठीं । यहाँ आने पर उन्हें उतना ही धैर्य हुआ जितना भूखे कुत्ते को खानेवाले के सम्मुख बैठने में होता है ।

रूपा उस समय कार्यभार से उद्विग्न हो रही थी । कभी इस कोठे में जाती, कभी उस कोठे में, कभी कड़ाह के पास जाती, कभी भंडार में जाती । किसी ने बाहर से आकर कहा- 'महाराज ठंडाई माँग रहे हैं ।' ठंडाई देने लगी । इतने में फिर किसी ने आकर कहा - 'भाट आया है, उसे कुछ दे दो ।' भाट के लिए सीधा निकाल रही थी कि एक तीसरे आदमी ने आकर पूछा - 'अभी भोजन तैयार होने में कितना विलंब है ? जरा ढोल-मंजीरा उतार दो ।' बेचारी अकेली स्त्री दौड़ते-दौड़ते व्याकुल हो रही थी, झुँझलाती थी, कुढ़ती थी, परंतु क्रोध प्रकट करने का अवसर न पाती थी । भय होता, कहीं पड़ोसिनें यह न कहने लगें कि इतने में उबल पड़ी । प्यास से कंठ

सूख रहा था । गर्मी के मारे फुँकी जाती थी, परन्तु इतना अवकाश भी नहीं था कि जरा पानी पी ले अथवा पंखा लेकर झले । यह भी खटका था कि जरा आँख हटी और चीजों की लूट मची । इस अवस्था में उसने बूढ़ी काकी को कड़ाह के पास बैठी देखा तो जल गई । क्रोध न रुक सका । इसका भी ध्यान न रहा कि पड़ोसिनें बैठी हुई हैं; मन में क्या कहेंगी; पुरुष सुनेंगे तो क्या कहेंगे ? जिस प्रकार मेंढ़क केंचुए पर झपटता है, उसी प्रकार वह बूढ़ी काकी पर झपटी और उन्हें दोनों हाथों से झटककर बोली- ऐसे पेट में आग लगे । पेट है या भाड़ ? कोठरी में बैठते हुए क्या दम घुटता था ? अभी मेहमानों ने नहीं खाया, भगवान को भोग नहीं लगा । तब तक धैर्य न हो सका ? आकर छाती पर सवार हो गईं । जल जाए ऐसी जीभ । दिन भर खाती न होतीं तो न जाने किसकी हाँड़ी में मुँह न डालतीं ? गाँव देखेगा तो कहेगा बुढ़िया भरपेट खाने को नहीं पातीं, तभी तो इस तरह मुँह बाये फिरती हैं । नाम बेचने पर लगी हैं । नाक कटवा कर ही दम लेंगी । इतना ठूँसती हैं, न जाने कहाँ भस्म हो जाता है ? भला चाहती हो तो जाकर कोठरी में बैठो, जब घर के लोग खाने लगेंगे तब तुमको भी मिलेगा । तुम कोई देवी नहीं हो कि चाहे किसी के मुँह में पानी न जाए, परन्तु तुम्हारी पूजा पहले ही हो जाए ।

बूढ़ी काकी ने सिर न उठाया, न रोईं, न बोलीं, चुपचाप रेंगती हुई अपनी कोठरी में चली गईं । आघात ऐसा कठोर था कि हृदय और मस्तिष्क की सारी शक्तियाँ, सम्पूर्ण विचार और सम्पूर्ण भार उसी ओर आकर्षित हो गये थे । नदी में जब कगार का कोई वृहत खंड कटकर गिरता है तो आसपास का जल-समूह चारों ओर से उसी स्थान को पूरा करने के लिए दौड़ता है ।

भोजन तैयार हो गया । आँगन में पत्तलें पड़ गईं, मेहमान खाने लगे । स्त्रियों ने जेवनार-गीत गाना आरंभ कर दिया । मेहमानों के नाई और सेवकगण भी उसी मंडली के साथ, किन्तु कुछ हटकर भोजन करने बैठे थे, परन्तु सभ्यतानुसार जब तक सब-के-सब खा न चुके, कोई उठ नहीं सकता था । दो-एक मेहमान जो कुछ पढ़े-लिखे थे, सेवकों के दीर्घाहार पर झुँझला रहे थे । वे इस बंधन को व्यर्थ और बे-सिर-पैर की बात समझते थे ।

बूढ़ी काकी अपनी कोठरी में जाकर पश्चात्ताप कर रही थीं कि मैं कहाँ-से-कहाँ गई । उन्हें रूपा पर क्रोध नहीं था । अपनी जल्दबाजी पर दुख था । सच ही तो, जब तक मेहमान लोग भोजन न कर चुकेंगे, घरवाले कैसे खायेंगे ? मुझसे इतनी देर भी न रहा गया । सबके सामने पानी उतर गया । अब जब तक कोई बुलाने न आयेगा, न जाऊँगी ।

मन-ही-मन इसी प्रकार का विचार कर वे बुलावे की प्रतीक्षा करने लगीं । परन्तु घी की रुचिकर सुवास बड़ी ही धैर्य-परीक्षक प्रतीत हो रही थी । उन्हें एक-एक पल एक-एक युग के समान मालूम होता था । अब पत्तलें बिछ गई होंगी । अब मेहमान आ गए होंगे । लोग हाथ-पैर धो रहे हैं, नाई पानी दे रहा है । मालूम होता है लोग खाने बैठ गये । जेवनार गाया जा रहा है, यह विचार कर वे मन को बहलाने के लिए लेट गयीं । धीरे-धीरे एक गीत गुनगुनाने लगीं उन्हें मालूम हुआ कि मुझे गाते देर हो गयी । क्या इतनी देर तक लोग भोजन कर ही रहे होंगे । किसी की आवाज सुनाई नहीं देती । अवश्य ही लोग खा-पीकर चले गये । मुझे कोई बुलाने नहीं आया । रूपा चिढ़ गई है, क्या जाने न बुलाए । सोचती हो कि आप ही आएगी । वे कोई मेहमान तो नहीं जो उन्हें बुलाऊँ । बूढ़ी काकी चलने के लिए तैयार हुईं । यह विश्वास कि एक मिनट में पूड़ियाँ और मसालेदार

तरकारियाँ सामने आएँगी, उनकी स्वादेन्द्रिय को गुदगुदाने लगी । उन्होंने मन में तरह-तरह के मनसूबे बाँधे - पहले तरकारी से पूड़ियाँ खाऊँगी । फिर दही और शक्कर से, कचौड़ियाँ रायते के साथ मजेदार मालूम होंगी । चाहे कोई बुरा माने चाहे भला, मैं तो माँग-माँग कर खाऊँगी । यही न लोग कहेंगे कि इन्हें विचार नहीं ? कहा करें, इतने दिन के बाद पूड़ियाँ मिल रही हैं तो मुँह जूठा करके थोड़े ही उठ जाऊँगी ।

वे उकड़ूँ बैठकर हाथों के बल सरकती हुई आँगन में आईं । परन्तु हाय दुर्भाग्य ! अभिलाषा ने अपने पुराने स्वभाव के अनुसार समय की मिथ्या कल्पना की थी । मेहमान-मंडली अभी बैठी हुई थी । कोई खाकर उँगलियाँ चाटता था, कोई तिरछे नेत्रों से देखता था कि और लोग अभी खा रहे हैं या नहीं । कोई इस चिन्ता में था कि पत्तल पर पूड़ियाँ छूटी जाती हैं, किसी तरह इन्हें भीतर रख लेता । कोई दही खाकर जीभ चटकारता था, परन्तु दूसरा दोना माँगते संकोच करता था कि इतने में बूढ़ी काकी रेंगती हुई उनके बीच में जा पहुँची । कई आदमी चौंककर उठ खड़े हुए । पुकारने लगे- अरे यह बुढ़िया कौन है ? यह कहाँ से आ गई ? देखो किसी को छू न दे ।

पं. बुद्धिराम काकी को देखते ही क्रोध से तिलमिला गये । पूड़ियों का थाल लिए खड़े थे । थाल को जमीन पर पटक दिया और जिस प्रकार निर्दय महाजन अपने किसी बेईमान और भगोड़े कर्जदार को देखते ही झपटकर उसका टेंटुआ पकड़ लेता है, उसी तरह लपककर उन्होंने बूढ़ी काकी के दोनों हाथ पकड़े और घसीटते हुए लाकर उन्हें अँधेरी कोठरी में धम से पटक दिया । आशारूपी वाटिका लू के एक ही झोंके में विनष्ट हो गई ।

मेहमानों ने भोजन किया । घरवालों ने भोजन किया । बाजेवाले भी भोजन कर चुके, परन्तु बूढ़ी काकी को किसी ने नहीं पूछा, बुद्धिराम और रूपा दोनों ही काकी को उनकी निर्लज्जता के लिए दंड देने का निश्चय कर चुके थे । उनके बुढ़ापे पर, दीनता पर किसी को करुणा न आती थी । अकेली लाड़ली उनके लिए कुढ़ रही थी ।

लाड़ली को काकी से अत्यन्त प्रेम था । बेचारी भोली लड़की थी । बाल-विनोद और चंचलता की उसमें गंध तक न थी । दोनों बार जब उसके माता-पिता ने काकी को निर्दयता से घसीटा तो लाड़ली का हृदय ऐंठ कर रह गया । वह झुँझला रही थी कि ये लोग काकी को क्यों बहुत- सी पूड़ियाँ नहीं देते ? क्या मेहमान सब-की-सब खा जाएँगे ? और यदि काकी ने मेहमानों के पहले खा लिया तो क्या बिगड़ जाएगा ? वह काकी के पास जाकर उन्हें धैर्य देना चाहती थी किन्तु माता के भय से न जाती थी । उसने अपने हिस्से की पूड़ियाँ बिल्कुल न खाई थीं । अपनी गुड़ियों की पिटारी में बंद कर रखी थीं । वह उन पूड़ियों को काकी के पास ले जाना चाहती थी । उसका हृदय अधीर हो रहा था । बूढ़ी काकी मेरी बात सुनते ही उठ बैठेंगी । पूड़ियाँ देखकर कैसी प्रसन्न होंगी ! मुझे खूब प्यार करेंगी ।

रात के ग्यारह बज गये थे । रूपा आँगन में पड़ी सो रही थी । लाड़ली की आँखों में नींद न आती थी । काकी को पूड़ियाँ खिलाने की खुशी उसे सोने न देती थी । उसने गुड़ियों की पिटारी सामने ही रखी थी । जब विश्वास हो गया कि अम्मा सो रही हैं तो वह चुपके से उठी और विचारने लगी, कैसे चलूँ ? चारों ओर अँधेरा था । केवल चूल्हों में आग चमक रही थी और चूल्हों के पास एक कुत्ता लेटा था । लाड़ली की दृष्टि द्वार के

सामनेवाले नीम की ओर गई । उसे मालूम हुआ कि उस पर हनुमान जी बैठे हुए हैं । उनकी पूँछ, उनकी गदा, सब स्पष्ट दिखलाई दे रहा है । मारे भय के उसने आँखें बंद कर लीं । इतने में कुत्ता उठ बैठा । लाड़ली को ढाढ़स हुआ । कई सोये हुए मनुष्यों के बदले एक भागता हुआ कुत्ता उसके लिए अधिक धैर्य का कारण हुआ । उसने पिटारी उठायी और बूढ़ी काकी की कोठरी की ओर चली ।

बूढ़ी काकी को केवल इतना स्मरण था कि किसी ने मेरा हाथ पकड़कर घसीटा । फिर ऐसा मालूम हुआ जैसे कोई पहाड़ पर उड़ाए लिए जाता है । उनके पैर बार-बार पत्थरों से टकराये तब किसी ने उन्हें पहाड़ पर से पटका; वे मूर्च्छित हो गयीं ।

जब वे सचेत हुईं तो किसी की जरा भी आहट न मिलती थी । समझीं कि सब लोग खा-पीकर सो गये और उनके साथ मेरी तकदीर भी सो गयी । रात कैसे कटेगी ? राम ! क्या खाऊँ ? पेट में अग्नि धधक रही है ? हा ! किसी ने मेरी सुधि न ली ! क्या मेरा पेट काटने से धन जुड़ जाएगा ? इन लोगों को इतनी भी दया नहीं आती कि न जाने बुढ़िया कब मर जाए ? उसका जी क्यों दुखाएँ ? मैं पेट की रोटियाँ ही खाती हूँ कि और कुछ ? इस पर यह हाल । मैं अंधी अपाहिज ठहरी, न कुछ सुनूँ न बूझूँ । यदि आँगन में चली गयी थी तो क्या बुद्धिराम से इतना कहते नहीं बनता था कि काकी, अभी लोग खा रहे हैं, फिर आना । मुझे घसीटा, पटका । उन्हीं पूड़ियों के लिए रूपा ने सबके सामने गालियाँ दीं । उन्हीं पूड़ियों के लिए इतनी दुर्गति करने पर भी उनका पत्थर का कलेजा न पसीजा । सबको खिलाया, मेरी बात तक न पूछी । जब तब ही न दीं, तो अब क्या देंगे ?

यह विचारकर काकी निराशामय संतोष के साथ लेट गयीं । ग्लानि से गला भर-भर आता था, परंतु मेहमानों के भय से रोती न थीं ।

सहसा उसके कानों में आवाज आई - 'काकी उठो, मैं पूड़ियाँ लाई हूँ ।' काकी ने लाड़ली की बोली पहचानी । चटपट उठ बैठीं । दोनों हाथों से लाड़ली को टटोला और उसे गोद में बैठा लिया ।

लाड़ली ने पूड़ियाँ निकाल कर दीं । काकी ने पूछा - "क्या तुम्हारी अम्मा ने दी हैं ?"

लाड़ली ने कहा - "नहीं, यह मेरे हिस्से की हैं ।"

काकी पूड़ियों पर टूट पड़ीं । पाँच मिनट में ही पिटारी खाली हो गई । लाड़ली ने पूछा - "काकी पेट भर गया ?"

जैसे थोड़ी-सी वर्षा ठंडक के स्थान पर गर्मी पैदा कर देती है, उसी भाँति इन थोड़ी सी पूड़ियों ने काकी की क्षुधा और इच्छा को और उत्तेजित कर दिया था । बोलीं - "नहीं बेटी, जाकर अम्मा से और माँग लाओ ।"

लाड़ली ने कहा - "अम्मा सोती है, जगाऊँगी तो मारेंगी ।"

काकी ने पिटारी को फिर टटोला । उसमें कुछ खुर्चन गिरे थे । उन्हें निकालकर वे खा गयीं । बार-बार ओंठ चाटती थीं । चटकारे भरती थीं ।

हृदय मसोस रहा था कि और पूड़ियाँ कैसे पाऊँ । संतोष-सेतु जब टूट जाता है तो इच्छा का बहाव अपरिमित हो जाता है । काकी का अधीर मन इच्छा के प्रबल प्रवाह में बह गया । उचित और अनुचित का

विचार जाता रहा । वे कुछ देर तक उस इच्छा को रोकती रहीं । सहसा लाड़ली से बोलीं - मेरा हाथ पकड़कर वहाँ ले चलो जहाँ मेहमानों ने बैठकर भोजन किया है ।

लाड़ली उनका अभिप्राय समझ न सकी । उसने काकी का हाथ पकड़ा और ले जाकर जूठी पत्तलों के पास बैठा दिया । दीन, क्षुधातुर, हतज्ञान बुढ़िया पत्तलों से पूड़ियों के टुकड़े चुन-चुनकर भक्षण करने लगी । ओह, दही कितना स्वादिष्ट था, कचौड़ियाँ कितनी सलोनी, खस्ता कितने सुकोमल । काकी बुद्धिहीन होते हुए भी यह जानती थीं कि मैं वह काम कर रही हूँ जो मुझे कदापि न करना चाहिए । मैं दूसरों की जूठी पत्तल चाट रही हूँ । परंतु बुढ़ापा तृष्णा रोग का अंतिम समय है, जब सम्पूर्ण इच्छाएँ एक ही केन्द्र पर आ लगती हैं । बूढ़ी काकी में यह केन्द्र उनकी स्वादेन्द्रिय थी ।

ठीक उसी समय रूपा की आँखें खुलीं । उसे मालूम हुआ कि लाड़ली मेरे पास नहीं है । वह चौंकी, चारपाई के इधर-उधर ताकने लगी कि कहीं नीचे तो नहीं गिर पड़ी । उसे वहाँ न पाकर बैठी तो क्या देखती है कि लाड़ली जूठी पत्तलों के पास चुपचाप खड़ी है और बूढ़ी काकी पत्तलों पर से पूड़ियों के टुकड़े उठा-उठाकर खा रही हैं । रूपा का हृदय सन्न हो गया । किसी गाय की गर्दन पर छुरी चलते देखकर जो अवस्था उसकी होती, वही उस समय उसकी हुई । इससे अधिक शोकमय दृश्य असम्भव था । पूड़ियों के कुछ ग्रासों के लिए उसकी चचेरी सास ऐसा निकृष्ट कर्म कर रही है । यह वह दृश्य था जिसे देखनेवालों के हृदय काँप उठते हैं । ऐसा प्रतीत हुआ मानो जमीन रुक गई है, आसमान चक्कर खा रहा है । संसार पर कोई नयी विपत्ति आने वाली है । रूपा को क्रोध न आया । शोक के सम्मुख क्रोध कहाँ ? करुणा और भय से उसकी आँखें भर आईं । इस अधर्म के पाप का भागी कौन है ? उसने सच्चे हृदय से गगनमंडल की ओर हाथ उठाकर कहा - 'परमात्मा, मेरे बच्चों पर दया करो । इस अधर्म का दंड मुझे मत दो, नहीं तो मेरा सत्यानाश हो जाएगा ।'

रूपा को अपनी स्वार्थपरता और अन्याय इस प्रकार प्रत्यक्ष रूप में कभी न दिख पड़े थे । वह सोचने लगी- ''हाय ! मैं कितनी निर्दयी हूँ । जिसकी सम्पत्ति से मुझे दो सौ रुपया वार्षिक आय हो रही है, उसकी यह दुर्गति ! और मेरे कारण ! हे दयामय भगवान ! मुझसे बड़ी भारी चूक हुई है, मुझे क्षमा करो । आज मेरे बेटे का तिलक था । सैकड़ों मनुष्यों ने भोजन किया । मैं उनके इशारों की दासी बनी रही । अपने नाम के लिए सैकड़ों रुपये व्यय कर दिए परन्तु जिस की बदौलत हजारों रुपए खाये, उसे इस उत्सव में भरपेट भोजन न दे सकी । केवल इसी कारण तो, कि वह वृद्धा असहाय है ।

रूपा ने दीया जलाया, अपने भंडार का द्वार खोला और एक थाली में सम्पूर्ण सामग्रियाँ सजाकर लिए हुए बूढ़ी काकी की ओर चली ।

आधी रात जा चुकी थी, आकाश पर तारों के थाल सजे हुए थे और उन पर देवगण स्वर्गीय पदार्थ सजा रहे थे, परन्तु उनमें से किसी को वह परमानंद प्राप्त न हो सकता था जो बूढ़ी काकी को अपने सम्मुख थाल देखकर प्राप्त हुआ । रूपा ने कंठावरुद्ध स्वर में कहा - 'काकी उठो, भोजन कर लो । मुझसे आज बड़ी भूल हुई, उसका बुरा न मानना । परमात्मा से प्रार्थना करो कि वे मेरा अपराध क्षमा कर दें ।'

भोले-भाले बच्चों की भाँति, जो मिठाइयाँ पाकर मार और तिरस्कार सब भूल जाते हैं, बूढ़ी काकी वैसे ही सब भुलाकर बैठी हुई खाना खा रही थीं । उनके एक-एक रोएँ से सच्ची सदिच्छाएँ निकल रही थीं और रूपा इस स्वर्गीय दृश्य का आनंद लेने में निमग्न थी ।

*विचारबोध :- प्रेमचंद हिन्दी साहित्य के बेजोड़ साहित्यकार हैं । हिन्दी भाषा को लोकप्रिय बनाने में उनका विशेष योगदान है । वे कहानी साहित्य के कल्पतरु तथा उपन्यास साहित्य के सम्राट माने जाते हैं ।*

*व्यक्ति की मानसिकता बुढ़ापे में परिवर्तित हो जाती है । उनमें बच्चों की सी लालसा जाग जाती है । किन्तु परिवार के दूसरे सदस्य अक्सर उन्हें अनादर करते हैं । उनकी स्वार्थी प्रवृत्ति के कारण 'बूढ़ी काकी' जैसी अपाहिज अंधी बुढ़िया अकथनीय कष्ट झेलकर भी उनके प्रति सदिच्छाएँ प्रकट करती हैं ।*

## - शब्दार्थ -

बहुधा - अक्सर । सुलभ - आसानी से प्राप्त होने वाला । प्रतिकूल - विपरीत । कालान्तर - बहुत समय । तरुण - युवा । मिश्रित - मिली-जुली । विद्वेष - जलन । अनुराग - प्रेम । लोलुपता - लालचीपन । वाटिका - बगीचा । निर्णय - निश्चय । सम्मुख - सामने । उद्विग्न - परेशान । दीर्घाहार - अधिक भोजन । स्वादेन्द्रियाँ - स्वाद की इन्द्रियाँ, जीभ आदि । मिथ्या - झूठ । हतज्ञान - अज्ञान, नासमझ । करुणा - दया । मूर्च्छित - बेहोश । सचेत - होश आना । दुर्गति - बुरी दशा । ग्लानि - दु:ख । अपरिमित - सीमाहीन, असीमित । मदांध - मद से अंधा, नशे में अंधा । सेतु - पुल । क्षुधातुर - भूख से व्याकुल । बुद्धिहीन - मूर्ख । तृष्णा - इच्छा । पतित - गिरा हुआ । प्रतीत होना - मालूम होना । भागी - हिस्सेदार । पुनरागमन - दुबारा आना । चेष्टा - इच्छा, चाह, प्रयास । कोष - खजाना । कृपाण - तलवार । रक्षागार - सुरक्षित स्थल । जिह्वा- जीभ । स्वार्थानुकूलता - स्वार्थों के अनुकूल । विस्मयपूर्ण - आश्चर्य से भरा । क्षुधावर्द्धक - भूख बढ़ाने वाली । शोक - दु:ख । भलमनसाहत - सज्जनता । सुगन्धि - महक, सुवास । स्मरण - याद करना । दिक् करना - परेशान करना । विलम्ब - देर । कंठ - गला । अवकाश - छुट्टी । बृहद् - बड़ा । पश्चात्ताप करना- पछताना । मंसूबे बाँधना - योजना बनाना । अभिलाषा - इच्छा । दण्ड - सजा । वार्षिक आय - सालाना कमाई । दासी - नौकरानी । असहाय - बेसहारा । कंठावरुद्ध - भरे गले से । अपराध - गलती । तिरस्कार -

अपमान । निमग्न होना - डूबना, तल्लीन । प्रबल - तेज़ । अभिप्राय - मतलब । भक्षण करना - खा लेना । अधीर - बेचैन, व्याकुल । ग्रासों - टुकड़ों । निकृष्ट - नीच, तुच्छ । आपत्ति - मुसीबत । संताप - पीड़ा । आर्तनाद - दु:खभरी आवाज । बिरदावली - गुणगान । भाट - चारण, जो राजाओं का गुणगान करते हैं । निर्दयता - कठोरता ।

## प्रश्न और अभ्यास

**1. दीर्घ उत्तरमूलक प्रश्न :**

(i) बुद्धिराम के घर में मनाये जा रहे उत्सव का वर्णन कीजिए ।

(ii) घरवाले काकी का अनादर क्यों और कैसे करते हैं ?

(iii) ''बुढ़ापा एक बिमारी है'' - विषय पर एक निबंध लिखिए ।

**2. संक्षिप्त उत्तरमूलक प्रश्न :**

(i) बुद्धिराम का परिचय दीजिए ।

(ii) काकी और लाड़ली किन कारणों से एक-दूसरे को चाहती थीं ?

(iii) मेहमानों के पास काकी को देखकर बुद्धिराम क्यों तिलमिला जाता है ?

(iv) लाड़ली रात को काकी के पास क्यों जाती है ?

(v) जूठी पत्तलें चाटती हुई काकी को देखकर रूपा क्या सोचती है ?

(vi) पूड़ियों की सुगंध से काकी को रोना क्यों आ रहा था ?

**3. अति संक्षिप्त उत्तरमूलक प्रश्न :**

(i) बूढ़ी काकी कौन थी ?

(ii) काकी कब रोने लगती थी ?

(iii) लड़के काकी को किस प्रकार सताते थे ?

(iv) पूरे परिवार में काकी सबसे अधिक प्रेम किससे करती थी ?

(v) घर में उत्सव क्यों मनाया जा रहा था ?

(vi) काकी की संपत्ति से बुद्धिराम को कितनी आय प्राप्त होती थी ?

(vii) लाड़ली काकी के लिए पूड़ियाँ कहाँ छुपाकर रखती है ?

4. **सप्रसंग व्याख्या कीजिए :**

(i) बुढ़ापा तृष्णा रोग का अंतिम समय है, जब संपूर्ण इच्छाएँ एक ही केन्द्र पर आ लगती हैं ।

(ii) आवाज ऐसी कठोर थी कि हृदय और मस्तिष्क की सम्पूर्ण शक्तियाँ, संपूर्ण विचार और संपूर्ण भार उसी ओर आकर्षित हो गए ।

(iii) जैसे थोड़ी-सी वर्षा ठंडक के स्थान पर गर्मी पैदा कर देती है उसी भाँति, इन थोड़ी सी पूड़ियों ने काकी की क्षुधा और इच्छा को और भी उत्तेजित कर दिया था ।

## भाषा - ज्ञान

5. **नीचे लिखे शब्दों से खालीस्थान भरिए :**

(मंसूबे, प्रेम, पश्चात्ताप, मंडली, चौंककर)

(i) मेहमान ............. अभी बैठी हुई थी ।

(ii) लाड़ली को काकी से अत्यन्त ............. था ।

(iii) कई आदमी ............. उठ खड़े हुए ।

(iv) बूढ़ी काकी अपनी कोठरी में जाकर ............. करने लगी ।

(v) उन्होंने मन में तरह-तरह के ............. बाँधे ।

6. **विलोम शब्द लिखिए :**

सुगंध, वृहत्, भय, सुलभ, प्रतिकूल, शोक, दंड, तिरस्कार

7. **पर्यायवाची शब्द लिखिए :**

सुगंध, जमीन, प्रेम, ग्लानि, कोष

8. **निम्नलिखित शब्दों के लिंग परिवर्तन कीजिए :**

स्त्री, काकी, बूढ़ी, कुत्ता, पति, भतीजा, भाई, श्रीमती, लाड़ली

9. **निम्नलिखित वाक्यों में क्रियाविशेषण को रेखाकिंत कीजिए :**

(i) बुद्धिराम को कभी-कभी अपने अत्याचार का खेद होता था ।

(ii) पूड़ियाँ छन-छनकर तैयार होंगी ।

(iii) किसी ने बाहर से आकर कहा ।

(iv) यह विचारकर काकी निराशामय संतोष के साथ लेट गई ।

(v) समीप ही खड़ा हुआ भाट बिरदावली सुना रहा था ।

10. **निम्नलिखित शब्दों को वाक्य में प्रयोग कीजिए :**

कालांतर, अनुराग, कार्यभार, अभिप्राय, अभिलाषा, अपरिमित

**अभ्यास :**

क्या आप जानते हैं ''जिस क्रियाविशेषण से काल अर्थात् समय का बोध हो, उसे कालवाचक क्रियाविशेषण कहते हैं । जैसे - आजकल, पहले, अब, जब, तब,कब, कभी-कभी ।

उदाहरण - जब रोटियों के ही लाले पड़े हैं तब ऐसे भाग्य कहाँ कि भरपेट पूड़ियाँ मिलें ।

प्रस्तुत पाठ से पाँच ऐसे वाक्य छाँटिए जिसमें कालवाचक क्रियाविशेषण हो ।

•

# अपराजिता

*शिवानी*

कभी-कभी अचानक ही विधाता हमें ऐसे विलक्षण व्यक्तित्व से मिला देता है, जिसे देख स्वयं अपने जीवन की रिक्तता बहुत छोटी लगने लगती है । हमें तब लगता है कि भले ही उस अंतर्यामी ने हमें जीवन में कभी अकस्मात् अकारण ही दंडित कर दिया हो किंतु हमारे किसी अंग को हमसे विच्छिन्न कर हमें उससे वंचित तो नहीं किया । फिर भी हममें से कौन ऐसा मानव है जो अपनी विपत्ति के कठिन क्षणों में विधाता को दोषी नहीं ठहराता । मैंने अभी पिछले ही महीने, एक ऐसी अभिशप्त काया देखी है, जिसे विधाता ने कठोरतम दंड दिया है, किंतु उसे वह नतमस्तक आनंदी मुद्रा में झेल रही है, विधाता को कोसकर नहीं ।

उसकी कोठी का अहाता एकदम हमारे बंगले के अहाते से जुड़ा था । अपनी शानदार कोठी में उसे पहली बार कार से उतरते देखा, तो आश्चर्य से देखती ही रह गई । कार का द्वार खुला, एक प्रौढ़ा ने उतरकर पिछली सीट से एक ह्वील चेयर निकाल कर सामने रख दी और भीतर चली गई । दूसरे ही क्षण, धीरे-धीरे बिना किसी सहारे के, कार से एक युवती ने अपने निर्जीव निचले धड़ को बड़ी दक्षता से नीचे उतारा, फिर बैसाखियों से ही ह्वील चेयर तक पहुँच उसमें बैठ गई और बड़ी तटस्थता से उसे स्वयं चलाती कोठी के भीतर चली गई । मैं फिर नित्य नियत समय पर उसका यह विचित्र आवागमन देखती और आश्चर्यचकित रह जाती - ठीक जैसे कोई मशीन बटन खटखटाती अपना काम किए चली जा रही हो ।

धीरे-धीरे मेरा उससे परिचय हुआ । कहानी सुनी तो दंग रह गई । नियति के प्रत्येक कठोर आघात को अति अमानवीय धैर्य एवं साहस से झेलती वह बित्ते-भर की लड़की मुझे किसी देवांगना से कम नहीं लगी । मैं चाहती हूँ कि मेरी पंक्तियों को उदास आँखों वाला वह गोरा, उजले वस्त्रों से सज्जित लखनऊ का मेधावी युवक भी पढ़े, जिसे मैंने कुछ माह पूर्व अपनी बहन के यहाँ देखा था । वह आई.ए.एस. की परीक्षा देने इलाहाबाद गया । लौटते समय किसी स्टेशन पर चाय लेने उतरा कि गाड़ी चल पड़ी । चलती ट्रेन में हाथ के कुल्हड़ सहित चढ़ने के प्रयास में गिरा और पहिये के नीचे हाथ पड़ गया । प्राण तो बच गए, पर दायाँ हाथ चला गया । उसी विच्छिन्न भुजा के साथ-साथ धीरे-धीरे वह मानसिक संतुलन भी खो बैठा । पहले दु:ख भुलाने के लिए नशे की

गोलियाँ खाने लगा और अब नूरमंजिल की शरण गही है । केवल एक हाथ खोकर ही उसने हथियार डाल दिए । इधर चंद्रा, जिसका निचला धड़ है निष्प्राण मांसपिंड मात्र, सदा उत्फुल्ल है, चेहरे पर विषाद की एक रेखा भी नहीं, बुद्धिदीप्त आँखों में अदम्य उत्साह, प्रतिपल-प्रतिक्षण भरपूर जीने की उत्कट जिजीविषा और फिर कैसी-कैसी महत्त्वाकांक्षाएँ ।

''मैडम, आप लखनऊ जाते ही क्या मुझे ड्रग रिसर्च इंस्टिट्यूट से पूछकर यह बताएँगी कि क्या वहाँ आने पर मेरे विषय माइक्रोबायोलाजी से संबधित कुछ सामग्री मिल सकेगी ?''

''मैडम आप कह रही थीं कि आपके दामाद हवाई के ईस्ट वेस्ट सेंटर में हैं । क्या आप उन्हें मेरा बायोडाटा भेजकर पूछ सकेंगी कि मुझे वहाँ की कोई फैलोशिप मिल सकती है ?''

यहाँ कभी सामान्य-सी हड्डी टूटने पर या पैर में मोच आ जाने पर ही प्राण ऐसे कंठगत हो जाते हैं जैसे विपत्ति का आकाश ही सिर पर टूट पड़ा है । और इधर यह लड़की है कि पूरा निचला धड़ सुन्न है, फिर भी बोटी-बोटी फड़क रही है । ऊँची नौकरी की एक ही नीरस करवट में उसकी प्रतिभा निरंतर डूबती जा रही है । आजकल वह आई.आई.टी. मद्रास में काम कर रही है ।

जन्म के अठारहवें महीने में ही जिसकी गरदन से नीचे का पूरा शरीर पोलियो ने निर्जीव कर दिया हो, उसने किस अद्‌भुत साहस से नियति को अँगूठा दिखा अपनी थीसिस पर डॉक्टरेट ली होगी ।

''मैडम, मैं चाहती हूँ कि कोई मुझे सामान्य-सा सहरा भी न दे । आप तो देखती है, मेरी माँ को मेरी कार चलानी पड़ती हैं । मैंने इसीसे एक ऐसी कार का नक्शा बनाकर दिया है, जिससे मैं अपने पैरों के निर्जीव अस्तित्व को भी सजीव बना दूँगी । यह देखिए, मैंने अपनी प्रयोगशाला में अपना संचालन कैसा सुगम बना लिया है । मैं अपना सारा काम अब स्वयं निबटा लेती हूँ ।''

उसने मुझे तस्वीरें दिखाईं । समस्त सामग्री उसके हाथों की पहुँच तक ऐसे धरी थीं कि निचला धड़ ऊपर उठाए बिना ही वह मनचाही सामग्री मेज पर उतार सकती थी । किंतु उसकी आज की इस पटुता के पीछे है एक सुदीर्घ कठिन अभ्यास की यातनाप्रद भूमिका है। स्वयं डॉ चंद्रा के प्रोफेसर के शब्दों में, ''हमने आज तक दो व्यक्तियों द्वारा सम्मिलित रूप में नोबेल पुरस्कार पाने के ही विषय में सुना था, किंतु आज हम शायद पहली

बार इस पी-एच.डी. के विषय में भी कह सकते हैं । देखा जाए तो यह डॉक्टरेट भी संयुक्त रूप से मिलनी चाहिए डा. चंद्रा और उसकी अद्‌भुत साहसी जननी श्रीमती टी. सुब्रह्मण्यम् को । पच्चीस वर्ष तक इस सहिष्णु महिला ने पुत्री के साथ-साथ कैसी कठिन साधना की और इस साधना का सुखद अंत हुआ १९७६ में, जब चंद्रा को डॉक्टरेट मिली माइक्रोबायोलाजी में । अपंग स्त्री-पुरुषों में, इस विषय में डाक्टरेट पाने वाली डा. चंद्रा प्रथम भारतीय हैं ।

जब इसे सामान्य ज्वर के चौथे दिन पक्षाघात हुआ तो गरदन के नीचे इसका सर्वांग अचल हो गया । भयभीत होकर हमने इसे बड़े-से-बड़े डॉक्टर को दिखाया । सबने एक स्वर में कहा, ''आप व्यर्थ पैसा बरबाद मत कीजिए । आपकी पुत्री जीवनभर केवल गरदन ही हिला पाएगी । संसार की कोई भी शक्ति इसे रोगमुक्त नहीं कर सकती ।'' सहसा श्रीमती सुब्रह्मण्यम् का कंठ अवरुद्ध हो गया, फिर वे धीमे स्वर में मुझे बताने लगीं, ''मेरे गर्भ में तब इसका भाई आ गया था । इसके भयानक अभिशाप के बावजूद मैंने कभी विधाता से यह नहीं कहा कि प्रभो, इसे उठा लो, इसके इस जीवन से तो मौत भली है । मैं निरंतर इसके जीवन की भीख ही माँगती रही । केवल सिर हिलाकर यह इधर-उधर देख-भर सकती थी । न हाथों में गति थी, न पैरों में, फिर भी मैंने आशा नहीं छोड़ी । एक आर्थोपैडिक सर्जन की बड़ी ख्याति सुनी थी, वहीं ले गई ।''

एक वर्ष तक कष्टसाध्य उपचार चला और एक दिन स्वयं ही इसके जरूरी धड़ में गति आ गई, हाथ हिलने लगे, नन्ही उँगलियाँ मुझे बुलाने लगीं । निर्जीव धड़ को मैंने सहारा देकर बैठना सिखा दिया । पाँच वर्ष की हुई, तो मैं ही इसका स्कूल बनी । मेधावी पुत्री की विलक्षण बुद्धि ने फिर मुझे चमत्कृत कर दिया, सरस्वती स्वयं ही जैसे आकर जिह्वाग्र पर बैठ गई थी । बेंगलूरु के प्रसिद्ध माउंट कारमेल में उसे प्रवेश दिलाने में मुझे कांवेंट द्वार पर लगभग धरना ही देना पड़ा ।

''नहीं मिसेज सुब्रह्मण्यम्'', मदर ने कहा, ''हमें आपसे पूरी सहानुभूति है, पर आप ही सोचिए आपकी पुत्री की ह्वील चेयर लेकर कौन पूरे क्लास रूम में घुमाता फिरेगा ?''

''आप चिन्ता न करें मदर, मैं हमेशा उसके साथ रहूँगी ।'' और फिर पूरी कक्षाओं में अपंग पुत्री की कुर्सी की परिक्रमा मैं स्वयं कराती । वे पीरियड दर पीरियड उसके पीछे खड़ी रहतीं । प्रत्येक परीक्षा में सर्वोच्च स्थान प्राप्त कर चंद्रा ने स्वर्ण पदक जीते । बी.एस-सी. किया, प्राणिशास्त्र में, एम.एस-सी. में प्रथम स्थान प्राप्त किया और बेंगलूरु के प्रख्यात इंस्टिट्यूट ऑफ सायंस में अपने लिए स्पेशल सीट अर्जित की । केवल अपनी निष्ठा, धैर्य एवं साहस से पाँच वर्ष तक प्रोफ़ेसर सेठना के निर्देशन में शोधकार्य किया । इसी बीच माता-पिता ने पेंसिलवानिया से ह्वील चेयर मँगवा दी जिसे डॉ. चंद्रा स्वयं चलाती हुई पूरी प्रयोगशाला में बड़ी सुगमता से घूम सकती

थी । लैदर जैकेट के कठिन जिरह-बख्तर में कसी उस हँसमुख लड़की को देख मुझे युद्ध-क्षेत्र में डटे राणा सांगा का ही स्मरण हो आता था । क्षत-विक्षत शरीर में घावों के असंख्य किन्तु आभामंडित भव्य मुद्रा ।

''मैडम, आप तो लिखती हैं, मेरी ये कविताएँ देखिए । कुछ दम है क्या इनमें ?''

मैंने जब वे कविताएँ देखीं, तो आँखें भर आईं । जो उदासी उसके चेहरे पर कभी नहीं आने पाई, वह अनजाने ही उसकी कविता में छलक आई थी । फिर उसने अपनी कढ़ाई-बुनाई के सुंदर नमूने दिखाए । लड़की के दोनों हाथ जैसे दोनों पैरों का भी काम करते हों, निरंतर मशीनी खटखट में चलते रहते हैं । जर्मन भाषा में माता-पुत्री दोनों ने मैक्समूलर भवन से विशेष योग्यता सहित परीक्षा उत्तीर्ण की । गर्ल गाइड में राष्ट्रपति का स्वर्ण कार्ड पाने वाली वह प्रथम अपंग बालिका थी । यही नहीं, भारतीय एवं पाश्चात्य संगीत दोनों में उसकी समान रुचि है । अपने अलबम को अपनी निर्जीव टाँगों पर रख वह मुझे अपने चित्र दिखाने लगी । पुरस्कार ग्रहण करती डॉ. चंद्रा, प्रधानमंत्री के साथ मुसकराती खड़ी डॉ. चंद्रा, राष्ट्रपति को सलामी देती बालिका चंद्रा और ह्वील चेयर में लैदर जैकेट में जकड़ी बैसाखियों का सहारा लेकर अपनी डाक्टरेट ग्रहण करती डा. चंद्रा ।

''मेरी बड़ी इच्छा थी, मैं डॉक्टर बनूँ । मैं अपंग डॉ. मेरी वर्गीज के सफल जीवन की कहानी पढ़ चुकी थी । परीक्षा में सर्वोच्च स्थान प्राप्त करने पर भी मुझे मेडिकल में प्रवेश नहीं मिला । कहा गया मेरा निचला धड़ निर्जीव है, मैं एक सफल शल्य-चिकित्सक नहीं बन पाऊँगी ।'' किन्तु डॉ. चंद्रा के प्रोफेसर के शब्दों में, ''मुझे यह कहने में रंचमात्र भी हिचकिचाहट नहीं होती कि डॉ. चंद्रा ने विज्ञान की प्रगति में महान् योगदान दिया है । चिकित्सा ने जो खोया है, वह विज्ञान ने पाया ।''

चंद्रा के अलबम के अंतिम पृष्ठ में है उसकी जननी का बड़ा-सा चित्र जिसमें वे जे.सी. बेंगलूरु द्वारा प्रदत्त एक विशिष्ट पुरस्कार ग्रहण कर रही हैं - 'वीर जननी' का पुरस्कार । बहुत बड़ी-बड़ी उदास आँखें, जिनमें स्वयं माँ की व्यथा भी है और पुत्री की भी, अपने सारे सुख त्यागकर नित्य छाया बनी पुत्री की पहिया-लगी कुर्सी के पीछे चक्र-सी घूमती जननी की व्यथा, नाक के दोनों ओर हीरे की दो जगमगाती लौंगें, अधरों पर विजय का उल्लास, जूड़े में पुष्पवेणी । मेरे कानों में उस अद्भुत साहसी जननी शारदा सुब्रह्मण्यम् के शब्द अभी भी जैसे गूँज रहे हैं, ''ईश्वर सब द्वार एक साथ बंद नहीं करता । यदि एक द्वार बन्द करता भी है, तो दूसरा द्वार खोल भी देता है ।''

*विचारबोध :- अपराजिता एक ऐसी दिव्यांग युवती की संघर्ष की कहानी है जो अपनी शारीरिक अक्षमता के बावजूद असीम धैर्य और प्रबल साहस के साथ आगे बढ़कर जिन्दगी को सफल बनाती है । साहित्य जगत की प्रमुख कहानीकार शिवानी हमें यह संदेश देती हैं कि यदि व्यक्ति के मन में प्रबल इच्छाशक्ति हो तो विकलांगता दीवार बनकर बाधक नहीं हो सकती ।*

## - शब्दार्थ -

विलक्षण - असाधारण, विशेष लक्षण या गुणों से युक्त । अंतर्यामी - मन की बात जानने वाला, ईश्वर । काया - शरीर । उत्कट - तीव्र । अवस्था - हालत । तटस्थता - किसी का पक्ष न लेना । आवागमन-आना-जाना । जिरह - बख्तर, कवच । विषाद - अत्यधिक दु:ख । देवांगना - अप्सरा । जिजीविषा - जीने की इच्छा । पक्षाघात - लकवा । पी-एच्.डी. - एक उपाधि ।

## प्रश्न और अभ्यास

**1. संक्षिप्त उत्तरमूलक प्रश्न :**

(i) डॉ. चंद्रा को पहली बार देखकर लेखिका के मन में क्या-क्या भाव जाग्रत हुए ?

(ii) लखनऊ के युवक की मानसिकता डॉ. चंद्रा से कैसे भिन्न थी ? उसे चंद्रा से किस तरह की प्रेरणा लेनी चाहिए ?

(iii) अपंग चंद्रा को प्रतिष्ठित कराने में उसकी जननी का क्या योगदान रहा ?

(iv) डॉ. चंद्रा और दूसरे लोगों में आप क्या अन्तर देखते हैं ?

(v) लेखिका को राणा सांगा का स्मरण क्यों हुआ ?

(vi) श्रीमती सुब्रह्मण्यम् को 'वीर जननी' का पुरस्कार क्यों दिया गया ?

### भाषा-ज्ञान

**2. अर्थ भेद बताइए :**

(i) अवस्था-आयु

(ii) उत्साह-साहस

(iii) पीड़ा-दु:ख

(iv) स्नेह-सहानुभूति

(v) महाशय - महोदय

3. **निम्नलिखित शब्दों के लिंग परिवर्तन कीजिए :**

युवक, बहन, लड़की, श्रीमती, माता

4. **विपरीत शब्द लिखिए :**

नित्य, समय, मानवीय, भीतर, विषाद, सुगम, कठिन, पीछे, जीवन, आशा, निर्जीव

5. **निम्नलिखित क्रियाओं के प्रेरणार्थक रूप लिखिए :**

देखना, बैठना, बोलना, उठना, जीतना, सुनना

6. **क्रिया विशेषण शब्दों को रेखांकित कीजिए :**

(i) मैं हमेशा उसके साथ रहूँगी ।

(ii) फिर उसने अपनी कढ़ाई-बुनाई के सुन्दर नमूने दिखाए ।

(iii) धीरे-धीरे उससे मेरा परिचय हुआ ।

(iv) मैं फिर नित्य नियत समय पर उसका यह विचित्र आगमन देखती ।

7. **अगर आपके पास-पड़ोस में कोई विकलांग है तो उसकी सहायता कीजिए ।**

●

# हार की जीत

*सुदर्शन*

माँ को अपने बेटे, साहूकार को अपने देनदार और किसान को अपने लहलहाते खेत को देखकर जो आनंद आता है, वही आनंद बाबा भारती को अपना घोड़ा देखकर आता था । भगवद्-भजन से जो समय

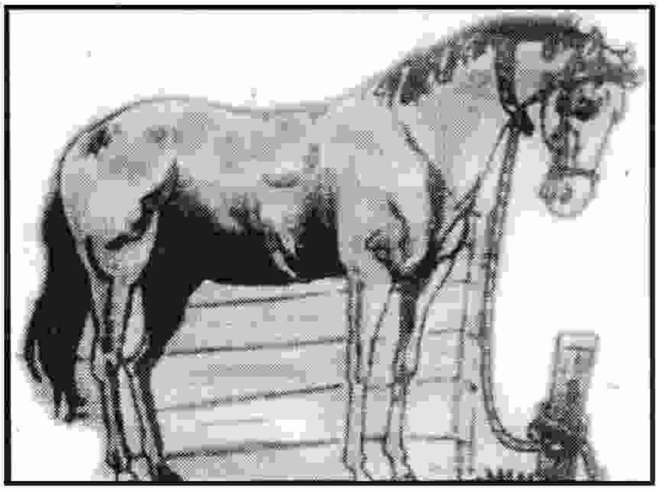

बचता, वह घोड़े को अर्पण हो जाता । वह घोड़ा बहुत सुंदर और बलवान था, इसके जोड़ का घोड़ा सारे इलाके में न था । बाबा भारती उसे सुलतान कहकर पुकारते, अपने हाथ से खरहरा करते, खुद दाना खिलाते और देख-देखकर प्रसन्न होते थे । ऐसी लगन, ऐसे प्यार, ऐसे स्नेह से कोई सच्चा प्रेमी अपने प्यार को भी न चाहता होगा । उन्होंने अपना सब कुछ छोड़ दिया था - रुपया, माल-असबाब, ज़मीन, यहाँ तक कि उन्हें नागरिक जीवन से घृणा थी । अब गाँव से बाहर एक छोटे मंदिर में रहते और भगवान का भजन करते थे । परंतु 'सुलतान' से बिछुड़ने की वेदना उनके लिए असह्य थी । मैं इसके बिना नहीं रह सकूँगा-उन्हें ऐसी भ्रांति-सी हो गई थी । वे उसकी चाल पर लट्टू थे । कहते, ऐसे चलता है, जैसे मोर घन-घटा को देखकर नाच रहा हो । गाँव के लोग इस प्रेम को देखकर चकित थे । जब तक संध्या समय 'सुलतान' पर चढ़कर चौदह-पंद्रह किलोमीटर का चक्कर न लगा लेते, उन्हें चैन न आता ।

खड्ग सिंह इस इलाके का प्रसिद्ध डाकू था । लोग उसका नाम सुनकर काँपते थे । होते-होते 'सुलतान' की कीर्ति उसके कानों तक पहुँची । उसका हृदय उसे देखने के लिए अधीर हो उठा । वह एक दिन, दोपहर के समय बाबा भारती के पास पहुँचा और 'दंडवत्' करके बैठ गया ।

बाबा भारती ने पूछा - ''खड्ग सिंह, क्या हाल है ? कहो इधर कैसे आ गए ?''

''सुलतान की चाह खींच लाई,'' खड्ग सिंह ने सिर झुकाकर उत्तर दिया ।

''विचित्र जानवर है । देखोगे तो प्रसन्न हो जाओगे ।''

''मैंने भी बड़ी प्रशंसा सुनी है ।''

''उसकी चाल तुम्हारा मन मोह लेगी ।''

''कहते हैं, देखने में भी बड़ा सुंदर है ।''

''क्या कहना ! जो उसे एक बार देख लेता है उसके हृदय पर उसकी छवि अंकित हो जाती है ।''

''बहुत दिनों से अभिलाषा थी; आज उपस्थित हो सका हूँ ।''

बाबा और खड्‌ग सिंह दोनों अस्तबल में पहुँचे । बाबा ने घोड़ा दिखाया घमंड से, खड्‌ग सिंह ने घोड़ा देखा आश्चर्य से । उसने सहस्रों घोड़े देखे थे, परंतु ऐसा बाँका घोड़ा उसकी आँखों से कभी न गुज़रा था । सोचने लगा, भाग्य की बात है । ऐसा घोड़ा खड्‌ग सिंह के पास होना चाहिए था, इस साधु को ऐसी चीज़ों से क्या लाभ ? हृदय में हलचल होने लगी । बालकों की-सी अधीरता से बोला- ''परंतु बाबाजी, इसकी चाल न देखी, तो क्या देखा !''

बाबाजी भी मनुष्य थे । अपनी वस्तु की प्रशंसा दूसरे के मुख से सुनने के लिए उनका हृदय भी अधीर हो गया । घोड़े को खोलकर बाहर लाये और उसकी पीठ पर हाथ फेरने लगे । एकाएक उचककर सवार हो गये । घोड़ा वायु-वेग से उड़ने लगा । उसकी चाल देखकर खड्‌ग सिंह के हृदय पर साँप लोट गया । वह डाकू था; और जो वस्तु उसे पसंद आ जाए, उस पर अपना अधिकार समझता था । जाते-जाते उसने कहा, ''बाबाजी, मैं यह घोड़ा आपके पास न रहने दूँगा ।''

बाबा भारती डर गये । अब उन्हें रात को नींद नहीं आती थी । सारी रात अस्तबल की रखवाली में कटने लगी । प्रतिक्षण खड्‌ग सिंह का भय बना रहता । परंतु कई मास बीत गये और वह न आया । यहाँ तक कि बाबा भारती कुछ-कुछ लापरवाह हे गये ।

संध्या का समय था । बाबा भारती सुलतान की पीठ पर सवार होकर घूमने जा रहे थे । इस समय उनकी आँखों में चमक थी, मुख पर प्रसन्नता । मन में फूले न समाते थे ।

सहसा एक ओर से आवाज़ आई, ''ओ बाबा ! इस कँगले की भी बात सुनते जाना ।''

आवाज़ में करुणा थी । बाबा ने घोड़े को थाम लिया । देखा, एक अपाहिज वृक्ष की छाया में पड़ा कराह रहा है । बोले, ''क्यों, तुम्हें क्या कष्ट है ?'' अपाहिज ने हाथ जोड़कर कहा, ''बाबा, मैं दुखी हूँ । मुझ पर दया करो । रामबाग यहाँ से चार किलोमीटर है, मुझे वहाँ जाना है । घोड़े पर चढ़ा लो, परमात्मा तुम्हारा भला करेगा !''

''वहाँ तुम्हारा कौन है ?''

''दुर्गादत्त वैद्य का नाम आपने सुना होगा । मैं उनका सौतेला भाई हूँ ।''

बाबा भारती ने घोड़े से उतर कर अपाहिज को घोड़े पर सवार किया और स्वयं उसकी लगाम पकड़ कर धीरे-धीरे चलने लगे ।

सहसा उन्हें एक झटका-सा लगा और लगाम हाथ से छूट गई । उनके आश्चर्य का ठिकाना न रहा उन्होंने देखा कि अपाहिज घोड़े की पीठ पर तनकर बैठा है और घोड़े को दौड़ाए लिये जा रहा है । उनके मुख से भय, विस्मय और निराशा से चीख निकल गई । यह अपाहिज खड्‌ग सिंह डाकू था ।

बाबा भारती कुछ देर चुप रहे और उसके पश्चात् कुछ निश्चय करके पूरे बल से चिल्लाकर बोले, ''ज़रा ठहर जाओ ।''

खड्‌ग सिंह ने घोड़ा रोक लिया और कहा, ''बाबाजी, यह घोड़ा अब न दूँगा ।''

''परंतु एक बात सुनते जाओ ।''

खड्‌ग सिंह ठहर गया । बाबा भारती ने निकट जाकर उसकी ओर ऐसी आँखों से देखा, जैसे बकरा कसाई की ओर देखता है और कहा, ''यह घोड़ा तुम्हारा हो चुका । मैं तुमसे इसे वापस करने के लिए न कहूँगा । परंतु खड्‌ग सिंह ! केवल एक प्रार्थना करता हूँ, उसे अस्वीकार न करना, नहीं तो मेरा दिल टूट जाएगा ।''

''बाबाजी, आज्ञा दीजिए । मैं आपका दास हूँ, केवल यह घोड़ा अब न दूँगा ।''

''अब घोड़े का नाम न लो, मैं तुमसे इसके विषय में कुछ न कहूँगा । मेरी प्रार्थना केवल यह है कि इस घटना को किसी के सामने प्रकट न करना । लोगों को यदि इस घटना का पता लग गया, तो वे किसी गरीब पर विश्वास न करेंगे ।''

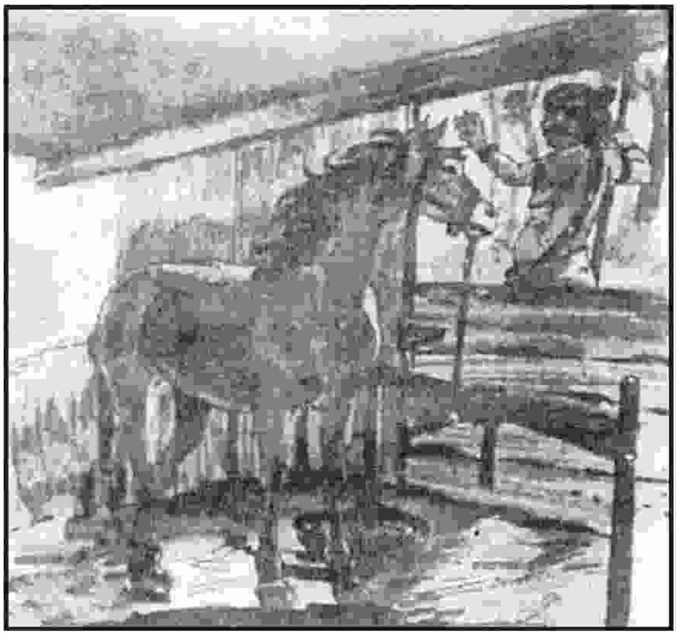

यह कहते-कहते उन्होंने सुलतान की ओर से इस तरह मुँह मोड़ लिया, जैसे उनका उससे कभी कोई संबंध ही न था । बाबा भारती चले गये, परंतु उनके शब्द खड्‌ग सिंह के कानों में उसी प्रकार गूँज रहे थे । सोचता था, कैसे ऊँचे विचार हैं ! कैसा पवित्र भाव है ! उन्हें इस घोड़े से प्रेम था । इसे देखकर उनका मुँह फूल की नाईं खिल जाता था । इसकी रखवाली में वे कई रातें सोये तक नहीं । परंतु आज उनके मुख पर दुख की रेखा तक न दिखाई पड़ती थी । केवल यह ध्यान था कि कहीं लोग गरीबों पर विश्वास करना न छोड़ दें । ऐसा मनुष्य मनुष्य नहीं, देवता है ।

रात्रि के अंधकार में खड्‌ग सिंह बाबा भारती के मंदिर में पहुँचा । चारों ओर सन्नाटा था । आकाश में तारे टिमटिमा रहे थे । थोड़ी दूर पर गाँव के कुत्ते भौंक रहे थे । मंदिर के अंदर कोई शब्द न सुनाई देता था । खड्‌ग सिंह 'सुलतान' की बाग पकड़े हुए था। वह धीरे-धीरे अस्तबल के फाटक पर पहुँचा । फाटक किसी वियोगी की आँखों की तरह खुला था । किसी समय वहाँ बाबा भारती स्वयं लाठी लेकर पहरा देते थे; परंतु आज उन्हें किसी चोरी, किसी डाके का भय न था । हानि ने उन्हें हानि की ओर से बेपरवाह कर दिया था । खड्‌ग सिंह ने आगे बढ़कर 'सुलतान' को उसके स्थान पर बाँध दिया और बाहर निकलकर सावधानी से फाटक बंद कर दिया । इस समय उसकी आँखों में नेकी के आँसू थे ।

रात्रि का चौथा पहर समाप्त होते ही बाबा भारती ने अपनी कुटिया से निकलकर जल से स्नान किया । उसके पश्चात उनके पाँव अस्तबल की ओर मुड़े । परंतु फाटक पर पहुँचकर उनको अपनी भूल प्रतीत हुई । वे वहीं रुक गए ।

घोड़े ने स्वाभाविक मेधा से ही अपने स्वामी के पाँवों की चाप को पहचान लिया । वह जोर से हिनहिनाया ।

बाबा भारती दौड़ते हुए अंदर घुसे और अपने घोड़े के गले से लिपटकर इस प्रकार रोने लगे, जैसे बिछुड़ा हुआ पिता चिरकाल के पश्चात पुत्र से मिलकर रोता है । बार-बार उसकी पीठ पर हाथ फेरते, बार-बार उसके मुँह पर थकपियाँ देते और कहते, ''अब कोई गरीबों की सहायता से मुँह नहीं मोड़ेगा ।''

थोड़ी देर बाद जब वे अस्तबल से बाहर निकले, तो उनकी आँखों से आँसू बह रहे थे । वे आँसू उसी भूमि पर ठीक उसी जगह पर गिर रहे थे, जहाँ बाहर निकलने के बाद खड्‌ग सिंह खड़ा होकर रोया था। दोनों के आँसुओं का उसी भूमि की मिट्टी पर परस्पर मिलाप हो गया ।

***विचारबोध :*** *'हार की जीत' कहानी डाकू के हृदय में देवता के निवास की घोषणा करती है । खूंखार डाकू खड्‌ग सिंह की असद्‌वृत्ति को सद्‌वृत्ति में परिवर्तित करने में बाबा भारती की उक्ति प्रभावशाली और भावोद्दीपक है । अंत में डाकू की आत्मा जाग उठती है । प्रस्तुत कहानी यथार्थ से आदर्श की ओर अग्रसर होते हुए समाज सुधार और राष्ट्रहित के लिए अनमोल संदेश देती है ।*

## - शब्दार्थ -

खरहरा - एक दँतेदार कंघी जिससे घोड़ों के रोएँ साफ किए जाते हैं । असहाय - जिसका कोई सहारा न हो । चैन - शांति । छवि - सुन्दरता । बाँका - सुन्दर । लापरवाह - जो सावधान न हो । कँगले - दीन, दरिद्र । कराह - दर्द के कारण मुख से निकलने वाली आह या चीख । सन्नाटा - नीरवता । वियोग - बिछड़ा हुआ । हानि - नुकसान । चाप - जमीन पर पैर पड़ने का शब्द । मिलाप - मिलने का भाव । कीर्त्ति - यश, ख्याति । एकाएक - सहसा । अधीर - व्याकुल । करुणा - दया । अपाहिज - विकलांग । अभिलाषा - इच्छा । नेकी - भलाई ।

## प्रश्न और अभ्यास

**1. संक्षिप्त उत्तरमूलक प्रश्न :**

(i) डाकू खड्ग सिंह कैसे सुलतान को अपने कब्जे में ले लेता है ?

(ii) डाकू खड्ग सिंह का हृदय परिवर्तन क्यों और कैसे हुआ ?

(iii) हार कर भी कौन जीता और जीतकर भी कौन हारा ? इस पर अपने विचार युक्तिपूर्वक लिखिए ।

(iv) संसार त्यागी बाबा भारती का सुलतान के प्रति विशेष लगाव और प्रेम क्यों था ?

(v) "मैं आपके पास यह घोड़ा न रहने दूँगा"- खड्ग सिंह की यह उक्ति सुनकर बाबा भारती की क्या दशा हुई ?

(vi) घोड़ा हथियाने के बाद जाते हुए खड्ग सिंह को रोक कर बाबा भारती ने क्या कहा ? बाबा भारती की बात का खड्ग सिंह पर क्या प्रभाव पड़ा ?

## भाषा - ज्ञान

**2. (i) निम्नलिखित शब्दों के दो-दो पर्यायवाची शब्द लिखिए :**

पुत्र, साँप, घोड़ा, अपाहिज, प्रयोजन, गरीब, मिथ्या

**(ii) निम्नलिखित शब्दों के विलोम रूप लिखिए :**

प्रशंसा, पसंद, शाम, कंगाल, आज, बलवान, सच्चा, प्रेमा

(iii) **निम्नलिखित शब्दों के पूर्व 'अ' लगाकर विलोम शब्द बनाइए :**
सावधान, प्रसन्न, स्वीकार, विश्वास, स्पष्ट, शांत, सह्य, सुंदर, स्वाभाविक, पवित्र, प्रसिद्ध

(iv) **निम्नलिखित क्रियाओं के प्रेरणार्थक रूप लिखिए :**
गिरना, खाना, दौड़ना, चढ़ना, सोना, हँसना

**3. किसने किससे कहा :**

(i) "विचित्र जानवर है । देखोगे तो प्रसन्न हो जाओगे ।"

(ii) "बाबा जी, मैं यह घोड़ा आपके पास न रहने दूँगा ।"

(iii) "इस घटना को किसी के सामने प्रकट न करना । लोगों को इस घटना का पता चल गया तो वे किसी गरीब पर विश्वास न करेंगे ।"

(iv) "कैसे ऊँचे विचार हैं, कैसे पवित्र भाव हैं ।"

(v) "अब कोई गरीबों की सहायता से मुँह नहीं मोड़ेगा ।"

**4.** डाकू अंगुलिमाल की कहानी अपने शिक्षक से सुनिए और समझने का प्रयास कीजिए कि इस कहानी के साथ उस कहानी की क्या समानता है ?

●

# तीन दोस्त

मोहन राकेश

सुनहरा मुरगा अपनी तरह का एक ही था । इसलिए बहुत से कसाइयों की नजर उस पर थी । काला बंदर भी अपनी तरह का एक ही था । इसलिए बहुत से चिड़ियाघर के लोग उसे पकड़ पाने की कोशिश में थे ।

लाल अमरूद के पेड़ पर पूरे-पूरे लाल अमरूद उगते थे । उस जैसा भी कोई दूसरा पेड़ वहाँ नहीं था । इसलिए फलवालों से लेकर स्कूल के बच्चों तक को उसके अमरूदों का लालच था ।

पर उन तीनों ने मिलकर एक ऐसी योजना बना रखी थी कि कोई उनका कुछ नहीं बिगाड़ पाता था ।

जब कोई कसाई मुरगे को पकड़ने के लिए आता, तो पेड़ उसे लुभाने के लिए दो-तीन पके अमरूद नीचे टपका देता । उन अमरूदों की खुशबू ही ऐसी थी कि कसाई पहले अमरूद चखने में लग जाता । उस बीच बंदर दो-एक कच्चे अमरूद तोड़कर इस तरह उसके सिर का निशाना बनाता कि कसाई अपना होश भूल जाता ।

आखिर जब वह ऊपर की तरफ देखता, तो बंदर मुरगे को पीठ पर बिठाए मुँह बिचकाता नजर आता । वह हारकर वहाँ से चलने लगता तो उसे पता चलता कि उसका थैला भी गायब है । थैला उसके औजारों समेत पेड़ की सबसे ऊँची शाखों पर लटक रहा होता । साथ ही पेड़ साँय-साँय करता उसकी हालत का मजा ले रहा होता ।

जब चिड़ियाघर के लोग बंदर को घेरने के लिए आते, तब पेड़ उसे अपनी पत्तियों और शाखों में छिपा लेता । किसी की उस पर नजर ही न पड़ती । नीचे मुरगा जोर-जोर से पंख फड़फड़ा कर इतनी धूल उड़ा देता कि उनके लिए वहाँ खड़े होकर साँस लेना मुश्किल हो जाता । आखिर वे वहाँ से हटने लगते तो पेड़ अपने सबसे पिलपिले अमरूद नीचे टपका कर उन्हें फिसला देता । वे किसी तरह गिरते पड़ते वहाँ से लौटते तो उन्हें पता चलता कि उनका

बंदर पकड़ने का जाल मुरगे की चोंच में है और मुरगा पेड़ की सबसे ऊँची टहनी पर बैठा है । थोड़ी दूर जाने पर उन्हें पीछे से मुरगे की बांग सुनाई दे जाती - 'कुक्कड़ूँ कूँ !' लगता, जैसे मुरगा उनका मज़ाक उड़ा रहा हो । इसी तरह जब फलवाले या स्कूल के बच्चे पेड़ से अमरूद तोड़ने के लिए आते, तब पहले उनका सामना बंदर से होता । बंदर इस तरह उनके इर्द-गिर्द चक्कर काटता और उन्हें डराता-धमकाता कि उनका पेड़ के नज़दीक जाने का हौसला ही न पड़ता । अगर उन लोगों के पास अपना कोई खाने-पीने का सामान होता, तो उसे भी वह चट कर जाता । मौका लगने पर किसी के बाल नोच देता । किसी के कान उमेठ देता । फिर भी वे लोग पेड़ के नज़दीक पहुँच जाते, तो वहाँ उन्हें मुरगा बेजान-सा तड़पता नज़र आता । मुरगे की चोंच एक अमरूद में होती, जैसे कि अमरूद खाकर ही उसकी यह हालत हुई हो । लोग बीमारी के डर से अमरूद तोड़ने का इरादा छोड़कर वहाँ से लौट पड़ते । लौटते हुए यह और पता चलता कि अमरूदों के लिए जो टोकरी साथ लेकर आए थे, वह बंदर के सिर पर है और बंदर एक मसखरे की तरह आवाज़ें पैदा करता पेड़ की सबसे ऊँची डाल पर बैठ टाँगें हिला रहा है ।

इस तरह वे मज़े में दिन काट रहे थे कि एक दिन खूब घनी घटा घिर आई । पहले मूसलाधार वर्षा हुई, फिर ओले पड़ने लगे । जब उन तीनों ने साथ मिलकर अपना-अपना बचाव करने की योजना बनाई थी, तब इस दिन की बात नहीं सोची थी । पेड़ अपनी जगह परेशान था । ओलों से उसके सब अमरूद नष्ट हुए जा रहे थे । बंदर का अपनी जगह भीग-भीग कर बुरा हाल था । ऊपर से ओलों की मार उसकी जान ले रही थी । मुरगे की अपनी जगह खस्ता हालत थी । वर्षा से भारी होकर उसके पंख ही नहीं खुल पा रहे थे । ऊपर से ओलों की झड़ी उस पर गोलियाँ दाग रही थी ।

ये दोनों छुटकू किसी काम के नहीं, पेड़ ने झल्लाकर सोचा, ''मैंने आज तक हर मुसीबत में इनकी जान बचाई है, पर आज मुझ पर इतनी बड़ी मुसीबत आई है, तो इन्हें अपनी-अपनी पड़ी है । एक बार मेरा हाल तक नहीं पूछा, मदद करना तो दूर रहा ।''

''मैंने भी क्या साथी चुन रखे हैं ?'' बंदर ने ठंड से काँपते हुए अपने से कहा । ''एक पेड़ है जो जमीन में गड़ा होने की वजह से सुरक्षित है । दूसरा पक्षी है जिसे आकाश में उड़ सकने के कारण कोई खतरा नहीं है । आज तक मुझसे तो ये अपनी रखवाली कराते रहे हैं । पर आज मुझ पर इतनी सख्त मुसीबत पड़ी है, तो दोनों चुपचाप ताकते हुए मज़ा ले रहे हैं, कर कुछ नहीं रहे ।''

''बंदर का और पेड़ का तो हमेशा का साथ है,'' मुरगे ने त्योरी डाले हुए मन में कुड़कुड़ाना शुरू किया । ''मैं क्यों बेवकूफ़ बन कर इन देनों के बीच फँसा हूँ ? आज तक मैं तो इनकी हर मुसीबत को अपनी मुसीबत समझता आया हूँ । पर आज जब मेरी जान पर बनी है, तब दोनों को जैसे मेरा पता ही नहीं है । मज़े से बारिश में नहा रहे हैं और मेरी बात तक नहीं पूछ रहे ।''

तीनों इतने नाराज़ थे कि आपस में उन्होंने बात तक नहीं की । पेड़ चुपचाप अपने अमरूद नष्ट होते देखता रहा । बंदर चुपचाप ठिठुरता रहा । मुरगा चुपचाप कुढ़ता रहा ।

थोड़ी देर में ओले थम गए । बारिश भी रुक गई । पर तीनों में फिर भी कोई बात नहीं हुई । पेड़ को चिढ़ हो रही थी कि उसके इतनी बारिश झेलने के बाद भी बंदर उस पर बोझ बनकर लटका है । मुरगा उसके तने से अपने पंख खुजला रहा है । बंदर को गुस्सा आ रहा था कि उसे तो ठंड के मारे सन्निपात हुआ जा रहा है और पेड़ है कि अब भी उस पर बूँदें टपका रहा है । मुरगा है कि अब भी पंखों से छींटें ऊपर उड़ा रहा है । मुरगे को कुढ़न हो रही थी कि पानी की मार से उसका तो जिस्म जवाब दे रहा है और पेड़ ने ज़रा-सी भी ज़मीन उसके लिए सूखी बचा कर नहीं रखी । बंदर से इतना तक नहीं हो रहा कि उसे वहाँ से किसी और सुरक्षित जगह पर ही पहुँचाया जाए ।

अगले रोज तक पेड़ की टहनियाँ सूख गईं । बंदर का जिस्म सूख गया । मुरगे के पंख सूख गए । मगर तीनों ने आपस में फिर भी कोई बात नहीं की । पेड़ सोचता रहा, ''अब आए इन दोनों पर कोई मुसीबत, तो देखूँगा अपने को कैसे बचाते हैं । मैं अब इनकी कोई मदद नहीं करने का ।'' बंदर भी यही सोचता रहा, मुरगा भी ।

उसी रोज एक कसाई आया । वह मुरगे की तरफ़ बढ़ा, तो पेड़ ने अमरूद नहीं टपकाए । न बंदर ने मुरगे को अपनी पीठ पर लिया, न ही कसाई का थैला उड़ाया । मुरगा कसाई के थैले में बंद हो गया तो दोनों ने सोचा, ''अब पता चलेगा । बड़ा मुरगा बना फिरता था !'' कसाई मुरगे को लेकर चला गया ।

अगले रोज़ चिड़ियाघर से लोग आए । उन्होंने बंदर को पकड़ने के लिए जाल बिछाया तो पेड़ चुपचाप दूसरी तरफ मुँह किये रहा । बंदर उसकी ऊपर की टहनी की तरफ़ लपका तो पेड़ ने वह टहनी ही टूट जाने दी । थोड़ी देर में बंदर जाल में था और चिड़ियाघर के लोग उसे घसीटते हुए लिये जा रहे थे । पेड़ ने उसकी यह हालत देखी तो मुसकरा दिया । मन में उसने सोचा, ''अब रात-दिन पिंजरे में रहना पड़ेगा तो इसे होश आएगा । बड़ा बंदर बना फिरता था !''

उससे अगले रोज बहुत से लोगों ने पेड़ को घेरा डाल लिया । पेड़ ने सहम कर देखा कि उनके पत्थरों और डंडों का कोई जवाब उसके पास नहीं है । ताड़-ताड़-ताड़-थोड़ी ही देर में उसके सारे अमरूद झाड़ लिये गये । फिर किसी ने कहा कि पुराना पेड़ है, इसे काटकर इसकी लकड़ी जलाने के काम में लानी चाहिए । एक आदमी के पास कुल्हाड़ी थी । बस, उसी समय पेड़ की जड़ पर कुल्हाड़ी चलने लगी । थोड़ी देर में अमरूद टोकरियों में भर कर जा रहे थे और पेड़ की लकड़ियाँ लोगों के कंधों पर लदकर ।

एक गिलहरी वहीं रहती थी । मुरगे, बंदर और पेड़ की आपसी योजना और एकता पर वह चकित हुआ करती थी । उसने मुरगे और बंदर के बाद पेड़ को इस हालत में जाते देखा तो लंबी उसाँस के साथ मन में बोली, ''जा रहा है यह भी लोगों का चूल्हा जलाने । बड़े दोस्त बने फिरते थे ।''

*विचारबोध :- हिन्दी नाटक साहित्य में मोहन राकेश का अपना एक विशिष्ट स्थान है । इनका जन्म पंजाब में हुआ लेकिन इन्होंने हिन्दी में ही लेखन कार्य किया । 'आषाढ़ का एक दिन', 'लहरों के राजहंस' तथा 'आधे अधूरे' इनके प्रमुख नाटक हैं । कहानी साहित्य में भी इनका अपना महत्वपूर्ण स्थान है ।*

*एकता ही बल है । परस्पर स्नेह और सहयोग के बल पर किसी भी संकट का सामना किया जा सकता है और जीत भी हासिल की जा सकती है । लेकिन गलतफहमी दोस्ती को दुश्मनी में बदल देती है । असहयोग एवं ईर्ष्या विनाश को स्वागत करते हैं । प्रस्तुत कहानी इन दोनों दिशाओं की ओर संकेत करती है ।*

## - शब्दार्थ -

होश भूल जाना - सुध-बुध खो देना । मुँह बिचकाना - चिढ़ाना । जान पर बन आना - जान जाने का डर होना । सन्निपात - तेज़ ज्वर । मसखरा - हँसोड़, ठठ्ठेबाज । मूसलधार वर्षा - तेज बारिश । हाल - अवस्था, दशा । मुसीबत - विपद । जिस्म - शरीर, देह । रोज़ - हर दिन। जवाब - उत्तर । घटा - बादल, मेघ । खस्ता - बुरा । मदद - सहायता । नाराज - अप्रसन्न, नाखुश, खफा । कुढ़ना - भीतर ही भीतर क्रोध करना । होश - चेतना, बोध । उसाँस - लंबी साँस । ठिठुरना - काँपना । इर्दगिर्द - आसपास ।

## प्रश्न और अभ्यास

1. संक्षिप्त उत्तरमूलक प्रश्न :

   (i) ''एकता में शक्ति होती है''- पाठ के आधार पर सिद्ध कीजिए ।

   (ii) मुसीबत के समय तीनों दोस्त किस प्रकार एक-दूसरे की मदद करते थे ?

   (iii) बारिश के समय तीनों दोस्त क्या सोच रहे थे ?

   (iv) चिड़ियाघर के लोग काले बंदर को क्यों पकड़ नहीं पाते थे ?

   (v) अमरूद को मुर्गा और बंदर कैसे बचाते थे ?

   (vi) इस कहानी का मुख्य संदेश क्या है ?

## भाषा - ज्ञान

2. क्या आप जानते हैं कि- ''क्रिया की विशेषता बताने वाले शब्दों को क्रिया-विशेषण कहते हैं । क्रिया की विशेषता अर्थात् क्रिया कैसे, कब और कहाँ हुई ।

जैसे - मैं आपकी बात <u>ध्यानपूर्वक</u> सुन रहा हूँ ।

निम्नलिखित वाक्यों में क्रिया विशेषण शब्दों को रेखांकित कीजिए :

(i) आज मुझ पर सख्त मुसीबत पड़ी है ।

(ii) उन्होंने नीचे सामान रख दिया ।

(iii) दोनों चुपचाप ताकते हुए मजा ले रहे थे ।

(iv) बंदर उनके इर्द-गिर्द चक्कर काटता है ।

(v) चारों तरफ भीड़ ही भीड़ थी ।

(vi) रोगी को तुरंत अस्पताल ले जाओ ।

(vii) मालिक को देखते ही नौकर जोर-जोर से चीखने लगा ।

3. **निम्नलिखित शब्दों के लिंग परिवर्तन कीजिए :**
मुरगा, बंदर, गिलहरी, दादा, चौधरी, पंडित

4. इस पाठ से स्थानवाचक और कालवाचक क्रियाविशेषणों के तीन-तीन उदाहरण छाँटकर लिखिए ।

5. 'मित्रता' विषय पर एक निबंध लिखिए ।

●

# भाग - दो

# भाषा-ज्ञान

# लिंग

1. पुंलिंग - ऐसे शब्द जिनसे पुरुष जाति का बोध होता है, उन्हें पुंलिंग कहते हैं ।
जैसे - अध्यापक, केला, लड़का, युवक, शेर, घोड़ा

2. स्त्रीलिंग - वे शब्द जिनसे स्त्री जाति का बोध होता है, उन्हें स्त्रीलिंग कहते हैं।
जैसे - पुस्तक, साड़ी, कमीज, स्त्री, लड़की, गाय ।

## लिंग परिवर्तन के कुछ नियम

पुंलिंग शब्द से स्त्रीलिंग शब्द बनाने के लिए उदाहरण के साथ कुछ नियम नीचे दिए गए हैं ।

1. पुंलिंग शब्दों के अंत में आए 'अ' और 'आ' के स्थान पर 'ई' लगाकर :-

| पुंलिंग | - | स्त्रीलिंग | पुंलिंग | - | स्त्रीलिंग |
|---|---|---|---|---|---|
| कबूतर | - | कबूतरी | देव | - | देवी |
| दास | - | दासी | घोड़ा | - | घोड़ी |
| दादा | - | दादी | भतीजा | - | भतीजी |
| लड़का | - | लड़की | नाना | - | नानी |
| चाचा | - | चाची | मामा | - | मामी |
| बेटा | - | बेटी | हिरन | - | हिरनी |
| ब्राह्मण | - | ब्राह्मणी | मकड़ा | - | मकड़ी |
| गोप | - | गोपी | | | |

2. अंत में आये 'अ' और 'आ' के स्थान पर 'इया' लगाकर :-

| पुंलिंग | - | स्त्रीलिंग | पुंलिंग | - | स्त्रीलिंग |
|---|---|---|---|---|---|
| चूहा | - | चुहिया | लोटा | - | लुटिया |
| बेटा | - | बिटिया | खाट | - | खटिया |
| गुड्डा | - | गुड़िया | कुत्ता | - | कुतिया |
| डिब्बा | - | डिबिया | बूढ़ा | - | बुढ़िया |
| नद | - | नदिया | | | |

3. शब्दों के अंत में आए 'अ', 'आ' और 'ई' के स्थान पर 'इन' लगाकर :-

| पुंलिंग | - | स्त्रीलिंग | पुंलिंग | - | स्त्रीलिंग |
|---|---|---|---|---|---|
| सुनार | - | सुनारिन | लुहार | - | लुहारिन |
| कुम्हार | - | कुम्हारिन | सपेरा | - | सपेरिन |
| मालिक | - | मालकिन | तेली | - | तेलिन |
| धोबी | - | धोबिन | माली | - | मालिन |
| नाग | - | नागिन | कहार | - | कहारिन |

4. अंत में आए 'अ', 'आ' और उ,ऊ,ए के स्थान पर 'आइन' लगाकर :-

| पुंलिंग | - | स्त्रीलिंग | पुंलिंग | - | स्त्रीलिंग |
|---|---|---|---|---|---|
| लाला | - | ललाइन | दूबे | - | दुबाइन |
| गुरु | - | गुरुआइन | ठाकुर | - | ठकुराइन |
| चौबे | - | चौबाइन | पंडित | - | पंडिताइन |
| बाबू | - | बबुआइन | बनिया | - | बनियाइन |

5. अकारांत शब्दों के अंत में 'नी' लगाकर :-

| पुंलिंग | - | स्त्रीलिंग | पुंलिंग | - | स्त्रीलिंग |
|---|---|---|---|---|---|
| जाट | - | जाटनी | ऊँट | - | ऊँटनी |
| रीछ | - | रीछनी | भाट | - | भाटनी |
| मोर | - | मोरनी | भील | - | भीलनी |
| सिंह | - | सिंहनी | शेर | - | शेरनी |

6. अंत में 'आ' लगाकर :-

| पुंलिंग | - | स्त्रीलिंग | पुंलिंग | - | स्त्रीलिंग |
|---|---|---|---|---|---|
| अध्यक्ष | - | अध्यक्षा | छात्र | - | छात्रा |
| अनुज | - | अनुजा | महोदय | - | महोदया |
| शिष्य | - | शिष्या | प्रिय | - | प्रिया |
| आत्मज | - | आत्मजा | आचार्य | - | आचार्या |

7. अंत में 'आनी' लगाकर :-

| पुंलिंग | - | स्त्रीलिंग | पुंलिंग | - | स्त्रीलिंग |
|---|---|---|---|---|---|
| सेठ | - | सेठानी | जेठ | - | जेठानी |
| नौकर | - | नौकरानी | भव | - | भवानी |
| देवर | - | देवरानी | मेहतर | - | मेहतरानी |

8. अंत में आए 'अक' के स्थान पर 'इका' लगाकर :-

| पुंलिंग | - | स्त्रीलिंग | पुंलिंग | - | स्त्रीलिंग |
|---|---|---|---|---|---|
| लेखक | - | लेखिका | गायक | - | गायिका |
| सेवक | - | सेविका | पाठक | - | पाठिका |
| बालक | - | बालिका | नायक | - | नायिका |
| अध्यापक | - | अध्यापिका | पाचक | - | पाचिका |

9. अंत में आए 'मान', और 'वान' के स्थान पर 'मती' और 'वती' लगाकर :-

| पुंलिंग | - | स्त्रीलिंग | पुंलिंग | - | स्त्रीलिंग |
|---|---|---|---|---|---|
| सत्यवान | - | सत्यवती | पुत्रवान | - | पुत्रवती |
| ज्ञानवान | - | ज्ञानवती | धनवान | - | धनवती |
| शक्तिमान | - | शक्तिमती | बुद्धिमान | - | बुद्धिमती |
| रूपवान | - | रूपवती | गुणवान | - | गुणवती |

10. अंत में आए 'ता' के स्थान पर 'त्री' लगाकर :-

| पुंलिंग | - | स्त्रीलिंग | पुंलिंग | - | स्त्रीलिंग |
|---|---|---|---|---|---|
| दाता | - | दात्री | नेता | - | नेत्री |
| कर्त्ता | - | कर्त्री | निर्माता | - | निर्मात्री |

**11.** सदा पुंलिंग रहने वाले शब्दों से पहले 'मादा' लगाकर :-

| पुंलिंग | - | स्त्रीलिंग | पुंलिंग | - | स्त्रीलिंग |
|---|---|---|---|---|---|
| खरगोश | - | मादा खरगोश | कौआ | - | मादा कौआ |
| भेड़िया | - | मादा भेड़िया | उल्लू | - | मादा उल्लू |
| चीता | - | मादा चीता | तोता | - | मादा तोता |

**12.** सदा स्त्रीलिंग रहने वाले शब्दों से पहले 'नर' लगाकर :-

| पुंलिंग | - | स्त्रीलिंग | पुंलिंग | - | स्त्रीलिंग |
|---|---|---|---|---|---|
| नर कोयल | - | कोयल | नर मछली | - | मछली |
| नर बतख | - | बतख | नर चील | - | चील |
| नर लोमड़ी | - | लोमड़ी | नर मक्खी | - | मक्खी |

**13.** भिन्न रूप वाले पुंलिंग - स्त्रीलिंग शब्द

| पुंलिंग | - | स्त्रीलिंग | पुंलिंग | - | स्त्रीलिंग |
|---|---|---|---|---|---|
| राजा | - | रानी | पुरुष | - | स्त्री |
| पति | - | पत्नी | पिता | - | माता |
| नर | - | नारी | युवक | - | युवती |

●

# क्रिया

**क्रिया की परिभाषा :**

जिस शब्द या पद से किसी कार्य के करने या होने का बोध होता है, उसे क्रिया कहते हैं । जैसे - उड़ना, दौड़ना, पीना, पढ़ना, हँसना आदि ।

1. चिड़िया उड़ रही है ।
2. मोहन दौड़ता है ।
3. विनोद दूध अवश्य पीता है ।

ये सभी पद (उड़, दौड़ता, पीता) किसी न किसी कार्य के करने के सूचक हैं । अत: ये क्रिया पद हैं । क्रिया के मूलरूप को 'धातु कहते हैं । पढ़, उठ, खा, पी आदि धातुएँ हैं ।

**क्रिया के भेद**

मुख्य रूप से क्रियाएँ दो प्रकार की होती हैं - सकर्मक और अकर्मक ।

1. **अकर्मक क्रिया -** जिन क्रियाओं के साथ उनका कर्म नहीं होता, वे अकर्मक क्रियाएँ कहलाती हैं । अकर्मक क्रिया का प्रभाव सीधे कर्त्ता पर पड़ता है । जैसे - श्याम दौड़ता है ।

   इस उदाहरण में 'दौड़ना' क्रिया का फल सीधे कर्त्ता श्याम पर पड़ रहा है । इस वाक्य में कोई कर्म नहीं है । न ही उसकी आवश्यकता है ।

   अन्य उदाहरण -

   (i) पक्षी उड़ रहे हैं ।

   (ii) बच्चे हँस रहे हैं ।

   (iii) सीता मुस्कराती है ।

   (iv) अतिथि जाग गया है ।

   (v) मेहमान जा चुके हैं ।

2. **सकर्मक क्रिया -** जिस क्रिया के प्रयोग में 'कर्म' की आवश्यकता पड़ती है और उसका सीधा प्रभाव कर्म पर पड़ता है, उसे सकर्मक क्रिया कहते हैं । जैसे -

   'सुरेश पुस्तक पढ़ता है' । यहाँ 'पढ़ना' क्रिया के प्रयोग में 'कर्म' (पुस्तक) की आवश्यकता अनिवार्य रूप से पड़ रही है ।

अन्य उदाहरण -

(i) शीला ने संतरा खाया ।

(ii) मोहन दूध पी रहा है ।

(iii) मैंने उपन्यास पढ़ा ।

3. **प्रेरणार्थक क्रिया** - जिन क्रियाओं से इस बात का बोध हो कि कर्त्ता स्वयं कार्य न कर किसी दूसरे को कार्य करने के लिए प्रेरित करता है, वे 'प्रेरणार्थक क्रियाएँ' कहलाती हैं ।

जैसे - काटना से कटवाना, करना से कराना ।

उदाहरण - मोहन मुझसे किताब लिखाता है ।

इस वाक्य में मोहन (कर्त्ता) स्वयं किताब न लिखकर 'मुझे' अर्थात् दूसरे व्यक्ति को लिखने की प्रेरणा देता है ।

4. **संयुक्त क्रिया -** जो क्रिया दो या दो से अधिक धातुओं के मेल से बनती है, उसे संयुक्त क्रिया कहते हैं ।

जैसे - श्याम रो चुका ।

किशोर रोने लगा ।

राम घर पहुँच गया ।

इन वाक्यों में 'रो चुका', 'रोने लगा', 'पहुँच गया' क्रमशः संयुक्त क्रियाएँ हैं ।

**निम्नलिखित वाक्यों में प्रयुक्त क्रियाओं के भेद बताइए :**

(i) मीरा सेब खाती है ।

(ii) बच्चा रोता है ।

(iii) मोहन नहाता है ।

(iv) मुकेश फुटबॉल खेलता है ।

(v) लड़का जमीन पर बैठ चुका है ।

(vi) लोग रामायण पढ़ते हैं ।

(vii) नौकरानी कपड़े धोती है ।

(viii) तुलसीदास ने रामचरितमानस नामक ग्रंथ लिखा ।

(ix) मोहन किताब पढ़ रहा है ।

(ix) रमा नहाती है ।

●

# अव्यय

**अव्यय की परिभाषा** - 'अव्यय' ऐसे शब्दों को कहते हैं, जिनके रूप में लिंग, वचन, पुरुष, कारक इत्यादि के कारण कोई विकार उत्पन्न नहीं होता । ऐसे शब्द अपने मूल रूप में ही सर्वत्र प्रयुक्त होते हैं । इनका व्यय नहीं होता । अत: ये अव्यय हैं । जैसे- जब, तब, अभी, उधर, वहाँ, इधर, कब, तथा, एवं, किन्तु, वाह, परन्तु, बल्कि, इसलिए, अर्थात्, चूंकि, आह, अरे, और, ठीक, अत: इत्यादि ।

अव्यव या अविकारी शब्द मुख्य रूप से चार प्रकार के होते हैं -

1. क्रिया विशेषण अव्यय
2. सम्बन्धसूचक अव्यय
3. समुच्चयबोधक अव्यय
4. विस्मयादिबोधक अव्यय ।

1. **क्रिया विशेषण** - जो अव्यय या अविकारी शब्द क्रिया की विशेषता बतलाते हैं, उन्हें क्रिया विशेषण कहते हैं ।

जैसे - सोहन धीरे धीरे चल रहा है ।

यहाँ धीरे धीरे द्वारा 'चलना' क्रिया की विशेषता प्रकट हो रही है । अत: यह क्रिया विशेषण है ।

कुछ अन्य उदाहरण :

(i) राम बिल्कुल थक गया है ।

(ii) वह प्रतिदिन पढ़ता है ।

(iii) सोहन मीठा बोलता है ।

क्रिया विशेषण अव्यय के निम्नलिखित चार भेद हैं :

(i) कालवाचक क्रिया विशेषण

(ii) स्थानवाचक क्रिया विशेषण

(iii) रीतिवाचक क्रिया विशेषण

(iv) परिमाणवाचक क्रिया विशेषण

(i) **कालवाचक क्रिया विशेषण -** जिन शब्दों से क्रिया के होने या करने का समय सूचित हो वे कालवाचक क्रिया विशेषण कहलाते हैं ।

जैसे- वह अभी-अभी स्कूल गया है ।

यहाँ 'अभी-अभी' 'गया' क्रिया के समय को सूचित कर रहा है ।

कुछ अन्य उदाहरण -

(i) सदा सत्य बोलो ।

(ii) मैं अभी तुम्हारे पास आऊँगा ।

(iii) जब-तब मत घूमो ।

(iv) कृपया कल वहाँ चले जाओ ।

(ii) **स्थानवाचक क्रिया विशेषण -** जो क्रिया विशेषण क्रिया के स्थान या दिशा का बोध कराते हैं, वे स्थानवाचक क्रिया विशेषण कहलाते हैं । जैसे-

(i) तुम किधर जाना चाहते हो ?

(ii) वह अंदर बैठा है ।

(iii) दादा जी बाहर गए हैं ।

(iv) इधर-उधर मत जाओ ।

(v) बायीं ओर भीड़ है ।

यहाँ किधर, अंदर, बाहर, इधर - उधर, बायीं क्रमशः क्रिया के स्थान और दिशा का बोध करा रहे हैं ।

(iii) **रीतिवाचक क्रिया विशेषण -** जो क्रिया विशेषण क्रिया के होने की रीति या विधि का बोध कराते हैं, उन्हें रीतिवाचक क्रिया विशेषण कहते हैं ।

जैसे - राकेश मधुर गाता है ।

यहाँ 'मधुर' क्रिया विशेषण गाने की रीति का बोध करा रहा है ।

अन्य उदाहरण :

(i) राम तेजी से दौड़ा ।

(ii) अब वह भलीभाँति नाच लेता है ।

(iii) मैं ध्यानपूर्वक सुन रहा हूँ ।

**(iv) परिमाणवाचक क्रिया विशेषण** - परिमाणवाचक क्रिया विशेषण क्रिया की मात्रा या उसके परिमाण का बोध कराता है । यह बताता है कि क्रिया कितनी मात्रा में हुई । जैसे -

(i) वह बिल्कुल थक गया ।

(ii) वह बहुत थक गया ।

(iii) वह थोड़ा खाता है ।

(iv) मैं जरा ही चला था कि रिक्शा आ गया ।

(v) जरा ज्यादा / कम बोलो ।

यहाँ बिल्कुल, बहुत, थोड़ा, जरा, ज्यादा, कम क्रिया की मात्रा का बोध करा रहे हैं ।

2. **संबंध सूचक अव्यय** - जो अव्यय शब्द संज्ञा, सर्वनाम शब्दों के साथ जुड़कर वाक्य के दूसरे शब्दों से उनका संबंध बताते है, उन्हें संबंध सूचक अव्यय कहते हैं । जैसे-

राम घर के बाहर गया ।

धन के बिना किसी का काम नहीं चलता ।

श्याम राम के साथ अपने घर जाएगा ।

इन वक्यों में 'के बाहर', 'के बिना', 'के साथ' शब्द संबंध सूचक अव्यय हैं ।

3. **समुच्चयबोधक अव्यय** - दो पदों, पदबंधों वाक्यांशो अथवा वाक्यों को परस्पर जोड़ने वाले अविकारी शब्द समुच्चयबोधक अव्यय कहलाते हैं । जैसे- और, किन्तु, कि, या । इन्हें **योजक भी** कहा जाता है ।

उदाहरण : (i) ''वह न चाय पीता है और न कॉफी ।

(ii) मैं अशोक हूँ न कि अमर ।

(iii) पढ़ाई करो अन्यथा फेल हो जाओगे ।

इन वाक्यों में 'ओर', 'न कि', 'अन्यथा' समुच्चयबोधक अव्यय हैं ।

4. **विस्मयादिबोधक अव्यय** - हर्ष, शोक, आश्चर्य, घृणा, व्यथा आदि भावों को प्रकट करने वाले अविकारी शब्द विस्मयादि बोधक अव्यय कहलाते हैं । जैसे -

(i) वाह ! क्या सुन्दर दृश्य है !

(ii) अरे ! गाड़ी से बचो ।

(iii) वाह ! क्या सुन्दर बगीचा है !

(iv) शाबाश ! तुमसे ऐसी ही आशा थी ।

इन वाक्यों में 'वाह', 'अरे', 'शाबाश' विस्मयादिबोधक अव्यय हैं ।

●

# पर्यायवाची शब्द

**परिभाषा** - समान अर्थ के बोधक शब्दों को पर्यायवाची शब्द कहते हैं । अथवा एक ही शब्द के उसी के समान अर्थ रखने वाले शब्दों को पर्यावाची शब्द कहा जाता है ।

प्रस्तुत हैं हिन्दी के प्रमुख पर्यायवाची शब्द :

| **शब्द** | - | **पर्यायवाची** |
|---|---|---|
| अंग | - | अवयव, तन, गात, हिस्सा । |
| अवनति | - | गिरावट, पतन, अधोगति । |
| अग्नि | - | आग, अनल, पावक, ज्वाला, वह्नि। |
| अमृत | - | पीयूष, सुधा, अमिय, सोम । |
| असुर | - | राक्षस, दानव, दैत्य, निशाचर । |
| अनुचर | - | दास, सेवक, चाकर, भृत्य । |
| आकाश | - | व्योम, गगन, नभ, आसमान । |
| आँख | - | नेत्र, नयन, लोचन, दृग । |
| आनन्द | - | मोद, प्रमोद, उल्लास, हर्ष । |
| आख्यान | - | कथा, कहानी, किस्सा, वर्णन । |
| इच्छा | - | अभिलाषा, आशा, मनोरथ, चाह । |
| ईश्वर | - | ईश, प्रभु, जगदीश, परमात्मा । |
| उपवन | - | उद्यान, वाटिका, बगीचा, फुलवाड़ी । |
| कमल | - | जलज, सरोज, राजीव, पंकज । |
| कपड़ा | - | वस्त्र, वसन, चीर, पट । |
| गंगा | - | भागीरथी, सुरसरी, सुरनदी, त्रिपथगा । |
| गृह | - | भवन, आलय, निकेतन, सदन । |
| चतुर | - | प्रवीण, चालाक, कुशल, निपुण । |
| तालाब | - | सर, तालाब, सरोवर, जलाशय । |
| देव | - | देवता, अमर, सुर, निर्जर । |
| दास | - | सेवक, अनुचर, चाकर, नौकर । |
| दिन | - | दिवस, बासर, वार, अह्न। |
| दुःख | - | कष्ट, पीड़ा, क्लेश, व्यथा । |

धरती - पृथ्वी, भूमि, मही, वसुधा ।
नदी - सरिता, प्रवाहिनी, तटिनी, सलिला ।
निर्धन - दरिद्र, गरीब, रंक, कंगाल ।
पक्षी - खग, विहग, चिड़िया, पंछी ।
पृथ्वी - भू, धरा, जमीन, धरती, मही ।
पुष्प - सुमन, कुसुम, फूल, प्रसून ।
पर्वत - गिरि, अचल, शैल, नग ।
प्रकाश - उजाला, प्रभा, ज्योति, चमक, आलोक ।
पेड़ - वृक्ष, तरु, द्रुम, पादप ।
बंदर - कपि, वानर, हरि, मर्कट ।
ब्रह्मा - विधि, विधाता, कमलासन ।
भ्रमर - अलि, मधुप, मधुकर, भौंरा ।
मनुष्य - मनुज, नर, मानव, आदमी ।
माता - जननी, जन्मदायिनी, अम्बा, माँ ।
राजा - नृप, नरपति, महीपति, नरेश ।
राम - रघुनाथ, राघव, सीतापति, रघुपति, दशरथ-सुत
वायु - हवा, वात, अनिल, समीर, पवन ।
वर्षा - बारिश, मेह, पावस ।
विष्णु - हरि, गोविन्द, लक्ष्मीपति, नारायण ।
सूर्य - रवि, भानु, सविता, आदित्य, तपन, दिवाकर ।
संसार - जग, जगत, भव, भुवन, दुनिया ।
सर्प - साँप, भुजंग, अहि, नाग, व्याल ।
स्वर्ण - हेम, कनक, सोना, कुन्दन ।
मदिरा - सुरा, सोमरस, मधु, शराब ।
सरस्वती - वाणी, शारदा, भारती, हंसवाहिनी, वाग्देवी ।
हाथ - कर, हस्त, पाणि ।
हाथी - द्विप, गज, करी, नाग, मतंग ।

# अनेकार्थी शब्द

प्रत्येक भाषा में अनेक शब्द ऐसे होते हैं जिनके एक से अधिक अर्थ होते हैं । वे शब्द प्रसंग बदलने पर अलग-अलग अर्थ देते हैं । जैसे-

'कल' शब्द के अर्थ हैं- पिछला दिन, अगला दिन, चैन, शोर, मशीन आदि ।

हिन्दी में प्रयुक्त होने वाले कुछ अनेकार्थी शब्द निम्नलिखित हैं-

अंक - संख्या, गोद, अध्याय, चिह्न, नाटक का अंक ।

अंबर - आकाश, वस्त्र, कपास ।

अक्षर - नष्ट न होने वाला, ईश्वर, वर्ण ।

अनंत - ईश्वर, आकाश, विष्णु, शेषनाग, अविनाशी ।

अब्ज - शंख, कमल, कपूर, चंद्रमा ।

अरुण - सूर्य का सारथी, प्रातःकालीन सूर्य, सिंदूर, लाल ।

अर्थ - धन, व्याख्या, उद्देश्य ।

आम - एक फल, सामान्य ।

आराम - सुख-चैन, बगीचा ।

उत्तर - जवाब, उत्तर दिशा ।

उपचार - उपाय, सेवा, इलाज ।

कनक - सोना, धतूरा, गेहूँ ।

कर - हाथ, किरण, हाथी का सूँड, टैक्स, 'करना' क्रिया का आज्ञार्थक रूप, मूलधातु ।

कल - चैन, बीता हुआ कल, आनेवाला दिन, मशीन, आराम ।

कला - एक विषय, गुण, युक्ति, तरीका ।

काम - इच्छा, कामदेव, कार्य, वासना ।

काल - समय, मृत्यु ।

कुल - सब, वंश, घर, गोत्र ।

कृष्ण - काला, श्रीकृष्ण, पंद्रह दिनों का अंधेरा पक्ष।

खग - पक्षी, आकाश ।

गुरु - श्रेष्ठ, भारी, बड़ा, दो मात्राओंवाला वर्ण, कठिनता से पचने वाला, शिक्षक ।

ग्रहण - लेना, सूर्य-चन्द्र ग्रहण, दोष ।

घर - मकान, कुल, कार्यालय ।

| | | |
|---|---|---|
| जड़ | - | अचेतन, मूर्ख, वृक्ष का मूल । |
| जवान | - | सैनिक, योद्धा, वीर, युवक । |
| जान | - | प्राण, पहचान, ज्ञान । |
| ठाकुर | - | देवता, स्वामी, क्षत्रिय, ईश्वर । |
| तप | - | साधना, गर्मी, अग्नि, धूप । |
| तारा | - | नक्षत्र, आँखों की पुतली । |
| तीर | - | किनारा, वाण । |
| दंड | - | डंडा, सज़ा, व्यायाम का प्रकार, डंठल । |
| दल | - | समूह, सेना, पत्ता । |
| धारणा | - | विचार, बुद्धि, समझ, विश्वास, मन की स्थिरता । |
| नायक | - | नेता, मार्गदर्शक, सेनापति, नाटक का मुख्य पात्र । |
| पतंग | - | सूर्य, एक कीड़ा, उड़ाई जाने वाली एक गुड़िया । |
| पत्र | - | चिट्ठी, पत्ता, समाचार पत्र, पन्ना । |
| पद | - | चरण, शब्द, ओहदा, कविता की पंक्ति, दर्जा । |
| पय | - | दूध, पानी, अमृत । |
| पानी | - | जल, मान, चमक । |
| पूर्व | - | पहले, एक दिशा का नाम । |
| बाल | - | केश, बच्चा । |
| भेद | - | प्रकार, रहस्य,फूट, मित्रता, तात्पर्य । |
| मत | - | राय, संप्रदाय, निषेध ('न' के अर्थ में) |
| मधु | - | शहद, मदिरा, वसंत, मीठा । |
| योग | - | जोड़, व्यायाम, मेल, ध्यान । |
| रास | - | आनंद, नृत्य । |
| लक्ष्य | - | उद्देश्य, निशाना । |
| लाल | - | एक रंग, पुत्र । |
| बंश | - | कुल, बाँस, जाति । |
| वर्ण | - | रंग, अक्षर, जाति । |
| वार | - | दिन, आक्रमण, प्रहार । |

| | | |
|---|---|---|
| विधि | - | ब्रह्मा, रीति, कानून । |
| वृत्ति | - | पेशा, छात्रवृत्ति, कार्य, स्वभाव, नीयत । |
| शेष | - | बचा हुआ, शेषनाग । |
| श्यामा | - | राधा, यमुना, रात, कोयल । |
| श्री | - | लक्ष्मी, सरस्वती, संपत्ति, शोभा, कांति, धन । |
| सारंग | - | मोर, सांप, बादल, मृग, पपीहा, हंस, कोयल, कामदेव । |
| साल | - | एक पेड़, वर्ष, दु:ख, कचोट । |
| सूत | - | धागा, सारथी । |
| सोना | - | शयन, स्वर्ण । |
| हल | - | समाधान, खेत जोतने का यंत्र । |
| हार | - | पराजय, माला । |
| हाल | - | दशा, बड़ा कमरा । |

●

# विलोम शब्द

'शब्द के वास्तविक अर्थ के विपरीत अर्थ का बोध करानेवाले शब्द को विलोम शब्द कहते हैं ।'

| शब्द | | विलोम शब्द |
| --- | --- | --- |
| अकाम | - | सकाम |
| अधम | - | उत्तम |
| आदि | - | अंत |
| अमृत | - | विष |
| अस्त | - | उदय |
| अपना | - | पराया |
| अमर | - | मरणशील |
| आकाश | - | पाताल |
| आगे | - | पीछे |
| आशा | - | निराशा |
| इच्छा | - | अनिच्छा |
| उचित | - | अनुचित |
| उधार | - | नगद |
| कड़वा | - | मीठा |
| कठिन | - | सरल |
| आना | - | जाना |
| आय | - | व्यय |
| आलोक | - | अंधकार |
| उच्च | - | नीच |
| उत्थान | - | पतन |
| कल | - | आज |
| कठोर | - | कोमल |
| गुण | - | दोष |
| गुरु | - | लघु |
| जल | - | थल |
| दक्षिण | - | वाम |
| क्रय | - | विक्रय |

| शब्द | | विलोम शब्द |
| --- | --- | --- |
| कुरूप | - | सुरूप |
| गरीब | - | अमीर |
| जवानी | - | बुढ़ापा |
| थोड़ा | - | बहुत |
| दिन | - | रात |
| नवीन | - | प्राचीन |
| नागरिक | - | ग्रामीण |
| आयात | - | निर्यात |
| सगुण | - | निर्गुण |
| संयोग | - | वियोग |
| आदर | - | अनादर |
| स्वप्न | - | जागरण |
| एक | - | अनेक |
| न्याय | - | अन्याय |
| व्यष्टि | - | समष्टि |
| स्वाधीन | - | पराधीन |
| इहलोक | - | परलोक |
| स्तुति | - | निंदा |
| यश | - | अपयश |
| सपूत | - | कपूत |
| मालिक | - | नौकर |
| राजा | - | रंक |
| माता | - | पिता |
| साकार | - | निराकार |
| शत्रु | - | मित्र |
| सूक्ष्म | - | स्थूल |

# सूक्ष्म अंतरवाले समानार्थक शब्द

कुछ शब्दों के अर्थ समान लगते हैं, पर बिलकुल समान नहीं । अर्थ और प्रयोग की दृष्टि से इनमें सूक्ष्म अन्तर रहता है । ऐसे शब्द सूक्ष्म अंतरवाले समानार्थक शब्द समानार्थक कहे जाते हैं । इन्हें एकार्थक कहना उचित नहीं है ।

नीचे कुछ ऐसे समानार्थक शब्द दिए जा रहे हैं । इन्हें पढ़ें और इनका प्रयोग सावधानी से करें ।

| शब्द | समान अर्थ |
|---|---|
| अलौकिक : | जो इस लोक में न मिल सके । |
| अस्वाभाविक : | जो मानव प्रकृति के विपरीत हो । |
| अबला : | स्त्री जाति के अर्थ में । |
| निर्बला : | बलहीन स्त्री । |
| अहंकार : | शक्ति या योग्यता से अधिक समझना । |
| घमण्ड : | अपने को बहुत बड़ा और दूसरों को कुछ नहीं समझना । |
| अनभिज्ञ : | जिसे किसी बात की जानकारी की कमी हो । |
| मूर्ख : | जो मोटी बुद्धि के कारण बहुत देर से समझे । |
| मूढ़ : | जिसमें समझने की शक्ति न हो । |
| अनुरूप : | स्वरूप या योग्यता के अनुसार । |
| अनुकूल : | अपने पक्ष में । |
| अनुभव : | व्यवहार, अभ्यास आदि से प्राप्त ज्ञान (अनुभव इन्द्रियों के माध्यम से होता है) । |
| अनुभूति : | चिंतन और मनन से प्राप्त आंतरिक ज्ञान । |
| अपराध : | सामाजिक या राजकीय नियम तोड़ना । |
| पाप : | नैतिक और धार्मिक नियम तोड़ना । |
| अपयश : | सदा के लिए दोषी बन जाना । |
| अभिज्ञ : | अनेक विषयों का ज्ञाता । |
| विज्ञ : | किसी खास विषय का अच्छा ज्ञाता । |
| अधिक : | आवश्यकता से अधिक । |
| काफी : | आवश्यकता से न अधिक न कम । |
| अगोचर : | जो ज्ञान या बुद्धि से जाना जाय, इन्द्रियों से नहीं । |
| अज्ञेय : | जो किसी प्रकार न जाना जाय । |
| अद्वितीय : | जिसके समान दूसरा न हो । |

अनुपम : जिसकी उपमा न हो ।

अस्त्र : फेंककर प्रयोग किया जाने वाला युद्धोपकरण : जैसे : बम, गोला ।

शस्त्र : हाथ से पकड़कर चलाए जाने वाला हथियार, जैसे - तलवार ।

अमूल्य : जिस वस्तु का मूल्य कोई दे ही न सके ।

बहुमूल्य : जिस वस्तु का मूल्य अधिक परंतु उचित हो ।

आयु : जन्म से मरण तक का समय ।

अवस्था : जन्म से वर्तमान काल तक का समय ।

अर्पण : अपने से बड़ों को कोई वस्तु भेंट करना ।

प्रदान : बड़ों की ओर से छोटों को देना ।

इच्छा : किसी विशेष वस्तु की साधारण इच्छा ।

अभिलाषा : किसी विशेष वस्तु की हार्दिक इच्छा ।

कामना : किसी विशेष वस्तु की सामान्य इच्छा ।

आरम्भ : साधारण कार्य की प्रथम अवस्था ।

श्रीगणेश : शुभ या धार्मिक कार्य की प्रथम अवस्था ।

आज्ञा : बड़ों द्वारा किया गया कार्य निर्देश ।

आदेश : किसी अधिकारी द्वारा किया गया कार्य निर्देश ।

अनुज : केवल छोटा भाई ।

भाई : छोटे-बड़े दोनों को कहा जाता है ।

प्रयास : साधारण प्रयत्न ।

साहस : साधन के अभाव में भी काम करने की तीव्र इच्छा ।

कष्ट : शारीरिक या मानसिक कष्ट ।

क्लेश : यह मन के अप्रिय भावों का सूचक है ।

पीड़ा : रोग या चोट के कारण शारीरिक कष्ट ।

वेदना : मानसिक कष्ट ।

लज्जा : अनुचित काम करने हेतु मुँह छिपाना ।

संकोच : कोई काम करने में हिचक ।

तट : नदी, तालाब या समुद्र के निकट की जमीन ।

तीर : जलाशय के जल को स्पर्श करने वाली जमीन ।

सैकत : किनारे की बालूवाली जमीन ।

| | |
|---|---|
| त्रुटि : | कमी या चूक का भाव । |
| दोष : | अनुचित का भाव । |
| भूल : | सब प्रकार की गलतियाँ । |
| आधि : | मानसिक कष्ट । |
| व्याधि: | शारीरिक कष्ट |
| ईर्ष्या : | दूसरों की सफलता पर मन में जलन । |
| द्वेष : | दूसरे के प्रति घृणा और शत्रुता का भाव । |
| प्रलाप : | बकवास, हायतोबा । |
| विलाप : | दु:ख में रोना । |
| पत्नी : | अपनी विवाहिता स्त्री । |
| स्त्री : | स्त्री-जाति का बोधक । |
| महिला : | कुलीन स्त्री । |
| शंका : | सन्देह का भाव । |
| आशंका : | अमंगल होने का भय । |
| बाला : | युवती । |
| किशोरी : | दस से पन्द्रह वर्ष की लड़की । |
| कन्या : | पुत्री । |
| सन्धि : | किसी राष्ट्र से सैनिक मेल, अक्षरों का मेल । |
| मेल : | किसी व्यक्ति के साथ मिलना या दोस्ती करना । |
| मौन : | बोलने की इच्छा न रखना । |
| मूक : | जो बोल ही न सके । |
| राजा : | जो देश विशेष का वंशगत अधिकारी हो । |
| सम्राट : | राजाओं का राजा । |

•

# भाग - तीन

# पत्र - लेखन

# आवेदन पत्र

## अपने विद्यालय के प्रधानाचार्य को दो दिन के अवकाश के लिए आवेदन पत्र लिखिए ।

सेवा में,
**प्रधानाचार्य महोदय,**
सेकेण्डरी बोर्ड़ हाईस्कूल, कटक

(कक्षा शिक्षक के मार्फत)

**विषय : दो दिन के अवकाश के लिए आवेदन पत्र ।**

महाशय,

सविनय निवेदन है कि मैं पिछले दो दिनों से बुखार से पीडित हूँ । शारीरिक अस्वस्थता के कारण मैं स्कूल जाने में असमर्थ हूँ । डॉक्टर ने भी मुझे पूर्ण विश्राम का परामर्श दिया है ।

कृपया मुझे दिनाकं 10.10.15 और 11.10.15 को दो दिन का अवकाश प्रदान कर अनुगृहीत करें ।

**स्थान – कटक**
दिनांक - 10.10.2015

आपका आज्ञाकारी छात्र,
**निर्मल कुमार चौधरी**
कक्षा - 8 वीं
वर्ग - 'ख'
अनुक्रमांक - 12

## अपने विद्यालय के प्राचार्य को एक दिन के अवकाश हेतु आवेदन पत्र लिखिए ।

सेवा में,
**प्राचार्य महोदय,**
चन्द्रशेखर जिला स्कूल, सम्बलपुर

**विषय : एक दिन के अवकाश के लिए आवेदन पत्र ।**

महाशय,

सनम्र निवेदन है कि आज हमारे घर पर धार्मिक समारोह है । अत्यधिक कार्य होने के कारण मुझे घर पर रहना आवश्यक है । कृपया मुझे आज दिनांक 10.11.2015 का अवकाश प्रदान करें ।

स्थान – सम्बलपुर
दिनांक - 10.11.2015

आपका आज्ञाकारी छात्र,
**रामगोपाल वर्मा**
कक्षा - 8 वीं
वर्ग - 'ख'
अनुक्रमांक - 11

## शुल्क माफ के लिए प्रधानाचार्य के पास आवेदन पत्र लिखिए ।

सेवा में,
**प्रधानाचार्य महोदय,**
अरविन्द शिक्षाश्रम
भुवनेश्वर

(कक्षा अध्यापक के मार्फत)

**विषय : मासिक शुल्क माफ करने के लिए आवेदन-पत्र ।**

महाशय,

सविनय निवेदन है कि मैं आपके विद्यालय की आठवीं कक्षा का छात्र हूँ । मैं एक निर्धन परिवार से संबंध रखता हूँ । मेरे पिताजी की किराने की एक छोटी सी दुकान है जिससे इतनी आमदनी नहीं हो पाती कि परिवार का भरण-पोषण सुचारु रूप से हो सके ।

इसलिए मैं आपसे प्रार्थना करता हूँ कि आप मेरा मासिक शुल्क माफ करने की कृपा करें जिससे मैं अपनी पढ़ाई जारी रख सकूँ । मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ कि मैं कड़ी मेहनत करके कक्षा में प्रथम आने का प्रयास करूँगा ।

स्थान – भुवनेश्वर
दिनांक - 11.10.2015

आपका आज्ञाकारी छात्र ,
**महेश कुमार मिश्र**
कक्षा - 8 वीं
वर्ग - 'क'
अनुक्रमांक - 12

## पेय जल की समुचित व्यवस्था के लिए प्रधानाचार्य को आवेदन पत्र

सेवा में,

**प्रधानाचार्य महोदय,**

पंचायत उच्चतर माध्यमिक विद्यालय,

सिमुलिया, बालेश्वर

**विषय : पेय जल की समुचित व्यवस्था के लिए आवेदन पत्र ।**

महाशय,

सविनय निवेदन है कि हमारे विद्यालय में पेय जल की समुचित व्यवस्था नहीं है। जो नल लगा हुआ है, विद्यालय के समस्त छात्र-छात्राओं के लिए पर्याप्त नहीं है । कभी-कभी कई घंटों तक नल में पानी नहीं आता । टंकी में जमा हुआ मैला, दूषित पानी पीकर कई छात्र अस्वस्थ हो गए हैं ।

अत: हम सब छात्रगण आपसे विनीत प्रार्थना करते हैं कि स्वच्छ और शुद्ध पेय जल की व्यवस्था करने का कष्ट करें । हम सब आपके आभारी रहेंगे ।

स्थान – सिमुलिया

दिनांक - 17.11.2015

आपके आज्ञाकारी छात्रगण,

**सूरज वर्मा (छात्र प्रतिनिधि)**

**महेश साहु**

**अनुप पाठक**

## पुस्तक मँगवाने के लिए पुस्तक विक्रेता को पत्र

सेवा में,

**श्रीमान व्यवस्थापक महोदय,**

न्यू बुक डिपो,

करोलबाग, नई दिल्ली-110005

**विषय : पुस्तक के लिए आदेश**

महोदय,

कृपया निम्नलिखित पुस्तकें उचित कमीशन काटकर वी.पी.पी. द्वारा शीघ्रातिशीघ्र भेजने का कष्ट करें । सौ **रुपए** मनी आर्डर द्वारा अग्रिम भेज रहा हूँ । पुस्तकें नवीन संस्करण की होनी चाहिए । साथ ही एक नवीन पुस्तक सूची भी उपलब्ध कराएँ । कटी-फटी तथा सजिल्द न होने पर पुस्तकें लौटा दी जाएँगी, जिनके व्यय भार का उत्तरदायित्व आपका होगा ।

| क्रम संख्या | नाम-पुस्तक | लेखक | प्रतियाँ |
|---|---|---|---|
| 1. | साकेत | मैथिलीशरण गुप्त | 2 |
| 2. | कामायनी | जयशंकर प्रसाद | 2 |
| 3. | नवीन हिन्दी शब्दकोश | अशोक बत्रा | 2 |
| 4. | नव युग हिन्दी व्याकरण | डॉ. अशोक वर्मा | 3 |

दिनांक - 17.11.2015

भवदीय

**अजय कुमार महापात्र**

पी.आर उच्चतर माध्यमिक

विद्यालय; बलांगीर (ओड़िशा)

कक्षा-8 वीं 'क'

**अनुक्रमांक** - 14

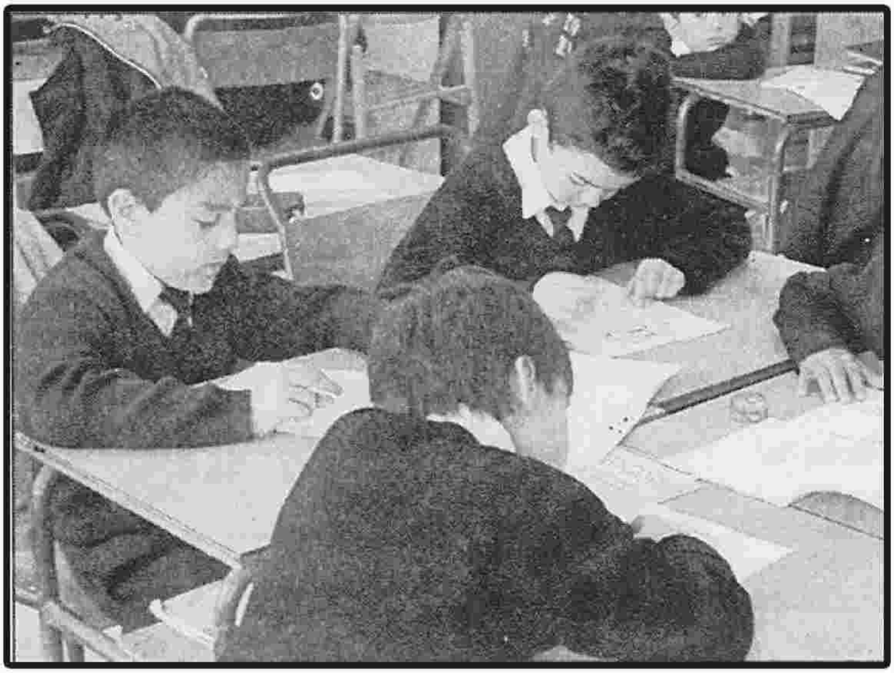

## पुस्तक विक्रेता ने वी.पी.पी. द्वारा आपको पुस्तकें भेज दी हैं । धन्यवाद देते हुए पत्र लिखिए ।

शान्ति नगर
राउरकेला
अगस्त 20, 2015

सेवा में,
संचालक
आर्य बुक डिपो
मिंटो रोड़, नई दिल्ली - 110002

महोदय,

आपके द्वारा वी.पी.पी. पार्सल से भेजी गई पुस्तकें प्राप्त हो गई हैं । सभी पुस्तकें नवीन संस्करण की और अच्छी स्थिति में हैं, साथ ही अविलंब भेजी गई हैं । इसके लिए आपको धन्यवाद देता हूँ ।

भवदीय
**प्रशांत झा**

## आपने हिन्दी बुक सेंटर, रायपुर से कुछ किताबें मँगवाई थीं । वे फटी हुई तथा पुरानी पुस्तकें हैं । इसकी शिकायत करते हुए पुस्तकें वापस करने की सूचना दीजिए ।

**मुक्ता तिवारी**
**गोल बाजार, सम्बलपुर**
**10.11.2015**

**प्रबंधक**
**हिन्दी बुक सेंटर**
रायपुर, छत्तीसगढ़

विषय : कटी-फटी पुस्तकों की वापसी हेतु आवेदन पत्र ।

महोदय,

बड़े दु:ख के साथ आपको यह सूचित करना पड़ रहा है कि आपने मुझे जो निम्नलिखित पुस्तकें भेजी हैं वे कटी-फटी तथा पुरानी हैं । आपका यह व्यवहार आपकी प्रतिष्ठा के अनुकूल नहीं है । मैं ये पुस्तकें लौटा रही हूँ । आप शीघ्र ही इसकी जगह नई पुस्तकें भिजवाएँ । कृपया पुस्तकें शीघ्र भेजें क्योंकि मेरी परीक्षा शीघ्र ही शुरू होनेवाली है, पहले ही मेरा काफी समय आपने नष्ट किया है ।

1. कामायनी जयशंकर प्रसाद
2. साकेत मैथिलीशरण गुप्त

भवदीया

**मुक्ता तिवारी**

## रुपये भेजने के लिए पिताजी को पत्र

मार्डन इंगलिश मिडीयम स्कूल
जयपुर (कोरापुट)
दिनांक : 10.11.2015

पूज्य पिताजी,
सादर प्रणाम !

मैं यहाँ सकुशल हूँ । दो दिन पहले मेरी तिमाही परीक्षा समाप्त हुई है । सभी पर्चे अच्छे हुए हैं । दिसम्बर में हमारे टेलेंट सर्च परीक्षा होगी । मैं उसकी पढ़ाई कर रहा हूँ । इस दिसम्बर में बड़े दिन की छुट्टियों में आपसे मुलाकात नहीं हो पाएगी, क्योंकि मैं विद्यालय परिवार के साथ 'भारतदर्शन' के लिए जा रहा हूँ । अत: मासिक व्यय के साथ अतिरिक्त राशि ५०० रुपये भेजने का कष्ट करें । माताजी को मेरा सादर चरणस्पर्श ! प्यारी बहन मीना और श्वेता को स्नेह ।

आपका पुत्र

**सुधाकर**

सेवा में,
श्री माधवचन्द्र शुक्ल
मोतीहारी
बिहार

## अपने छोटे भाई को परीक्षा में अच्छे अंक लाने के लिए शुभकामना पत्र ।

नवीन पंड़ा
184-जयदेव विहार
भुवनेश्वर
दिनांक- 20 फरवरी 2015

प्रिय सरोज,
स्नेह !

आशा है तुम सकुशल होंगे । अगले महीने तुम्हारी वार्षिक परीक्षा शुरू होने वाली है । मन लगाकर पढ़ाई करो । अच्छे अंक प्राप्त करने पर तुम्हें दिल्ली या हैदराबाद के किसी बड़े महाविद्यालय में दाखिला मिल जाएगा । हमारी बहुत सी आशाएँ तुम्हारे अच्छे परिणाम से जुड़ी हुई हैं । अच्छी सफलता के लिए हार्दिक शुभकामनाएँ ।

तुम्हारे बड़े भाई
**नवीन**

पता

श्री सरोज कुमार पंडा
बिड़ानासि, कटक
ओड़िशा

# व्यापारिक पत्र

## मारुति सेल्स कार्पोरेशन, बेंगलूरु को पत्र लिखकर पूछिए कि वे कार खरीदने पर उसकी कीमत किस रूप में चाहेंगे ?

नवीन मित्तल
18, बेगमपेट
दिनांक - 18.02.2015

सेवा में,
विक्रय प्रबंधक,
मारुति सेल्स कार्पोरेशन,
बेंगलूरु

महोदय,

कृपया मुझे सूचित कीजिए कि मारुति जेन खरीदने के लिए मुझे आपको कितनी राशि किस रूप में देनी है ? क्या आप नगद राशि भी स्वीकार करेंगे ?

धन्यवाद

भवदीय,
नवीन

पता

श्री विकाश आचार्य
सहयोग नगर
बालेश्वर

## अभ्यास

1. अपने छोटे भाई को व्यायाम के लाभ बताते हुए एक पत्र लिखिए ।
2. विद्यालय-त्याग के प्रमाण पत्र हेतु प्रधानाचार्य को पत्र लिखिए ।
3. मनीऑर्डर न पहुँचने की शिकायत सम्बन्धी पत्र डाकपाल को लिखिए ।
4. अपने विद्यालय के छात्रावास की व्यवस्था के संबंध में पिताजी को पत्र लिखिए ।
5. प्रधानाचार्य को आर्थिक सहायता के लिए प्रार्थना पत्र लिखिए ।
6. अपने मित्र को वार्षिक परीक्षा में प्रथम आने पर बधाई पत्र लिखिए ।
7. पढ़ाई के बारे में जानकारी देते हुए माता जी को पत्र लिखिए ।
8. जिलाधीश के कार्यालय में लिपिक के रिक्त पद के लिए आवेदन पत्र लिखिए ।

9. अपनी रचना के प्रकाशन हेतु सम्पादक के नाम पत्र लिखिए ।

10. विद्यालय में अध्यापक के रिक्त पद में भर्ती के लिए प्रधानाचार्य को आवेदन पत्र लिखिए ।

11. अपने शहर के स्वास्थ्य अधिकारी को पत्र लिखकर उनसे अपने मुहल्ले की सफाई कराने का अनुरोध कीजिए ।

12. कुछ समय पूर्व आपने एक टेलीविजन खरीदा है, जो अनेक गड़बडियों के कारण आपके लिए समस्या बना हुआ है । अपनी इस समस्या की जानकारी देते हुए विक्रेता के नाम पत्र लिखिए, जहाँ से आपने उसे खरीदा था ।

13. किसी प्रकाशक से पुस्तकें मँगवाने के लिए एक व्यावसायिक पत्र लिखिए ।

14. अपने मित्र की माता के आकस्मिक निधन पर एक संवेदना पत्र लिखिए ।

15. अपने मित्र को तर्क प्रतियोगिता में प्रथम आने पर बधाई देते हुए पत्र लिखिए ।

●

# भाग - चार

# निबंध-लेखन

# निबंध - लेखन

निबंध वह गद्य-रचना है जिसमें किसी विषय पर अपने विचारों को एक सीमित आकार में तथा विषय के अनुरूप भाषा शैली में व्यक्त किया गया हो । निबंध शब्द में 'बंध' धातु में 'नि' उपसर्ग लगाया गया है । इसका अर्थ होता है भली प्रकार से बाँधना अर्थात् विषयानुरूप विचारों को क्रमबद्ध रूप में प्रस्तुत करना । इसमें भाव या विचार पूरी तरह से एक-दूसरे से बंधे रहते हैं । इसमें विषय के किसी एक पक्ष का विवेचन होता है । यह अपने आप में पूर्ण होता है ।

निबंध लेखन में विषय सामग्री तथा निबंध शैली दोनों महत्वपूर्ण हैं । विषय सामग्री के लिए अध्ययन, मनन एवं चिंतन की आवश्यकता होती है। शैली में गंभीरता, प्रवाहशीलता तथा प्रभावशीलता आवश्यक होती है ।

आदर्श निबंध के लिए निम्नलिखित बातों पर ध्यान देना आवश्यक है ।

1. निबंध लिखने से पूर्व हमें विषय का सही चयन करना चाहिए ।
2. ऐसा विषय चुनें जिसके बारे में अच्छी तरह से जानते हैं ।
3. चयनित विषय पर चिंतन मनन करें ।
4. निबंध की रूपरेखा सुव्यवस्थित ढंग से तैयार कर लेनी चाहिए ।
5. रूप-रेखा के अन्तर्गत आरंभ, मध्य, अंत, लाभ-हानि, निष्कर्ष जैसे खण्ड शामिल किए जा सकते हैं ।
6. प्रस्तावना में विषय का परिचय तथा महत्व स्पष्ट करना चाहिए ।
7. सतर्कतापूर्वक वर्तनी की अशुद्धियों पर ध्यान देकर लिखना चाहिए ।
8. विराम चिह्नों का समुचित प्रयोग आवश्यक है ।
9. अनावश्यक शब्दों का प्रयोग तथा विचारों का दुहराव न हो ।
10. एक भाव या विचार समाप्त होने पर अनुच्छेद परिवर्तन करना चाहिए ।
11. अपने विचारों की पुष्टि के लिए विद्वानों के उद्धरण के उदाहरण, कविता की पंक्तियाँ या कोई रोचक प्रसंग भी लिखा जा सकता है ।
12. उदाहरण निबंध को रोचक, प्रभावशाली एवं सरस बनाते हैं ।
13. कहावतों एवं मुहावरों के प्रयोग से भी निबंध विशिष्ट बनता है ।
14. उपसंहार में निबंध का सारांश एक अनुच्छेद में लिखना चाहिए ।
15. अंत किसी कविता की पंक्ति से भी किया जा सकता है ।
16. निबंध साफ और सुन्दर होना चाहिए ।
17. निबंध लिख लेने के पश्चात् उसे पढ़कर अशुद्धियाँ दूर कर लेनी चाहिए ।

उपर्युक्त प्रकार से लिखा गया निबंध उत्कृष्ट होगा ।

## मूल्यबोध संबंधी निबंध

# परोपकार

**रूपरेखा** - (i) प्रस्तावना (ii) परोपकार का अर्थ एवं महत्व (iii) परोपकार एक विशेष गुण (iv) परोपकार के उदाहरण (v) परोपकार के लक्षण (vi) परोपकार से लाभ (vii) उपसंहार

**प्रस्तावना** - मनुष्य एवं पशु में आहार, निद्रा, भय आदि प्रवृत्तियाँ समान होती हैं लेकिन भाव, विचार और वाणी की दृष्टि से वे पशुओं से अलग होते हैं । मनुष्य बोल सकता है तथा सोच भी सकता है । मनुष्य में कई ऐसे अच्छे और बुरे गुण होते हैं जिनसे अच्छे और बुरे मनुष्य के रूप में उसकी पहचान होती है । सेवा, प्रेम, सद्भाव, परोपकार जैसे गुण अच्छे गुणों में शामिल होते हैं ।

**परोपकार का अर्थ** : - परोपकार दो शब्दों से मिलकर बना है । 'पर' का अर्थ है 'दूसरे का' तथा 'उपकार' का अर्थ है 'भलाई' । इस प्रकार परोपकार का अर्थ है- नि:स्वार्थ भाव से दूसरों की भलाई करना ।

महत्व **:**

परोपकार का गुण मानव को विशिष्ट बनाता है । सभी धर्मों में परोपकार करने की बात कही गई है । यह वह गुण है जो मानव को मानव से अलग करता है । परोपकारी मनुष्य देवता तुल्य होता है । जो मानव सिर्फ अपने जीवन तक सीमित है, जिसमें परोपकार की भावना नहीं है,वह पशु तुल्य होता है । हमारे महापुरुषों ने जो परोपकार किए उन्हीं के कारण हम प्रगति कर सके । परोपकारी व्यक्ति का जीवन उस नदी की तरह होता है जो स्वयं अपना पानी कभी नहीं पीती । भारत की स्वतंत्रता के लिए अपना जीवन उत्सर्ग करदेने वाले क्रान्तिकारियों ने यह कभी नहीं सोचा कि इस स्वतंत्रता का उपभोग वे कर पाएँगे या नहीं । फिर भी उन्होंने अपना संघर्ष जारी रखा । यही परोपकार है ।

**परोपकार एक विशेष गुण :** मानव का यह गुण दैवीय गुण कहलाता है । संसार की प्राकृतिक शक्तियाँ भी परोपकार की भावना से ही संचालित होती हैं । सूर्य अपना प्रकाश दूसरों को समर्पित करता है । नदियाँ अपना जल देकर दूसरों की प्यास बुझाती हैं । वृक्ष अपना फल स्वयं ग्रहण नहीं करते । कहा भी गया है-

*निज हेतु बरसता नहीं, व्योम से पानी*
*हम हों समष्टि के लिए, व्यष्टि बलिदानी ।*

**परोपकार के लक्षण :** परोपकारी व्यक्ति की विशेषताएँ बताते हुए तुलसीदास कहते हैं-

*संत हृदय-नवनीत समाना/कहा कवित पै कहै ना जाना ।*
*निज परिताप द्रवै नवनीता । पर दु:ख द्रवहिं सुसंत पुनीता ।।*

परोपकार में भूखे को भोजन देना, प्यासे को पानी देना, रोगी की चिकित्सा करना, अनपढ़ को शिक्षित करना, अन्धे को राह दिखाना, वृक्ष लगाना, कुआँ, धर्मशाला, मन्दिर बनवाना आदि अनेक कार्य हैं जो परोपकार के प्रतीक हैं । ऋषि दधीचि, राजा शिवि तथा महादानी कर्ण जैसे परोपकारी व्यक्ति से हमारा इतिहास भरा पड़ा है । परोपकारी व्यक्ति कीडे-मकोड़े, पशु-पक्षियों का भी ध्यान रखते हैं ।

**परोपकार से लाभ :** परोपकार से अनेक लाभ हैं । इस धरती एवं मानवता का समस्त विकास परोपकार से हो सका है । इसी भावना से ही परिचालित होकर मानव 'वसुधैव कुटुम्बकम्' के सपने देख रहा है ।

परोपकार करने में व्यक्ति के हृदय में सुख-शान्ति एवं आत्मविश्वास का संचार होता है । परोपकार से मनुष्य का व्यक्तित्व विकसित होता है ।

**उपसंहार :** मानव को परोपकार करना चाहिए क्योंकि इससे पूरी मानव जाति का भला हो सकता है । कविवर मैथिलीशरण गुप्त ने लिखा है-

*''वही मनुष्य है कि जो मनुष्य के लिए मरे ।''*

•

# राष्ट्रीय एकता

**रूपरेखा :** अर्थ और महत्व, भारत में विभिन्नता, अनेकता में एकता, राष्ट्रीय एकता के बाधक तत्व, परस्पर संघर्ष के दुष्परिणाम, समाधान, उपसंहार ।

**अर्थ और महत्व :** राष्ट्रीय एकता का तात्पर्य है- राष्ट्र के सभी तत्वों में भिन्न-भिन्न विचारों और भिन्न समस्याओं के होते हुए भी आपसी प्रेम, एकता और भाईचारे का बने रहना । महात्मा गाँधी ने कहा है- ''हमें एक ऐसा समाज बनाना है जिसमें विभिन्न धर्मों के मानने वाले लोग रहते हों, लेकिन वे भाइयों की तरह रहते हों ।'' महात्मा गांधी का यह कथन भारत की राष्ट्रीय एकता का मूल मंत्र है, जहाँ विभिन्न धर्मों के लोग साथ-साथ रहते हैं ।

**भारत में विभिन्नता :** भारत अनेकताओं का देश है । यहाँ अनेक धर्मों, जातियों, वर्गों, सम्प्रदायों और भाषाओं के लोग बसते हैं । साथ ही यहाँ के लोगों का खान-पान, रहन-सहन और पहनावा भी अलग अलग हैं । आर्थिक, सामाजिक और भौगोलिक असमानताएँ भी हैं ।

**राष्ट्रीय एकता के बाधक तत्व :** राष्ट्रीय एकता के लिए अनेक बाधक तत्व हैं । सबसे बड़ा बाधक है यहाँ की गंदी और दूषित राजनीति । यहाँ के स्वार्थपरक नेता वोट लेने तथा सत्ता हथियाने के लिए अल्प संख्यकों के बीच विरोध का बीज बोते हैं । आरक्षण के नाम पर पिछड़े वर्गों को देश की मुख्य धारा से अलग करते हैं, साम्प्रदायिक दगें करवाते हैं, जिनका कोई औचित्य नहीं है। इस देश में हिन्दू, मुसलमान, सिख, ईसाई अनेक धर्मों के लोग परस्पर मिलकर रहना चाहते हैं, लेकिन भ्रष्ट राज नेता धर्म के नाम पर उन्हें बाँट देते हैं । विभिन्न धार्मिक नेता, आर्थिक असमानता, जातिगत असमानता राष्ट्रीय एकता में बाधक तत्व हैं । भाषा की समस्या भी एक बड़ी समस्या है ।

**अनेकता में एकता :** भारत में विभिन्नता के होते हुए भी एकता के तत्व विद्यमान हैं । यहाँ विभिन्न धर्मों के लोग एक-दूसरे के धर्म का आदर करते हैं । सभी जातियाँ घुल-मिल कर रहते हुए संकट आने पर एक-दूसरे की सहायता करती हैं, एक दूसरे के प्रति सहनशील होती हैं।

**परस्पर संघर्ष के दुष्परिणाम :** किसी भी देश के मुख्य राजनीतिक दल सत्ता के लिए संघर्ष करते हैं तो उसका परिणाम पूरे देश को भुगतना पड़ता है । चाहे गोधरा कांड हो, चाहे आरक्षण का मामला हो या चाहे अयोध्या के राम मन्दिर का । ये घटनाएँ पूरे देश की जनता के जीवन को प्रभावित करती हैं ।

**उपसंहार :** प्रश्न यह है कि देश में राष्ट्रीय एकता को बढ़ावा कैसे मिले । इसके लिए यह आवश्यक है कि असमानता वाले कानून समाप्त कर पूरे देश में एक समान कानून लागू किया जाय । सभी नागरिकों को एक समान अधिकार प्राप्त हो । अंग्रेजी को सम्पर्क भाषा है रूप में प्रयोग कर हिन्दी भाषा को पूरे देश में लागू किया जाय तथा लोगों के हृदय में परस्पर आदर का भाव जगाया जाय । तभी राष्ट्रीय एकता को बल मिलेगा ।

•

# दीपावली

**विचार बिंदु** - (i) भूमिका (ii) ऐतिहासिक, धार्मिक और पौराणिक प्रसंग (iii) व्यापारियों का प्रिय उत्सव (iv) महत्व ।

**भूमिका** : भारत देश त्योहारों का देश है । यहाँ होली, दीपावली, दशहरा, रक्षाबंधन, जन्माष्टमी, रामनवमी, पोंगल आदि अनेक त्योहार मनाए जाते हैं । दीपावली हिन्दुओं का एक महत्वपूर्ण त्योहार है । यह कार्तिकमास की अमावस्या की रात्रि में मनाया जाता है । मुख्यतः इसे वैश्यों का त्योहार कहा जाता है । 'दीपावली' शब्द दीप+आवली से मिलकर बना है । इस रात को घर-घर में दीपक जलाए जाते हैं । इसलिए इसे दीपावली कहा गया है । दीपावली का साधारण अर्थ दीपों की पंक्ति का उत्सव है । दीपक का प्रकाश ज्ञान व उल्लास का प्रतीक है ।

**ऐतिहासिक, धार्मिक और पौराणिक प्रसंग :** ऐसी मान्यता है कि इस दिन भगवान श्रीराम रावण का संहार करने के पश्चात् वापस अयोध्या लौटे थे । उनके लौटने की खुशी में लोगों ने घी के दीपक जलाये थे । भगवान महावीर तथा स्वामी दयानंद ने इस तिथि को निर्वाण प्राप्त किया था । इसलिए जैन सम्प्रदाय तथा आर्य समाज में भी इस दिन का विशेष महत्व है । सिखों के छठे गुरु भगवान हरगोविंद सिंह इस दिन कारावास से मुक्त हुए थे । इस त्योहार का आरंभ धन तेरस से होता है । इस दिन धन्वतंरी जी की भी पूजा होती है । चतुर्दशी को नरक चतुर्दशी मनाया जाता है । इस दिन भगवान कृष्ण ने नरकासुर राक्षस का वध किया था । फिर दीपावली मनायी जाती है । इसके दूसरे दिन भाई दूज और फिर गोवर्धन की पूजा की जाती है। बंगाली लोग इस दिन माँ काली की पूजा करते हैं ।

इस दिन घरों की सफाई की जाती है । घरों में मिट्टी के दीये जलाए जाते हैं । सारा घर प्रकाश से जगमगा उठता है । बच्चे पटाखों और मिठाइयों का आनंद लेते हैं । इस दिन व्यापारियों का नया वर्ष शुरू होता है । व्यापारी इस दिन लक्ष्मी की पूजा करते हैं तथा नए खाते की शुरूआत करते हैं ।

**महत्व :** यह आशा, प्रकाश, ज्ञान एवं सौहार्द का पर्व है । किन्तु इस दिन कुछ लोग मदिरापान करते हैं तथा जुआ खेलते हैं । इस बुरी प्रथा का अंत होना चाहिए । अन्यथा यह बुरी प्रथा आने वाली पीढ़ी के लिए अभिशाप सिद्ध होगी । दीपावली तो आनंद और हर्ष का त्योहार है । इसे आनन्द से ही मनाना चाहिए, यह हमारे जीवन में प्रेम, उत्साह और आनंद का संचार करता है ।

## अभ्यास के लिए निबंध :

1. होली
2. दशहरा
3. रक्षाबंधन
4. ईद
5. स्वतंत्रता दिवस
6. गणतंत्र दिवस
7. अनेकता में एकता
8. राष्ट्रभाषा - हिन्दी
9. आदर्श विद्यार्थी
10. छात्र अनुशासन
11. परोपकार
12. सदाचार
13. कर्त्तव्य
14. मित्रता
15. जीवन में अनुशासन का महत्व
16. खेलों का महत्व
17. खाली समय का उपयोग
18. मेरे जीवन का लक्ष्य
19. शिक्षक दिवस समारोह
20. बाल दिवस समारोह
21. जीवन में ज्ञान का महत्व

# प्रार्थना

मनसा सततं स्मरणीयम्
बचसा सततं बदनीयम्
लोकहितं मम करणीयम्
मनसा -०-

न मोगभवनं रमणीयम्
न च सुख शयने शयनीयम्
अहर्निशं जागरणीयम्
लोकहितं मम करणीयम्
मनसा -१-

न जातु दुःख गणनीयम्
न च निजसौख्यं मननीयम्
कर्मक्षेत्रे तरणीयम्
लोकहितं मम करणीयम्
मनसा -२-

# प्रार्थना

ओम् है जीवन हमारा, ओम् प्राणाधार है।
ओम् है करता विधाता, ओम् पालनहार है।

ओम् है दुःख का विनाशक, ओम् सर्वानन्द है।
ओम् है बल-तेजधारी, ओम् करुणाकन्द है।।
ओम् सबका पूज्य है, हम ओम् को पूजन करे।
ओम् ही के ध्यान से हम, शुद्ध अपना मन करें।

ओम् के गुरु मंत्र जपने से, रहेगा सुद्ध मन।
बुद्धि दिन प्रतिदिन बढेगी, धर्म में होगी लगन।।
ओम् के जप से हमारा ज्ञान बढता जाएगा।
अन्त में यही ओम् हमको मुक्ति तक पहुँचाएगा।

# ''राष्ट्रीय गान''

जन-गण-मन-अधिनायक जय हे,
भारत-भाग्य-विधाता ।
पंजाब, सिंधू, गुजरात मराठा,
द्राविड़, उत्कल बंग,
विन्ध्य, हिमाचल यमुना गंगा,
उच्छल-जलधि तरंग,
तव शुभ नामे जागे, तव शुभ आशिष मागे,
गाहे तव जय गाथा,
जन-गण-मंगल-दायक, जय हे
भारत-भाग्य-विधाता
जय हे, जय हे, जय हे,
जय जय जय जय हे ।